मेदिनीय ज्योतिष

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

खण्ड 1 – संवत्सर विचार

अध्याय–1 संवत्सर 4

1. संवत्सरों के नाम और स्वामी ....
2. संवत्सर जानने की विधि ....
3. संवत्सरों और उनके स्वामियों का फल ....
4. संवत्सर के अंग और फल ....

अध्याय–2 आकाशीय कौंसल 23

1. आकाशीय कौंसल का गठन ....
2. आकाशीय कौंसल के पदाधिकारियों के फल ....
3. सम्वत् में मेघ निकालने की विधि एवं नव मेघों का फल ....
4. सम्वत् में नाग निकालने की विधि एवं द्वादश नागों का फल ....

अध्याय–3 विशेष कुण्डलियाँ 37

1. जगत् लग्न कुण्डली बनाने की विधि एवं फल ....
2. वर्ष लग्न कुण्डली बनाने की विधि एवं फल ....
3. वर्ष लग्न कुण्डली में द्वादश लग्नों का फल ....
4. सम्वत् स्तम्भ निकालने की विधि एवं फल ....

खण्ड 2 – देश–विदेश विचार

अध्याय–4 कूर्म चक्र 44

1. कूर्म चक्र बनाना एवं फल ....
2. ग्रहों का कार्यतत्व एवं प्रकृतियाँ ....
3. विभिन्न देशों एवं प्रदेशों की राशियाँ ....
4. मेदिनीय ज्योतिष में द्वादश भाव विचार ....
5. ग्रहणों का भू–मण्डल पर प्रभाव ....

Future Point

खण्ड 3 – मौसम–विचार

अध्याय–5 आर्द्रा प्रवेश एवं फल 52

1. सम्वत् में आर्द्रा जानने की विधि ....
2. आर्द्रा का तिथियों, वारों, नक्षत्रों एवं योगों में फल ....
3. आर्द्रा प्रवेश कुण्डली बनाने की विधि एवं फल ....
4. रोहिणी वास जानना एवं फल विचार ....

अध्याय–6 मौसम 58

1. त्रिनाड़ी चक्र द्वारा वर्षादि जानना ....
2. सप्तनाड़ी चक्र द्वारा वर्षादि जानना ....
3. ग्रहों के योग द्वारा वर्षादि जानना ....
4. प्रश्नशास्त्र द्वारा वर्षा का फल ....

खण्ड 4 – अर्घ विचार

अध्याय–7 सस्य जातक कुण्डलियाँ 70

1. शरद सस्य जातक की कुण्डली बनाने की विधि ....
2. ग्रीष्म सस्य जातक की कुण्डली बनाने की विधि ....
3. शरद सस्य जातक एवं ग्रीष्म सस्य जातक की कुण्डली में योग फल ....

अध्याय–8 ग्रहों का स्वामित्व 73

1. ग्रहों के कारक द्रव्य व वस्तुएँ ....
2. राशियों के स्वाभाविक कारक द्रव्य व वस्तुएँ ....
3. नक्षत्राधीन द्रव्य व वस्तुएँ ....

खण्ड 5 – तेजी–मन्दी विचार

अध्याय–9 सर्ततोभद्र चक्र 78

1. सर्वतोभद्र चक्र से वेध देखने की विधि ....
2. नक्षत्रों पर ग्रह स्थिति से वेध जानना ....
3. अश्विनी आदि नक्षत्रों पर शुभ/अशुभ ग्रहों का फल ....

अध्याय–10 ग्रहचार 87

सूर्यादि ग्रहों का ग्रहचार फल ....
सूर्यचार, चन्द्रचार, मंगलचार आदि

अध्याय–11 ग्रहण फल 113

ग्रहणों का धातुओं, वस्तुओं एवं धन–धान्यों पर प्रभाव ....

Future Point

Future Point

खण्ड–1

संवत्सर विचार

Future Point

अध्याय–1

संवत्सर

1. संवत्सरों के नाम और स्वामी :

वर्ष को संवत्सर के नाम से जाना जाता है। संवत्सर की प्रवृत्ति बृहस्पति के मध्यमान से होती है अर्थात् गुरु जितने समय में एक राशि को पार करता है उस अवधि को संवत्सर कहते हैं। और इस बृहस्पति मान में 60 संवत्सर होते हैं जिनको अलग–अलग नामों से जाना जाता है। 60 संवत्सरों के नाम इस प्रकार हैं।

सम्वत्सरों के नाम	स्वामी
1. प्रभव	ब्रह्मा
2. विभव	विष्णु
3. शुक्ल	शिव
4. प्रमोद	सूर्य
5. प्रजापति	चन्द्र
6. अंगिरा	मंगल
7. श्री मुख	बुध
8. भाव	गुरु
9. युवा	शुक्र
10. धाता	शनि
11. ईश्वर	राहु
12. बहुधान्या	केतु
13. प्रमाथी	सूर्य
14. विक्रम	चन्द्र
15. वृष	मंगल
16. चित्रभानु	बुध
17. सुभानु	गुरु
18. तारण	शुक्र
19. पार्थिव	शनि
20. व्यय	राहु
21. सर्वजत	ब्रह्मा
22. सर्वधारी	विष्णु
23. विरोधी	शिव

सम्वत्सरों के नाम	स्वामी
24. विकृति	सूर्य
25. खर	चन्द्र
26. नंदन	मंगल
27. विजय	बुध
28. जय	गुरु
29. मन्मथ	शुक्र
30. दुर्मुख	शनि
31. हमेलम्बी	राहु
32. विलम्बी	सूर्य
33. विकारी	चन्द्र
34. शार्बरी	मंगल
35. प्लव	बुध
36. शुभकृत	गुरु
37. शोभन	शुक्र
38. क्रोधी	शनि
39. विश्वावसु	राहु
40. पराभव	केतु
41. प्लवंग	ब्रह्म
42. कीलक	विष्णु
43. सौम्य	शिव
44. साधारण	सूर्य
45. विरोधकृत	चन्द्र
46. परिधावी	मंगल

सम्वत्सरों के नाम	स्वामी
47. प्रमादी	बुध
48. आनन्द	गुरु
49. राक्षस	शुक्र
50. नल	शनि
51. पिंगल	राहु
52. कालयुक्त	केतु
53. सिद्धार्थी	सूर्य

सम्वत्सरों के नाम	स्वामी
54. रौद्र	चन्द्र
55. दुर्मति	मंगल
56. दुन्दुभी	बुध
57. रुधिरोद्गारी	गुरु
58. रक्ताक्ष	शुक्र
59. क्रोधन	शनि
60. क्षय	राहु

2. संवत्सर जानने की विधि :

वर्तमान जो विक्रमी संवत् हो उसमें से 1927 घटा दें जो शेष हो उसको 10 से भाग दें, जो लब्धि व शेष बचें उन्हें नीचे दी गई सारिणियों—लब्धि अंक सारिणी व शेष अंक सारणी—के अनुसार जोड़ कर संवत्सर की संख्या व उसके भुक्त मासादि ज्ञात कर सकते हैं :—

लब्धि अंक सारिणी

लब्धि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
वर्ष	10	20	30	40	50	0	10	20	31	41	51	1	11	21
मास	1	2	4	5	7	8	9	11	0	2	3	4	6	7
दिन	12	24	6	18	1	13	25	7	20	2	14	26	9	21
घड़ी	14	28	43	57	12	26	40	55	9	24	38	52	7	21
पल	24	48	12	36	0	24	48	12	36	00	24	48	12	36

शेष अंक सारिणी

शेष संख्या	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
वर्ष	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
मास	3	3	4	4	4	4	4	4	4	5
दिन	23	27	1	5	10	14	18	22	27	1
घड़ी	16	30	43	57	10	24	37	50	4	17
पल	48	14	40	7	33	00	26	52	19	45

उदाहरण— आज वर्तमान में विक्रमी सम्वत् 2059 चल रहा है। 2059 में से 1927 को घटाया, शेष रहे 132 इसे 10 से भाग दिया तो लब्धि संख्या 13 और शेष संख्या बची = 2

लब्धि सारिणी 13 के नीचे के वर्षादि	=	11—6—9—7—12
शेष सारिणी 2 के नीचे के वर्षादि	=	17—4—1—43—40
जोड़		28—10—10—50—52

Future Point

इसमें प्रथम अंक गत संवत्सर को दर्शाता है तथा अगले अंक संवत् के मासादि हैं। अतः 29 वां सम्वत् मन्मथ नाम का संवत् है। और 10 मास 10 दिन 50 घड़ी और 52 पल गत है।

इसे 12 मास में घटा कर मेषार्क के आगे के दिन शेष होंगे। संवत्स के प्रारम्भ और अन्त के समय में प्रायः अन्तर रह जाता ही है, अतः इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए वर्षभर के लिए वही संवत्सर मानने की प्रथा चली आ रही है।

दूसरी (सरल) विधि :

वर्तमान संवत् में 9 को जोड़कर 60 से भाग दें–शेष संख्या गत सम्वत्सर की हो गई। उदाहरण–वर्तमान सम्वत् 2059 में 9 को जोड़ें तो योग होगा 2068 ।अब इस योग में 60 से भाग दें तो शेष बचेंगे 28। अर्थात् गत 28 सम्वत्सर हुए और 29 वां मन्मथ नाम का सम्वत्सर चल रहा है।

प्रभव से व्यय नामक सम्वत् तक प्रथम 20 सम्वत ब्रह्माजी के हैं।

सर्वजीत से पराभव नामक सम्वत तक मध्य के 20 सम्वत् विष्णु जी के हैं।

प्लवंग नाम से क्षय नामक सम्वत् तक अन्त के 20 सम्वत शिवजी के हैं।

3. सम्वत्सरों और उनके स्वामियों का फल :

1. प्रभव :

प्रभव नाम का सम्वत् आने पर राजा लोगों (राष्ट्र अध्यक्षों), कैबिनेट मन्त्रियों, वरिष्ठ शासक वर्ग तथा अधिकारियों में प्रसन्नता रहती है, जनता के सुख–साधनों में वृद्धि होती है और फसलों में रोग या नुकसान न होने से उपज अच्छी रहती है।

स्वामी ब्रह्मा जी का फल– प्रभव सम्वत् का स्वामी ब्रह्मा जी के होने के कारण चैत्र तथा वैशाख के मास शुभदायक होते हैं एवं सब वस्तुओं में मन्दे के भाव रहते हैं। ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण–तीन मासों में अनाजों में तेजी रहती है । भाद्रपद का मास शुभदायक होता है तथा आश्विन में फिर अनाजों में तेजी और रोग–पीड़ा से कष्ट का वातावरण बनता है। शेष मास कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन सामान्य फलदायक होते हैं।

2. विभव :

विभव नामक सम्वत्सर में राष्ट्राध्यक्ष, शासक तथा विशिष्टाधिकारी वर्ग कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए सख्त नीति अपनाते हैं। आम जनता सब प्रकार के साम्प्रदायिक झगड़ों को छोड़कर आपस में आनन्दमय और निर्भय होकर मेल–मिलाप से रहती है। इस सम्वत् में वर्षा अधिक होने से फसलों की पैदावार अधिक होती है।

स्वामी विष्णु जी का फल– विभव नामक सम्वत् के स्वामी विष्णु जी हैं। इसमें अनेक रोग उत्पन्न होते हैं और पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक विग्रह एवं कष्ट का वातावरण रहता है। शेष क्षेत्रों के लिए शुभ रहता

Future Point

है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में रसदार पदार्थों में महंगाई रहती है। आषाढ़, श्रावण तथा भाद्रपद में वर्षा व्यापक होती है, आश्विन में रसों में तेजी तथा उसके बाद मन्दा रहता है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में अनाजों में मन्दा रहता है।

3. शुक्ल :

शुक्ल नामक सम्वत् में जनता अपने स्वजनों के साथ प्रेमपूर्वक सुखमय जीवन व्यतीत करती है। तथा सत्तारूढ़ शासकों तथा विरोधी दलों के बीच अपनी जीत को लेकर खींचातानी बनी रहती है।

स्वामी शिवजी का फल– कहीं सत्ता भंग होती है, राष्ट्रपति राज लागू होता है। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ मास सामान्य रहते हैं। आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद में अधिक वर्षा होती है। आश्विन में अनेक रोग पैदा होते हैं तथा सब वस्तुओं में महंगाई छाई रहती है लेकिन घी सस्ता होता है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ मास में महंगाई बाद में सस्ती हो। फाल्गुन मास में सब जगह कष्टकारी–विग्रहकारी समय रहता है।

4. प्रमोद :

प्रमोद नाम के सम्वत में शासक वर्ग तथा जनता में संतोष का वातावरण रहता है । जनता रोगों–उपद्रवों तथा शत्रुओं आदि से मुक्त रहती है।

स्वामी सूर्य का फल– वर्षा कम होती है। देश में उपद्रव होने से लोगों के मन में उच्चाटनता रहती है। म्लेछ वर्ग के लिए कष्टकारी, कहीं सत्ता का भंग हो जाना, सत्तारूढ़ तथा व्यापारिक वर्ग का आपस में टकराव का वातावरण रहता है । चैत्र और वैशाख मास में महंगाई बढ़ती है। ज्येष्ठ मास में रोगों द्वारा –पीड़ा का प्रकोप, आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद मासों में वर्षा बहुत कम होती है। आश्विन मास में वर्षा होने से फसलों को नुकसान होता है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और माघ मासों में रसदार पदार्थ महंगे होते हैं। फाल्गुन मास में स्थिति मध्यम रहती है।

5. प्रजापति :

सब लोग अपने–अपने मार्ग को छोड़ देते हैं। वर्षा अधिक होती है, अनाज इत्यादि सस्ते रहते हैं।

स्वामी चन्द्रमा का फल– इस सम्वत् के बारहों मास शुभ फलदायक रहते हैं। वर्षा में कहीं–कहीं कमी आती है। आश्विन के मास में रोग–पीड़ा का वातावरण और अनाजों में तेजी रहती है। कार्तिक और मार्गशीर्ष के मासों में मन्दा, पौष, माघ और फाल्गुन में प्राकृतिक प्रकोप से हानि होती है।

6. अंगिरा :

अंगिरा नामक सम्वत् में अनाज आदि की बहुलता रहती है। शासक लोग कलह, झगड़ा आदि में लिप्त रहते हैं। राष्ट्रों में पारस्परिक संघर्ष से विश्व शान्ति को खतरा रहता है।

स्वामी मंगल का फल– चैत्र और वैशाख के मासों में अनाजों में मन्दा, ज्येष्ठ मास में आंधी–तूफान अधिक आते हैं। आषाढ़ मास में मूसलाधार वर्षा से बाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन में रोग–पीड़ा

Future Point

की अधिकता रहती है। कार्तिक मास में अनाज इत्यादि में तेजी रहती है। पौष, माघ और फाल्गुन के मासों में वस्तुओं के भाव सामान्य रहते हैं।

7. श्री मुख :

श्री मुख नामक सम्वत् में पृथ्वी पर खाद्यान्न का उत्पादन अच्छा होता है, वर्षा भी श्रेष्ठ होती है। कृषि से उत्पन्न वस्तुओं का मूल्य कृषकों को अच्छा मिलता है। प्रजा में वैर–विरोध की भावना कम और स्नेह व सद्भावना अधिक रहती है। ब्राह्मण यज्ञ इत्यादि मांगलिक कर्मपरायण रहते हैं और प्रजा का झुकाव सत्कर्मों की ओर रहता है। रोग आदि का निवारण हो।

स्वामी बुध का फल– चैत्र में धान्यों में तेजी और वैशाख और ज्येष्ठ में मन्दा होता है। आषाढ़ मास में व्यापक वर्षा होती है। श्रावण मास में धान्य, गेहूँ, घी में तेजी, व्यापारी वर्ग को पीड़ा और पश्चिम प्रदेशों में सूखा होता है। भाद्रपद में वर्षा होती है। आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन के मासों में प्रजा सुख–शान्ति से रहती है।

8. भाव :

इस सम्वत् में रोग अधिक होते हैं। अनाज इत्यादि का उत्पादन मध्यम होता है। शासक वर्ग के युद्ध में संलग्न होने पर भी प्रजा में सुख–सुरक्षा की भावना बनी रहती है।

स्वामी गुरु का फल– वर्षा अधिक होती है, पशुओं में दूध की मात्रा अधिक होती है और सभी वस्तुओं के भाव महंगे रहते हैं। चैत्र मास में समभाव और वैशाख में खाद्य पदार्थ महंगे होते हैं। आषाढ़ और श्रावण में वर्षा सामान्य किन्तु भाद्रपद में बहुत होती है। आश्विन मास अधिक रोगकारक किन्तु कार्तिक मास शुभफलदायक होता है। मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन – इन चार मासों में धान्य के भाव में मन्दा रहता है।

9. युवा :

दूध इत्यादि का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होता है। वर्षा अधिक होती है। स्त्रियां सभी प्रकार के कार्यों में संलग्न, युवा वर्ग विलास प्रिय रहता है। सभी लोग सुखी रहते हैं एवं संसार में नारी का प्रभुत्व बढ़ता है।

स्वामी शुक्र का फल– इस सम्वत् में भूकम्प और अन्य प्राकृतिक प्रकोपों से कष्ट होता है। चैत्र और वैशाख में प्राकृतिक प्रकोप, ज्येष्ठ मास रोगकारक होता है। आषाढ़ मास में वर्षा और श्रावण मास में आंधी आती है। अनाज महंगे होते हैं। भाद्रपद में बाढ़ इत्यादि से नुकसान, आश्विन मास सामान्य रहता है। मार्गशीर्ष उत्तम जबकि पौष और माघ मध्यम फलदायक होते हैं। फाल्गुन मास कष्टकारक रहता है।

10. धाता :

इस सम्वत् में शासक वर्ग अपनी कूटनीति के कारण युद्धोन्मुख होकर युद्धमय वातावरण बनाते हैं। लोग

Future Point

भयभीत रहते हैं। अनाज इत्यादि की पैदावार अच्छी होती है। व्यापक वर्षा होने से हानि भी होती है।

स्वामी शनि का फल– चैत्र और वैशाख मासों में अनाज महंगे किन्तु ज्येष्ठ में सामान्य रहते हैं। आषाढ़ मास में कम वर्षा, तेल घी में महंगाई रहती है। आश्विन मास में रसकस एवं धातुओं में महंगाई रहती है। आगे कार्तिक आदि मासों में अनाज सस्ते होते हैं।

11. ईश्वर :

ईश्वर नामक सम्वत् में सभी प्राणी संतुष्ट एवं आनन्दपूर्वक रहते हैं। धन–धान्य एवं फल इत्यादि की फसलें भी उत्तम होती हैं।

स्वामी राहु का फल– उत्तर दिशा में सूखा, पूर्व में बाढ़, पश्चिम में विग्रह होता है। चैत्र और वैशाख में महंगाई;ज्येष्ठ और आषाढ़ के मासों में वर्षा कम किन्तु श्रावण और भाद्रपद में अधिक होती है। कार्तिक मास में सूखा एवं दैनिक उपयोगी वस्तुओ में महंगाई। मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन में महंगाई एवं उपद्रव से धन–जन की हानि होती है।

12. बहु धान्या :

बहु धान्या नामक संवत्सर में वर्षा अधिक होती है एवं अनाज आदि पर्याप्त मात्रा में सुलभ होते हैं। लोगों में अनैतिकता एवं नीच आचरण की वृद्धि होती है।

स्वामी केतु का फल– चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ के मासों में अनाजों में महंगाई रहती है। आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद के मासों में अधिक वर्षा तथा सभी अनाजों में महंगाई कम होती है। आश्विन में पुनः गरज के साथ वर्षा होती है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन के मासों में सामान्य स्थिति रहती है।

13. प्रमाथी :

प्रमाथी नाम के सम्वत् में कहीं भी वर्षा अधिक न हो अर्थात् वर्षा मध्यम होती है।

स्वामी रवि का फल– चैत्र मास में गेहूँ महंगा होता है। वैशाख और ज्येष्ठ में सभी प्रकार के अन्न महंगे होते है। कृष्ण पक्ष की सप्तमी तथा अमावस्या के दिन वर्षा होती है। आषाढ़ और श्रावण में कम वर्षा होती है, भाद्रपद मास में पंचमी को वर्षा होती है। कार्तिक आदि शेष पांच मासों में सभी अन्नों और रसों इत्यादि वस्तुओं में महंगाई बनी रहती है।

14. विक्रम :

इस सम्वत् में शासक वर्ग सब प्रकार से पराक्रमी बना रहता है तथा सर्वत्र वर्षा अधिक होती है।
स्वामी चन्द्रमा का फल– चैत्र और वैशाख के मासों में अनाज महंगे रहते हैं। वैशाख के अन्त में भूस्खलनादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन–धन का नुकसान तथा भय से लोगों को स्थान परिवर्तन करना पड़ता है। ज्येष्ठ में सूखा तथा महंगाई होती है। आषाढ़ कष्टकारी; श्रावण और भाद्रपद में अधिक वर्षा तथा महंगाई कम होती है। आश्विन में रोग अधिक होते हैं। कार्तिक आदि पांच मासों में अन्नादि सामान्य रहते हैं।

Future Point

15. वृष :

इस सम्वत् में शासकों अर्थात् नेताओं में परस्पर विरोध, राजनीतिक कार्यों में रुकावटें आती हैं और युद्धमय वातावरण बना रहता है। ब्राह्मणादि श्रेष्ठ पुरुष निरन्तर इष्ट देवों की पूजा में लगे रहते हैं।

स्वामी मंगल का फल : वर्षा अधिक, शासकों के मध्य तनाव, खींचातानी और युद्धमय वातावरण, कहीं सत्ता का हरण, वैशाख और ज्येष्ठ में अन्न के भाव सम किन्तु आषाढ़ में तेज, श्रावण और भाद्रपद में अधिक वर्षा, आश्विन में धान्य भाव सम, कार्तिक में अनिष्ट होता है। मार्गशीर्ष में अराजकता फैलती है। पौष, माघ और फाल्गुन के मासों में अनाजों में महंगाई बढ़ती है, वरिष्ट पद रिक्त होते हैं।

16. चित्रभानु :

इस सम्वत् में वर्षा कहीं अधिक कहीं अपर्याप्त किंवा असामयिक होती है। पृथ्वी सभी धान्यों, फलों तथा घास से परिपूर्ण होती है। जनमानस में सन्तोष, हर्ष तथा उत्साह बना रहता है।

स्वामी बुध का फल– जनता सुखी रहती है। वर्षा पहले कम बाद में अधिक होती है। अन्न तथा घी सम रहते हैं। वैशाख में अनाजों के भाव सामान्य रहते हैं। आषाढ़ और श्रावण के मासों में वर्षा अधिक, धान्यों में महंगाई; भाद्रपद और आश्विन में रोग–पीड़ा, कार्तिक में महामारी का डर रहता है। मार्गशीर्ष और पौष में अनिष्ट होता है तथा माघ और फाल्गुन में रोगों का प्रकोप होता है तथा महंगाई कम होती है।

17. सुभानु :

सुभानु नाम के सम्वत् में शासन तन्त्रों में विग्रह एवं क्लेश रहने से अशान्ति और भय का वातावरण बना रहता है। धान इत्यादि फसलें अधिक होती हैं।

स्वामी गुरु का फल– चैत्र में महंगाई, वैशाख व ज्येष्ठ में रोग–पीड़ा, आषाढ़ में अनाज महंगे किन्तु श्रावण में सम रहें। वर्षा सामान्य हो।

भाद्रपद में अधिक वर्षा हो। आश्विन में रोग–पीड़ा का वातावरण रहता है, महंगाई कम होती है। कार्तिक और मार्गशीर्ष के मासों में वस्तुओं के भाव सामान्य रहते हैं। पौष, माघ और फाल्गुन में शासकों में विरोध और जन–मानस में अशान्ति रहती है।

18. तारण :

इस सम्वत् में जनता संकट, युद्धादि भय या किसी अन्य कारण से अशान्त क्षेत्रों को छोड़कर शान्त क्षेत्रों की तरफ पलायन करती है।

स्वामी शुक्र का फल– वर्ष में आंधी–तूफान अधिक आते हैं। शासन तन्त्रों में परस्पर खींचातानी से भय का वातावरण रहता है। चैत्र में रोगों का प्रकोप होता है और वैशाख में महंगाई में कमी आती है। ज्येष्ठ में तूफानी वायु चलती है, आषाढ़ में वर्षा कम होती है। श्रावण में सप्तमी से नवमी को वर्षा सामान्य

Future Point

किन्तु भाद्रपद में एकादशी को अधिक होती है। आश्विन और कार्तिक के मासों में अनाजों में तेजी आती है। मार्गशीर्ष और पौष में शासन तन्त्रों में परस्पर विरोध से युद्ध–सा वातावरण बनने से भय व्याप्त रहता है। फाल्गुन मास में अनाजों में महंगाई तथा प्राकृतिक प्रकोप से हानि होती है।

19. पार्थिव :

पार्थिव नामक सम्वत् में शासक वर्ग और प्रशासक वर्ग के लोग प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं। सामान्य लोग फलों आदि तथा अनेक सुख साधनों से समृद्ध रहते हैं। कृषि उत्पादन अच्छा तथा वर्षा भी अधिक होती है।

स्वामी शनि का फल– उत्पात होने का भय रहता है। चैत्र, वैशाख में महंगाई हो। शासक तन्त्रों में विग्रह, ज्येष्ठ में रोग, आषाढ़ में कम वर्षा अनाज महंगे, वायु प्रकोप, श्रावण में खण्ड वृष्टि, भाद्रपद में तूफान भय, आश्विन में वर्षा और अनाजों में तेजी, कार्तिक मार्गशीर्ष में रोग पीड़ा, पौष और माघ मास में अधिक महंगाई तथा फाल्गुन में सामान्यता आती है।

20. व्यय :

इस सम्वत् में शासकगण मानसिक रूप से चिन्तित एवं परेशान रहते हैं। सैन्यबल को सुदृढ़ बनाए। सीमाओं के विवादों से उलझनें उत्पन्न होती हैं। जनता में धन का अपव्यय करने की प्रवृत्ति अधिक रहती है।

स्वामी राहु का फल– अति वृष्टि और अनावृष्टि से नुकसान होता है। चैत्र में स्थिति मध्यम रहती है। वैशाख और ज्येष्ठ में अनाज महंगे होते हैं तथा अशान्ति रहती है। आषाढ़ में वर्षा कम, श्रावण में दुर्भिक्ष और मध्य प्रदेशों में अशान्ति रहती है। भाद्रपद में अतिवृष्टि से हानि, आश्विन में रोग–पीड़ा एवं महंगाई का वातावरण रहता है। मार्गशीर्ष में महंगाई एवं उपद्रव होते हैं। पौष और माघ के मासों में भी महंगाई किन्तु फाल्गुन में सामान्यता आती है।

21. सर्वजीत :

सर्वजीत नाम सम्वत् में सभी लोग आनन्द के अनुरूप सुख सुविधा का उपयोग करते हैं। राष्ट्राध्यक्षों तथा शासकों में परस्पर वैमनस्य (विरोध) से युद्धमय वातावरण बनता है वर्षा अधिक हो, अनाजों की फसलों की पैदावार पर्याप्त मात्रा में हो।

स्वामी ब्रह्मा जी का फल– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ में अनाजों में मन्दा। आषाढ़ में कम वर्षा, श्रावण में अतिवृष्टि तथा रसदार वस्तुओं में मन्दा रहे। अनाजों में तेजी, राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर कलह हो, भाद्रपद के अन्त के पांच दिन अधिक वर्षा हो। आश्विन में रोग–पीड़ा, अनाज मन्दे हों। कार्तिक में प्रजा में सुख तथा अनाज और भी मन्दे रहते हैं। मार्गशीर्ष और पौष सुखकारक, माघ में वर्षा हो तथा फालगुन मास में अन्न तथा रसों में सामान्यता रहती है।

Future Point

22. सर्वधारी :

इस सम्वत् में शासक वर्ग परस्पर वैर–विरोध दूर कर जनता को सुख–सुविधा देने में तत्पर रहते हैं। सर्वत्र सुख–शान्ति, हरियाली तथा वर्षा अधिक होती है।

स्वामी विष्णु जी का फल– इस सम्वत् में शासन प्रणाली सुखपूर्वक ठीक रहती है। अनाज मन्दे रहें, जनता में सुख–सुविधा अधिक हो। छः शास्त्रों का अस्थतव बढ़ता है। चैत्र में सर्वअनाज सम रहे। वैशाख और ज्येष्ठ में अनाज महंगे होते हैं, ज्येष्ठ में प्राकृतिक प्रकोपों का भय रहता है। आषाढ़ में वर्षा अधिक किन्तु श्रावण में कम होती है और अनाज महंगे होते हैं। भाद्रपद में भी महंगाई बढ़ती है। आश्विन में रोगों का प्रकोप होता है और अनाजों में समता आती है। शासकों में परस्पर खींचा–तानी बने। मार्गशीर्ष पौष, माघ और फाल्गुन मास उत्तम तथा सुखकारी रहते हैं।

23. विरोधी :

विरोधी नामक सम्वत् में बच्चों में शीतला आदि रोग, रक्त–वायु विकार में वृद्धि होती है। चोरी आदि अनैतिक कार्यों की घटनायें अधिक होती हैं। गायों में दूध कम हो। जनता में जाति–धर्म एवं साम्प्रदायिकता को लेकर परस्पर विरोध बढ़ता है।

स्वामी शिव जी का फल– चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ के मासों में धान्य में महंगाई बढ़ती है। आषाढ़ और श्रावण में अधिक वर्षा, भाद्रपद में वर्षा से बाढ़ आदि का भय रहता है। शासक वर्ग तथा जनता के बीच शान्ति रहती है। आश्विन में महंगाई कम, कार्तिक में रोग अधिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में गुजरात एवं राजस्थान में अनाज महंगे होते हैं।

24. विकृत :

इस सम्वत् में चोरी–ठगी आदि अनैतिक घटनाएं अधिक होती हैं। प्राकृतिक प्रकोपों—भूकम्प, ज्वालामुखी, विस्फोट आदि से जन–धन की हानि, रोगों से जनता को कष्ट होता है। वर्षा की भी कमी रहती है।

स्वामी सूर्य का फल– असमय वर्षा हो, शासन तन्त्रों में विग्रह रहे। राजस्थान इत्यादि मरुभूमि में दुर्भिक्ष रहता है। चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ में अनाजों में महंगाई रहती है। श्रावण–भाद्रपद में वर्षा कम होने से दुर्भिक्ष, आश्विन में प्राकृतिक प्रकोपों का भय और कहीं सत्ता–परिवर्तन होता है। कार्तिक आदि शेष मासों में धातुओं में मन्दा होता है।

25. खर :

इस सम्वत् में शासकों और विरोधी देशों के सम्बन्धों में कटुता बढ़ने से युद्धाग्नि प्रज्जवलित होती है। जनता में रोग, शोक, कलह आदि दुःख बढ़ते हैं। किसी प्रमुख नेता या शासक का क्षय और कहीं शासन तन्त्र में परिवर्तन, वर्षा की कमी, फसलों की उपज कम तथा महंगाई रहती है।

Future Point

स्वामी चन्द्रदेव का फल— चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ में अधिक वर्षा, अनाजों में मन्दा, सुखों में वृद्धि होती है। आश्विन में अनाजों में समता आए, रसदार पदार्थ महंगे हों, फसलों की उपज अच्छी हो। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में समभाव तथा धान्य सस्ते हों।

26. नंदन :

इस सम्वत् में जनता सुख–सुविधा से सम्पन्न और रोग–शोक से मुक्त रहे, सुभिक्ष हो, वर्षा अधिक तथा धन–धान्य की प्रचुरता रहती है।

स्वामी मंगल का फल— जनता में सुख–सुविधा अधिक तथा सर्वधान्यों में समता रहती है। चैत्र और वैशाख में अनाज महंगे और वायु का वेग अधिक होता है। ज्येष्ठ में भी अनाज महंगे होते हैं। आषाढ़ में वर्षा अधिक, श्रावण में कम और भाद्रपद में फिर अधिक होती है। आश्विन में अनाज सस्ते, शासक तथा जनता सुखी रहे, कार्तिक में अन्न सस्ते हों। मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में अन्न मंहगे हों।

27. विजय :

इस सम्वत् में कुछ शासन तन्त्र आपसी विरोधाभास के कारण युद्धाभिमुख रहते हैं। धन का क्षय होता है। दुर्भिक्ष का वातावरण रहता है, फसलों का नुकसान होता है, रोग और शोक बढ़ते हैं। कहीं–कहीं समुचित वर्षा से उपज अच्छी और सुख–साधनों में वृद्धि होती है।

स्वामी बुध का फल— शासनाध्यक्षों में परस्पर विरोध बढ़े, अनाजों में महंगाई, वर्षा कम तथा किसी भाग में युद्ध से नुकसान होता है। पशु–धन को पीड़ा। चैत्र में वर्षा अधिक, वैशाख और ज्येष्ठ में अनाज महंगे होते हैं। आषाढ़ और श्रावण में वर्षा कम किन्तु भाद्रपद में अधिक हो। आश्विन में व्यापार मन्दा होता है। आगे के मासों में महंगाई किन्तु फाल्गुन में समानता रहती है।

28. जय :

इस सम्वत् में पृथ्वी पर आनन्द, उत्सवादि अधिक होते हैं। जनता के सुख–साधनों में वृद्धि, अनेक देशों के शासक तथा वरिष्ठ सेनाधिकारी युद्ध में प्रबल मनोबल से जय की इच्छा रखते हैं।
स्वामी गुरु— अनाज सस्ते रहते हैं। चैत्र में महंगाई अधिक किन्तु वैशाख और ज्येष्ठ में कम होती है। आषाढ़ में वर्षा अधिक और श्रावण में 24 दिन अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है। भाद्रपद में कुछ दिन वर्षा। आश्विन में अनाज सस्ते, सोने आदि धातुओं में समता। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन में अनाजों में समता, अन्य वस्तुओं में महंगाई। धातु में तेजी, कहीं–कहीं सत्ता–परिवर्तन भी होता है।

29. मन्मथ :

मन्मथ सम्वत्सर में जनता नीच प्रवृत्ति वाले, चोरों और अति लोभी व्यक्तियों से पीड़ित रहती है। धान, जौ, गेहूँ आदि धान्यों से पृथ्वी पूर्ण रहती है।

स्वामी शुक्र का फल— इस सम्वत् में शासकों का विरोध हो। पूर्व देश में जनता पीड़ित रहती है। सम्वत् के उत्तरार्द्ध में अधिक वर्षा होती है, चैत्र में वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप और भूकम्प का भय रहता है।

Future Point

वैशाख में अनाज सस्ते, ज्येष्ठ और आषाढ़ में सब वस्तुओं में महंगाई रहती है। श्रावण में वर्षा कम किन्तु भाद्रपद में अधिक होती है। आश्विन में रोग–पीड़ा का माहौल रहता है और अनाजों में महंगाई रहती है। कार्तिक में मन्दा, मार्गशीर्ष, पौष और माघ के मासों में अनाज सस्ते, शासक वर्ग और जनता सुखपूर्वक रहें; फाल्गुन में धातुएं सस्ती तथा वस्त्र महंगे होते हैं।

30. दुर्मुख :

दुर्मख नामक सम्वत् में वर्षा साधारण होती है। चोर वृत्ति और दुष्ट प्रवृत्ति वाले लोगों से जनता पीड़ित रहे। शासक और सेनाध्यक्षों में वैर–विरोध बढ़ता है।

स्वामी शनि का फल– वर्षा कम, जनता रोग और मानसिक क्लेशों से पीड़ित रहती है। उत्तर में दुर्भिक्ष, पूर्व देश में सुभिक्ष हो, शासन तन्त्रों में सुरक्षा विभाग में विरोध बढ़े। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में महंगाई बढ़ती है। श्रावण में वायुवेग अधिक, धान्य सस्ते हों, भाद्रपद में अखंड वृष्टि हो। आश्विन में रोग–पीड़ा, धातुओ में मन्दा होता है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और माघ में दुर्भिक्ष रहे। फाल्गुन में रोग–पीड़ा एवं शासनाधीशों में वैर–विरोध बढ़े।

31. हेमलम्ब :

इस सम्वत् में फसलें मध्यम हों। शासक वर्ग परस्पर विरोधामासी हों। बिजली चमके, वर्षा कम हो।

स्वामी राहु का फल– इस सम्वत् में वर्षा कम होती है तथा जनता रोगों से पीड़ित रहती है। भूकम्प इत्यादि प्राकृतिक उपद्रवों से पीड़ा का माहौल रहता है। चैत्र और वैशाख के मास पीड़ाकारक, धान्य के भावों में कमी आती है। दो देशों के मध्य युद्ध का भय रहता है। ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण में अनाज महंगे होते हैं। भाद्रपद में वर्षा अधिक, आश्विन और कार्तिक के मासों में कहीं–कहीं सत्ता कमजोर होती है। लोगों में विग्रह और सब धातुओं में महंगाई होती है। पशुओं में पीड़ा हो। मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन मास में प्रजा सुख–पूर्वक रहती है।

32. विलम्ब :

इस सम्वत् में शासन अध्यक्षों के परस्पर विरोध से जनता को कष्ट तथा नुकसान होता है लेकिन फिर भी सुख–समृद्धि बनी रहती है।

स्वामी सूर्य का फल– चैत्र एवं वैशाख में अनाजों में महंगाई कम। ज्येष्ठ और आषाढ़ में वर्षा कम किन्तु श्रावण में अधिक होती है। भाद्रपद में 21 दिन अधिक वर्षा होने से नुकसान, गेहूँ में महंगाई, पश्चिमी शासन प्रणाली में विग्रह होता है। आश्विन में अनाजों तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं में महंगाई और रोग व पीड़ा में वृद्धि होती है। कार्तिक आदि आगे के मासों में धान्य महंगे रहते हैं।

33. विकारी :

विकारी नामक सम्वत् में जनता रोगों एवं बाढ़ या सूखे इत्यादि से पीड़ित रहती है। गेहूँ,, जौ तथा फल

Future Point

कम मात्रा में होते हैं। शरद ऋतु के अनाज तथा फल अधिक होते हैं।

स्वामी चन्द्र का फल– इस सम्वत् में अनाज एवं उपयोगी वस्तुएं महंगी रहती हैं। विद्वत् वर्ग का सम्मान किया जाता है। चैत्र और वैशाख में महंगाई, आषाढ़ श्रावण में वर्षा अधिक, अनाज महंगे होते हैं। भाद्रपद में वर्षा कम होती है। आश्विन में रोग भय, धूमकेतु का उदय और महंगाई बढ़ती है। कार्तिक और मार्गशीर्ष में अन्नादि सस्ते होते हैं। पौष और माघ के मासों में रोग–पीड़ा का प्रकोप होता है। फाल्गुन में धान्य महंगे रहते हैं।

34. शर्बरी :

इस सम्वत् में शासनाध्यक्षों में परस्पर विरोध रहे। वर्षा समुचित, अनाजों की उपज अच्छी और जनता सुख–चैन पूर्वक रहती है।

स्वामी भौम का फल– इस सम्वत् में वर्षा कहीं अधिक कहीं कम होने से जन–धन की हानि होती है।

शासनाधीशों में परस्पर विरोध रहे। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ के मासों में अनाज सम, आषाढ़ और श्रावण में वर्षा अधिक किन्तु आगे के मासों में नहीं होती। भाद्रपद में अधिक वर्षा से हानि हो, आश्विन में रोग–पीड़ा, पश्चिम में दुर्भिक्ष एवं पूर्व में सुभिक्ष रहे। कार्तिक और मार्गशीर्ष में अनाजों में महंगाई किन्तु पौष, माघ और फाल्गुन में सामान्यता रहती है।

35. प्लव :

इस सम्वत् में वर्षा अधिक हो तथा जनता रोगों और लोलुपता के कारण कष्ट भोगे।

स्वामी बुध का फल– वर्षा अधिक हो, चैत्र मास में धान्य के भाव सम रहें। वैशाख मास में उपद्रव अधिक होते हैं। ज्येष्ठ में अनाजों में मन्दा, आषाढ़ में वायु वेग अधिक तथा उत्पात और रोग का भय बढ़ता है। श्रावण में अधिक वर्षा, भाद्रपद में बाढ़ इत्यादि से हानि, धान्य भाव सस्ते और आश्विन में गेहूँ का भाव महंगा हो। कार्तिक और मार्गशीर्ष में अनाजों में मन्दा, पौष, माघ और फाल्गुन में सब वस्तुएं सस्ती रहती हैं।

36. शुभकृत :

इस सम्वत् में नए उत्सव मनाए जाते हैं। आतंकवादी और चोर इत्यादि दुष्ट वृत्ति के लोगों से भय रहे। शासकों में परस्पर युद्ध की भावना बढ़ती है।

स्वामी गुरु का फल– इसमें वर्षा अधिक हो। शासक वर्ग व प्रजा सुख से रहें। उत्तर में अग्नि भय रहता है। चैत्र, वैशाख और आषाढ़ के मासों में मन्दे कावातावरण रहता है। आषाढ़ मास में वर्षा कम होती है। श्रावण की नवमी को अधिक वर्षा हो, अनाजों में मन्दा, भाद्रपद में अधिक वर्षा, तेलों में मन्दा, और शासनाधीशों में परस्पर विरोध रहता है। आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष और माघ के मासों में अनाजों

Future Point

में मन्दा रहे। फाल्गुन में प्राकृतिक प्रकोपों का भय और अनाजों में मन्दा रहता है।

37. शोभन :

इस सम्वत् में विश्व में रोग और शोक का भय होने के बाद भी अनुकूल वर्षा से अन्न इत्यादि अधिक होता है और लोग सुख पूर्वक रहते हैं।

स्वामी शुक्र का फल– शासक वर्ग तथा जनता दोनों सुखपूर्वक रहते हैं। शासन प्रणाली ठीक रहती है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में धान्य सस्ते होते हैं। शासनाधीशों में विग्रह रहे। आषाढ़ में वर्षा कम किन्तु श्रावण में अधिक होती है। भाद्रपद में अधिक वर्षा से हानि, आश्विन मास में अनाज सस्ते होते हैं। आगे के मासों में प्राकृतिक प्रकोप एवं विग्रह का वातावरण रहता है।

38. क्रोध :

इस सम्वत् में जनता क्रोध, लोभ, रोग और स्वार्थ से पीड़ित रहे। वर्षा और फसलें कम हों।

स्वामी शनि का फल– अनाज महंगे रहते हैं। शासन तन्त्रों में विरोधाभास से हानि हो। व्यापार अस्थिर रहे। चैत्र और वैशाख में बाढ़ इत्यादि से अनिष्ट हो। भयंकर रोगों का भय बने। ज्येष्ठ में महंगाई, आषाढ़ में समता रहे। वर्षा कम हो। श्रावण मास में दुर्भिक्ष, भाद्रपद में वर्षा कम, अनाजों में महंगाई बढ़े। आश्विन में वर्षा हो। रस आदि पदार्थों में समता होती है। अनाज के भावों में मन्दा रहता है। कार्तिक आदि शेष मासों में समता रहती है।

39. विश्वावसु :

इस सम्वत् में शासन प्रणालियों में अस्थिरता बनी रहती है। वर्षा एवं फसलें कम होती हैं। जनता रोगों तथा करों इत्यादि के बोझों से पीड़ित रहती है।

स्वामी राहु का फल– वर्षा कम हो, अनाज महंगे हों। चैत्र मास में शासकों में परस्पर विरोध से सम्बन्धों में कटुता आए। वैशाख में विग्रह हो। अन्न महंगे होते हैं। ज्येष्ठ में पुनः विग्रह। आषाढ़ में कम वर्षा, श्रावण और भाद्रपद में दुर्भिक्ष की स्थिति बने। आश्विन में रोग–पीडा, चौपायों में महंगाई तथा स्वर्ण इत्यादि धातुओं में मन्दा आता है। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन के मासों में सब भावों में मन्दा हो।

40. पराभव :

इस सम्वत् में शासक युद्धोन्मुख हो। जनता में विभिन्न नए–नए प्रकार के रोगों की वृद्धि हो। इस सम्वत् में वर्षा कम हो तथा उपज कम मात्रा में हो।

स्वामी केतु का फल– वर्षा कम हो। चैत्र और वैशाख में अनाजों में महंगाई, मेघ गरजे, बिजली चमके, वायु में प्रबलता रहे। ज्येष्ठ मास में आंधी–तूफान से हानि। आषाढ़ में वर्षा कम किन्तु श्रावण में अधिक

Future Point

हो। अनाजों में समता हो। भाद्रपद में दुर्भिक्ष हो। आश्विन मास में धान्य एवं रस वस्तुएं महंगी किन्तु, धातुएं सस्ती हाती हैं। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में अनाजों में समानता रहती है।

41. पलवंग :

इस सम्वत् में वर्षा कम होती है। रोगों तथा चोरी इत्यादि अनैतिक कार्यों से जनता परेशान रहती है। भूमि या सीमाओं के विवाद को लेकर शासकों के बीच युद्ध हो।

स्वामी ब्रह्माजी का फल– चैत्र और वैशाख में महंगाई बढ़े। ज्येष्ठ मास शासकों के लिए कष्टकारक, आषाढ़ में वर्षा कम, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, श्रावण में अधिक वर्षा, भाद्रपद की अष्टमी से अधिक वर्षा होती है। आश्विन मास में रोग–पीड़ा तथा रसदार वस्तुएं तेज होती हैं। फाल्गुन में जनता में कष्ट रहता है।

42. कीलक :

इस सम्वत् में वर्षा अच्छी होने से धान्यादि सस्ते होते हैं। जनता की वृद्धि होती है तथा शासन तन्त्रों में परस्पर युद्धज्वाला से भय रहता है।

स्वामी विष्णु का फल– वर्षा मध्यम होती है। चैत्र में अनाजों में तेजी, वैशाख में रोग तथा मरुदेश में दुर्भिक्ष, ज्येष्ठ में धान्य संग्रह हो। आषाढ़ में कम वर्षा, अनाज सस्ते तथा धान तेज हो। भाद्रपद में अष्टमी को गरज के साथ वर्षा होती है। आश्विन में वर्षा, अनाजों में तेजी जबकि कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष में अनाज सस्ते और माघ में तेज, फाल्गुन में शासक तथा जनता सुखी और अनाजों में समता आती है।

43. सौम्य :

इस सम्वत् में शासकों में परस्पर विरोध दूर रहता है। वर्षा सामान्य होती है तथा सभी अनाजों की उपज होती है।

स्वामी शिव का फल– चैत्र में महंगाई हो। वैशाख में वायु वेग अधिक रहे। ज्येष्ठ में विग्रह हो। आषाढ़ में कम वर्षा, अनाज महंगे हों। श्रावण में वर्षा अधिक, धान्य में लाभ, अनाज सम भाव में रहें। भाद्रपद में वर्षा की कमी, अनाज महंगे होते हैं। आश्विन में शासकों में विरोध तथा जनता में परेशानी। सभी रसदार पदार्थ और धातुएं सस्ती हों। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और माघ में समभाव रहे। फाल्गुन में तेज वायु तथा अनाजों में मन्दा रहता है।

44. साधारण :

इस सम्वत् में शासनाध्यक्षों में वैर–भाव नहीं रहता। जनता भी वैर–भाव से दूर रहती है। वर्षा कम होती है तथा भय भी कम होता है।

स्वामी रवि का फल– चैत्र में धान्य में मन्दी, वैशाख, ज्येष्ठ में भूकम्प आदि प्रकोपों का भय, अनाज

Future Point

महंगे, आषाढ़ में तेज हवाएं चलें, वर्षा कम हो। श्रावण में अधिक वर्षा, अनाजों में भाव सम रहे। भाद्रपद में कम वर्षा। आश्विन में उपज कम हो। कार्तिक और मार्गशीर्ष में भाव मध्यम रहे। अकस्मात् शासकों में विग्रह हो। आगे के मासों में अनाजों में तेजी रहती है।

45. विरोध :

इस सम्वत् में शासन तन्त्रों तथा जनता में परस्पर विरोध या बिगाड़ होता है। वर्षा कम होती है और फसलों को नुकसान होता है।

स्वामी चन्द्रमा का फल– शासकों में परस्पर विरोध बढ़े। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में अनाजों के भाव समान रहते हैं। आषाढ़ में वर्षा कम किन्तु श्रावण में अधिक होती है। अनाज सस्ते, भाद्रपद में मेघ बरसते हैं। अन्न भाव समान रहे। सभी धातुएँ महंगी हों। मार्गशीर्ष में विषमता हो, वस्त्रादि महंगे हों। फाल्गुन में देश में विरोध हो।

46. परिधावी :

इस सम्वत् में शासनाध्यक्षों में युद्धमय वातावरण रहे। अनेक रोग हों। अनाज (फसलें) मध्यम हों तथा सभी प्राणी परेशान तथा कष्ट में रहें।

स्वामी मंगल का फल– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ में अन्न का भाव समान रहे। प्रजा में रोगों का भय और पशुओं में पीड़ा हो। श्रावण और भाद्रपद में वर्षा कम, अनाज महंगे और सभी धातुएं सस्ती हों। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में सभी रसदार पदार्थ तथा धान्य समान भाव में रहते हैं।

47. प्रमादी :

इस सम्वत् में वर्षा और फसलें मध्यम रहें। प्रजा में रोग–पीड़ा अधिक हो और शासक वर्ग में सरसता हो।

स्वामी बुध का फल– चैत्र में धान्य भाव समान, वैशाख और ज्येष्ठ में धान्य संग्रह हो। आषाढ़ में वर्षा कम हो। श्रावण के दूसरे पक्ष में वर्षा हो, अनाज महंगे हों। भाद्रपद में वर्षा अधिक और अनाज सस्ते हों। आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में सभी भावों में कमी तथा रसदार पदार्थ महंगे हों। जनता सुख से रहे।

48. आनन्द :

इस सम्वत् में शासक वर्ग तथा जनता आनन्दमय रहते हैं। फसलें अधिक होती हैं तथा वर्षा की भी कमी नहीं होती।

स्वामी गुरु का फल– वर्षा अधिक हो। चैत्र और वैशाख में अनाज सस्ते हों। ज्येष्ठ और आषाढ़ में

Future Point

वर्षा मध्यम रहे किन्तु श्रावण में अधिक हो। भाद्रपद में खण्डवृष्टि हो, गेहूँ महंगा हो। आश्विन में अनाज सस्ते, धातुएं महंगी हों। कार्तिक में अकस्मात् भय हो। मार्गशीर्ष में जनता पीड़ित हो। पौष और माघ में वर्षा, अनाज सस्ते और फाल्गुन में महंगे रहते हैं।

49. राक्षस :

इस सम्वत् में सब लोग अपने–अपने कार्यों में संलग्न रहते हैं। दया–धर्म को छोड़कर निर्दय होते हैं। धान्य, फसलें एवं वृष्टि मध्यम होती हैं।

स्वामी शुक्र का फल– लोग धान्य संग्रह करते हैं। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में तेल महंगे होते हैं। ज्येष्ठ में गुड़, शक्कर और द्रव्य महंगे हों। श्रावण में वर्षा कम, अनाज तेज हो। भाद्रपद में वर्षा अधिक, अनाज सस्ते हों। आश्विन में भाव समान रहते हैं। कार्तिक में रोग–पीड़ा, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और, फाल्गुन में अन्न के भाव मन्दे, जनता एवं प्रशासक वर्ग खुश रहते हैं।

50. नल :

इस सम्वत् में अनाजों की उपज मध्यम होती है। शासकों में क्षोभ रहे। वर्षा मध्यम रहे तथा चोरों अर्थात् दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों व उग्रवाद से जनता में भय अधिक बढ़े।

स्वामी शनि का फल– चैत्र में रोग–पीड़ा बढ़े, वायु प्रबल रहे। वैशाख में अनाज का संग्रह हो। ज्येष्ठ में शासकों में परस्पर विरोध रहे। जनता में सुख–शान्ति हो। आषाढ़ में संग्रह तथा कार्तिक में विक्रय हो। मार्गशीर्ष, पौष और माघ में अनाज के भाव सम रहें। फाल्गुन में बाल रोग अधिक हो, तस्करों का भय रहे। उत्तर में दुर्भिक्ष रहे।

51. पिंगल :

इस सम्वत् में फसलें कम हों। वर्षा मध्यम हो। शासक सैन्यबल से शत्रु की भूमि पर अधिकार जमाएं। **स्वामी राहु का फल–** धातुएं सस्ती हों। चैत्र मास में धान्य तेज तथा जनता को कष्ट हो। वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ में अनाज सस्ते हों। आषाढ़ और श्रावण में वर्षा कम, धान्य तेज हो। भाद्रपद में वर्षा खंडित हो। आश्विन में भाव मध्यम रहे। मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में अनाजों में तेजी रहे।

52. कालयुक्त :

इस सम्वत् में जनता सुख से रहती है। अनाज की फसलें अधिक मात्रा में होती हैं। नए रोगों से पीड़ा हो। **स्वामी केतु का फल–** वर्षा कम हो। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में धान्य का संग्रह हो। लाभ अधिक हो। आषाढ़ में वर्षा कम श्रावण में अधिक वर्षा, अनाज के भाव मध्यम हों। भाद्रपद में वर्षा खण्डित हो। अनाज में तेजी रहे। आश्विन मास में रोगों का प्रकोप बढ़े। सभी रसदार पदार्थों तथा धातुओं में मन्दा हो। कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में पशुओं को कष्ट तथा शासकों में विरोध का वातावरण रहता है। सभी प्रकार के फलों से पृथ्वी परिपूर्ण रहती है।

Future Point

53. सिद्धार्थी :

इस सम्वत् में प्रजा में ज्ञान–वृद्धि हो। वैराग का प्रभाव बढ़े। सभी जगहों पर फसलें और वर्षा भी अच्छी हों, सब प्रकार से आनन्द और प्रसन्नता बनी रहे।

स्वामी सूर्य का फल– अनाजों के भाव मन्दे में रहें। चैत्र वैशाख में लोगों में कष्ट रहे। ज्येष्ठ और आषाढ़ में प्रबल वायु चले, श्रावण में तीन दिन अधिक वर्षा हो, शेष मध्यम, अनाजों में तेजी रहे। भाद्रपद में खण्ड वृष्टि हो। आश्विन में अनाजों में समता आए। कार्तिक में धान्य अधिक हो और मन्दा आए। मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन में राज्य में विरोध और अशान्ति बढ़ती है।

54. रौद्र :

इस सम्वत् में शासकों में क्षोभ और कलह–क्लेश अधिक रहता है। वर्षा तथा फसलें मध्यम होती हैं।

स्वामी चन्द्रमा का फल– विश्व में आपसी विरोध अधिक रहता है। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में महंगाई बढ़े। आषाढ़ और श्रावण में वर्षा कम किन्तु भाद्रपद में अधिक होती है। अनाज में मन्दा आता है। आगे आश्विन आदि मासों में अनाजों में तेजी तथा चौपाए सस्ते रहते हैं। लोग सुखपूर्वक रहते है।

55. दुर्मति :

इस सम्वत् में शासकों में दुर्मति रहे। परस्पर विरोधाभास से युद्धमय वातावरण बना रहता है फिर भी जनता सुखपूर्वक रहती है।

स्वामी मंगल का फल– चैत्र और वैशाख में धान्य सस्ता, ज्येष्ठ में अनाज मध्यम रहे। आषाढ़ में आंधी तूफान अधिक, श्रावण में वर्षा कम होती है। भाद्रपद में भावों में समानता, आश्विन में सभी रसदार पदार्थ तथा धान्य मध्यम रहें। कार्तिक में सब वस्तुएं समान। आगे पौषादि मासों में धातुओं में मन्दा रहता है।

56. दुंदुभि :

इस सम्वत् में सभी अनाज अधिक उपजते हैं। शासक वर्ग जनता को अधिक सहूलियतें देने को तत्पर रहते हैं। पूर्व के देशों में अनिष्ट होता है। वर्षा अधिक होती है तथा अनाज मन्दा रहता है।

स्वामी बुध का फल– चैत्र, वैशाख, और ज्येष्ठ में अनाज मन्दा रहता है। आषाढ़ में अनाजों में तेजी तथा वर्षा कम होती है। श्रावण में 11 दिन अधिक वर्षा का योग बने, अनाज मन्दा रहे। भाद्रपद में वर्षा सामान्य हो। आश्विन में अनाजों में और मन्दा तथा रोग अधिक हों। कार्तिक में महंगाई बढ़े। मार्गशीर्ष

Future Point

में मन्दा रहे तथा शासकों में परस्पर विरोध बढ़े। पौष आदि शेष मासों में अनाज सम भाव में रहते हैं।

57. रुधिरोद्गारी :

इस सम्वत् में शासनाध्यक्ष युद्धादि के द्वारा अपने–अपने देशों में जन–धन की हानि करते हैं। जनता में भय और रोग बने रहें।

गुरु का फल– शासकों में परस्पर विरोध हो। प्रदेशों से अनाज का आयात हो। चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ के मासों में सब वस्तुएं, अनाज एवं धातुएं मन्दी हों। उत्तर दिशा की तरफ दुर्भिक्ष तथा पश्चिम में सुभिक्ष हो। आषाढ़ में शुक्ल पक्ष में अधिक वर्षा हो। श्रावण में 15 दिन अधिक वर्षा रहे। भाद्रपद में वर्षा का अभाव रहे। धान्य तेज हो। आश्विन में सम भाव और कार्तिक आदि मासों में अनाज सस्ते तथा जनता में पीड़ा–व्याधि अधिक रहे।

58. रक्ताक्षी :

इस सम्वत् में वर्षा उत्तम होती है तथा फसलें भी अधिक होती हैं। शासनाध्यक्ष एक–दूसरे को लाल आंखों अर्थात् क्रूर दृष्टि से देखें। युद्धमय वातावरण रहे।

स्वामी शुक्र का फल– चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ में अनाजों में मन्दा हो। आषाढ़ में अधिक वर्षा और अनाज में मन्दा हो। श्रावण और भाद्रपद में वर्षा कम हो। भाद्रपद में रोग–पीड़ा बढ़े। आश्विन में अनाज और भी सस्ते हों। आगे कार्तिकादि शेष मासों में अनाज–धान्य तेज रहते हैं।

59. क्रोध :

क्रोध नामक सम्वत्सर में शासनाध्यक्षों में परस्पर क्रोध बना रहे। वर्षा मध्यम हो, पूर्व में अधिक वर्षा रहे। उपद्रव भी अधिक हों।

स्वामी शनि का फल– चैत्र और वैशाख में कुछ वर्षा हो, अनाज मन्दे रहें। ज्येष्ठ में रोग–पीड़ा, आषाढ़ और श्रावण में वर्षा कम हो। अनाज मन्दे रहें। ज्येष्ठ में रोग–पीड़ा का वातावरण रहे, आषाढ़ और श्रावण में धान्य में तेजी हो। भाद्रपद में मेघ बरसे, अन्न सस्ता हो। आश्विन में रोग–पीड़ा रहे। कार्तिक में विग्रह हो, अन्न के भाव सस्ते हों। पौष में व्यापारी वर्ग को कष्ट हो।

60. क्षय :

इस सम्वत् में कपास, गन्ध, तेलों, गन्ना तथा अनाजों की फसलें नष्ट हों और मनुष्य भी दुबले–पतले और बलहीन होते हैं।

स्वामी राहु का फल– चैत्र तथा वैशाख में उत्पात होता है। ज्येष्ठ, अषाढ़ में बाल रोग अधिक होते हैं। वर्षा कम होती हैं। अन्न का भाव मन्दा रहता है। भाद्रपद में वर्षा का अभाव होता है। आश्विन में रोग–पीड़ा अधिक हो, धातुएं सम रहें। शासकों में विरोध बढ़े।

Future Point

4. सम्वत्सरों के अंग और फल–

कृत्तिका तथा रोहिणी दोनों नक्षत्र सम्वत्सर के शरीर हैं। पूर्वाषाढ़ा तथा उत्तराषाढ़ा यह दोनों नक्षत्र नाभि आश्लेषा हृदय जबकि मघा नक्षत्र पुष्प है।

सम्वत्सर देव

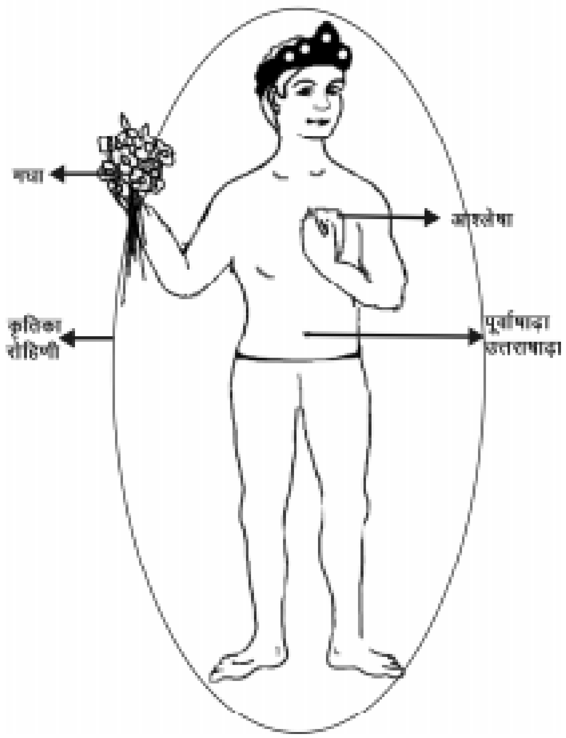

फल– यदि सम्वत्सर के प्रवेश के समय शरीर के नक्षत्रों पर पाप ग्रह हों तो मनुष्यों को वायु का भय होता है, नाभि के नक्षत्रों पर हों तो क्षुधाजन्य भय, हृदय के नक्षत्रों पर हों तो धान्य को भय और पुष्प के नक्षत्रों पर हों तो बच्चों को रोगों इत्यादि से कष्ट होता है।

प्रश्नमाला :

1. सम्वत्सर किसे कहते हैं ? और इनकी संख्या लिखो ?
2. सम्वत्सर निकालने की विधि का वर्णन करो ?
3. सम्वत्सर के अंग और उनका फल क्या है ?
4. मन्मथ नामक सम्वत्सर का फल बताओ ?

Future Point

अध्याय–2

आकाशीय कौंसल

1. आकाशीय कौंसल का गठन :

इस विश्व की सभी घटनाओं को गति रूप देने के लिए एक आकाशीय कौंसल ही ब्रह्माण्ड के आदि, भौतिक, दैविक परिवर्तन, सर्व क्रिया कलापों व शुभाशुभ का संचालन करती है।

सम्वत्सर में आकाश कौंसल का गठन इस प्रकार होता है–

1. राजा :

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को अर्थात् जिस दिन विक्रमी सम्वत् का आरम्भ होता है उस दिन के वारेश को वर्ष का राजा नियुक्त किया जाता है।

2. मन्त्री :

मेष संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उसके वारेश को सम्वत् के मन्त्री पद पर नियुक्त किया जाता है।

3. सस्येश : (चौमासी फसलों का स्वामी)

कर्क संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को सस्येश पद पर नियुक्त किया जाता है

4. धान्येश : (शीतकालीन फसलों का स्वामी)

धनु की संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उसके स्वामी को धान्येश के पद पर नियुक्त किया जाता है

5. मेघेश : (मौसम विभाग वर्षा आदि का स्वामी)

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर जिस वार को प्रवेश करता है उस वार के स्वामी को मेघेश पद पर नियुक्त किया जाता है

6. रसेश : (गुड़, खांड आदि रसकस का स्वामी)

तुला संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उसके स्वामी को रसेश नियुक्त किया जाता है।

7. नीरसेश : (सर्वविधि धातु आदि व्यापार का स्वामी)

मकर संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उसके स्वामी को नीरसेश नियुक्त किया जाता है

8. धनेश : (धन–दौलत एवं खजाने का स्वामी)

कन्या संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उसके स्वामी को धनेश नियुक्त किया जाता है

9. दुर्गेश : (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा का स्वामी) सिंह संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उसके स्वामी को दुर्गेश पद पर नियुक्त किया जाता है।

10. फलेश : (फल–फूल आदि का स्वामी) : मीन की संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को फलेश नियुक्त किया जाता है।

Future Point

2. आकाशीय कौंसल के पदाधिकारीयों का फल–

वर्ष में शान्ति, विग्रह, आर्थिक–सामाजिक प्रगति, फसलों की लाभ–हानि आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिये सभी पदाधिकारियों के गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार समग्र रूप से विचार करना पड़ता है। किन्तु, यहाँ सर्वप्रथम सभी पदों पर आरूढ़ ग्रहों के व्यक्तिगत फल पर विचार करना अपेक्षित है।

I राजा

चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा अर्थात् जिस दिन विक्रमी सम्वत् आरम्भ होता है उस दिन जो वार होता है उस के वारेश को वर्ष का राजा माना जाता है। अलग–अलग राजाओं का शास्त्रों मे इस प्रकार फल लिखा है–

1. सूर्य :

वर्षा पर्याप्त न हो, चौपायों एवं जनता में रोग–भय व्याप्त हो, अनाज–फलों की फसल अपेक्षाकृत कम हो। चोरी का भय रहे। अग्नि काण्ड आदि से जन–धन की हानि तथा वरिष्ठ शासक या नेता का निधन हो।

2. चन्द्रमा :

मांगलिक एवं शुभ कार्य अधिक होते हैं। वर्षा अधिक और फसलें उत्तम होती हैं। जनता में परस्पर सद्भाव तथा स्नेह बढ़े और शासक वर्ग की प्रतिष्ठा बढ़े। जनता के स्वास्थ्य, रोग निवारण तथा शान्ति के लिए विशेष योजनात्मक पग उठाये जाते हैं।

3. मंगल :

अग्निकाण्ड से जन–धन की हानि की घटनाएं अधिक होती हैं। चोरों, लुटेरों से जनता परेशान रहे। शासकों में परस्पर युद्धाग्नि से वातावरण में भय व्याप्त रहता है। अनेक स्थानों पर वर्षा की कमी हो।

4. बुध :

वर्षा अधिक हो। बाढ़ से हानि का डर रहे। विवाहादि मांगलिक कार्य अधिक हों। जनता में सुख–सुविधा–धन–धान्य की वृद्धि हो। शासकों तथा जनता में आनन्द–मंगल रहे। गोधन की वृद्धि होती है।

5. गुरु :

वर्षा पर्याप्त मात्रा में तथा सुसमय पर हो। दूधादि पौष्टिक तत्व अधिक मात्रा में हों धार्मिक अनुष्ठान यज्ञादि अधिक हो तथा सभी लोग आनन्द मंगलमय उत्सवों को मनायें।

6. शुक्र :

वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो, अनाज आदि का उत्पादन अधिक हो। फल–फूलों की पैदावार अधिक हो। शासकों में सुख एवं संपन्नता की वृद्धि हो। जनता में राग–रंग की वृद्धि तथा नारी जाति का प्रभुत्व बढ़ता है।

7. शनि :

वर्षा कम हो। नानाविध रोगों से जनता पीड़ित रहे। राजनीतिज्ञों में परस्पर विरोध बढ़े तथा देशों (शासनाध्यक्षों) में युद्धमय वातावरण रहे। रोग, चोर और उपद्रवकारी तत्वों से अशान्ति हो तथा कहीं अकाल जैसी स्थिति से जनता को पलायन करना पड़े।

Future Point

Future Point

II मन्त्री

मेष संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को वर्ष का मन्त्री माना जाता है।

1. सूर्य :

सूर्य के मन्त्री होने से शासकों में परस्पर विरोध एवं वैमनस्य बढ़े। रोगों तथा चोरी आदि से भय व्याप्त रहे। धन–धान्य की समृद्धि बने। गुड़ और रसादि पदार्थ महंगे हों।

2. चन्द्रमा :

वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो। अनाज–फसलें अधिक हों। जनपदों (जिलों) में विस्तार हो एवं सुख समृद्धि रहे और सब प्रकार आनन्द–मंगल बना रहे।

3. मंगल :

चोरी, ठगी इत्यादि अनैतिक कार्य अधिक हों। जनता अनेक रोगों से पीड़ित रहे। जनपदों (जिलों) में सुख–शान्ति रहे। दूध आदि की कमी हो। विद्वत् वर्ग अपने कार्य से विचलित रहता है।

4. बुध :

जनता का स्तर ऊंचा उठता है। पति–पत्नी वर्ग में स्नेह एवं विलासप्रियता बढ़े। धन–धान्य की समृद्धि रहे। वर्षा अधिक हो। जौ, मसूर, चना आदि अनाज महंगे हों।

5. गुरु :

सभी अनाजों की फसलें उत्तम होती हैं। वर्षा अधिक हो। सभी प्रकार आनन्द–मंगल रहे। शासक वर्ग पूर्ण मनोबल से जनता के हितार्थ कार्यों में लगे रहें।

6. शुक्र :

टिड्डी दल, मूषक एवं महिष आदि जीवों से खड़ी फसलों की हानि हो। सभी अनाजों में महंगाई रहे। वर्षा अधिक हो तथा बाढ़ का भय रहे। नारी जाति का प्रभुत्व बढ़े। वात, काम एवं यौन रोगों की अधिकता रहे।

7. शनि :

शासक–प्रशासक के कठोर एवं निर्दयतापूर्ण व्यवहार से जनता में दुःख और असन्तोष की भावना रहे।

III सस्येश (चौमासी फसलों का स्वामी)

कर्क संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को सस्येश माना जाता है।

1. सूर्य :

सस्येश सूर्य होने से ग्रीष्म ऋतु का धान्य महंगा हो। चोरी–ठगी की घटनाएं अधिक हों। शासकों में युद्ध हो। वर्षा अधिक होने पर भी पशुचारा में कमी रहे। वृक्षों की उत्पत्ति अधिक हो।

2. चन्द्रमा :

प्रजा में सुख साधनों की वृद्धि हो। वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो। दूध आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। शासक वर्ग तथा उच्च प्रतिष्ठित वर्ग देव–द्विजों की आराधना तथा सम्मान करें। भूमि पर धन–धान्य आदि अधिक हों।

3. मंगल :

ग्रीष्म ऋतु के धान्य जौ, गेहूँ इत्यादि फसलों का नुकसान हो। कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि हो। हाथी, घोड़े, गाय, बैल इत्यादि चौपायों में रोग अधिक फैलें।

4. बुध :

ग्रीष्म ऋतु के धान्य –गेहूँ, चावल, गन्ना –इत्यादि की उपज पर्याप्त मात्रा में होती है। वर्षा पर्याप्त एवं समुचित हो। विकास एवं सुख साधनों की वृद्धि हो। ब्राह्मण एवं विद्वान् लोग धर्मपरायणता की ओर प्रवृत्त हो।

5. गुरु :

सस्येश गुरु हो तो उस वर्ष ग्रीष्म ऋतु की फसलों की उपज पर्याप्त मात्रा में हो। रसकस, दूध, घी भी पर्याप्त हों। वर्षा समुचित मात्रा में हो, वेद–विहित (स्वधर्म निर्दिष्ट) मार्ग से जनता में स्नेह एवं सद्भावना जागृत हो।

7. शुक्र :

सस्येश शुक्र हो तो उचित समय पर समुचित वर्षा हो। गेहूँ, चावल, ईख आदि फसलों की उपज पर्याप्त मात्रा में हो। फलों–फूलों की पैदावार अच्छी हो। वातावरण आनन्दमय रहे।

8. शनि :

सस्येश शनि हो तो गेहूँ, चावल, जौ इत्यादि की खड़ी फसलों की हानि होती है। महंगाई रहे। शासको का व्यवहार कठोर हो। जनता व्यर्थ के नए–नए विवादों में उलझे।

सस्येश कुण्डली– कर्क संक्रान्ति में सूर्य के कर्क राशि में प्रवेश के समय को इष्ट मान कर जो कुण्डली बनाई जाती है उसे सस्येश कुण्डली कहते है।

Future Point

IV धान्येश (शीतकालीन फसलों का स्वामी)

धान्येश—धनु संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को धान्येश माना जाता है।

1. सूर्य :

सूर्य के धान्येश होने से सर्दियों में होने वाली फसलें (मूंग–मोठ–बाजरा आदि) नष्ट होती हैं। महंगाई बढ़े। शासक वर्ग में शक्ति–परीक्षण और कहीं परस्पर युद्ध की भावना बढ़े। ज्वर आदि रोगों से कष्ट हो। अनाज महंगे रहते हैं।

2. चन्द्रमा :

चन्द्रमा के धान्येश होने पर सर्दियों में होने वाली फसलें– मूंग, मोठ, बाजरा, सरसों आदि–अच्छी होती हैं। दूध पर्याप्त मात्रा में हो तथा जनसंख्या में वृद्धि होती है।

3. मंगल :

धान्येश मंगल होने पर ग्रीष्म धान्य–बाजरा, मूंग, मोठ, चावल, मक्का आदि–पर्याप्त मात्रा में हों। ईख, घी और तेल में महंगाई हो। जनता की अग्निकाण्ड से हानि हो।

4. बुध :

धान्येश बुध होने से सर्दियों में होने वाली फसलों का उत्पादन अच्छा होता है। वर्षा अधिक हो। परन्तु सिन्ध तथा लाट (पंजाब) प्रदेशों में वर्षा की कमी रहे।

5. गुरु :

धान्येश गुरु हो तो जौ, गेहूँ, चावल आदि अनाजों की फसलें अच्छी हों ब्राह्मणादि सभी धर्म परायण लोग अपने–अपने धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त रहें।

6. शुक्र :

धान्येश शुक्र हो तो शीतकालीन फसलें मूंग, मोठ, बाजरा इत्यादि की उपज अच्छी नहीं होती। गेहूँ आदि अनाज, पशुचारा व सब्जियों में महंगाई रहती है। वर्षा कम हो, दूध अपर्याप्त होता है।

7. शनि :

शनि के धान्येश होने से अनाज, मूंग, मोठ और बाजरे की फसलों के रोगग्रस्त होने से पैदावार कम हो। शासकीय कोष में कमी हो, कहीं युद्ध की विभीषिका रहे। वर्षा कम और समयोचित न हो। कृषक वर्ग चिन्तित रहे।

धान्येश कुण्डली– सूर्य के धनु राशि में प्रवेश के समय को इष्ट मानकर बनाई कुण्डली धान्येश कुण्डली कहलाती है।

Future Point

Future Point

V मेघेश (मौसम विभाग का स्वामी)

मेघेश– सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को मेघेश माना जाता है।

1. सूर्य :

वर्षा कम हो, महंगाई अधिक हो, राजनीतिज्ञों में परस्पर विरोध बढ़े चोरों, ठगों आदि का भय रहे। चना, जौं, ईख, धान की फसलें अधिक मात्रा में हो।

2. चन्द्रमा :

वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो, अनाज इत्यादि की फसलें तथा फल–फूल उत्तम हों। दूध, घी का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में हो। शासकों में परस्पर सहानुभूति रहे एवं जनता को सुख सुविधा अधिक प्राप्त हो।

3. मंगल :

सभी धर्मों के लोग अपनी धर्मपरायणता को भूलें। वर्षा कहीं अधिक कहीं कम हो। जनता में शोक तथा दु:ख का वातावरण रहे।

4. बुध :

वर्षा अधिक हो। गेहूँ, जौ, धान्य आदि की फसलें अधिक हों। ब्राह्मण आदि सभी धर्मपरायण लोग अपने–अपने धार्मिक कृत्यों में प्रवृत्त रहें। सभी सुख–सुविधाओं की वृद्धि हो।

5. गुरु :

मेघेश गुरु हो तो वर्षा अति उत्तम अर्थात् समयानुसार पर्याप्त मात्रा में हो। रसदार फसलें उत्तम हों। जनता में सुख–समृद्धि की वृद्धि हो तथा शासक वर्ग धर्मपरायण हो।

6. शुक्र :

वर्षा अच्छी होती है। सभी धर्मपरायण जन सुख–सुविधा सम्पन्न हों। शासकों से जनता सन्तुष्ट हो।

7. शनि :

पृथ्वी पर कुछ भागों में वर्षा की कमी हो। शासकों का मन क्षुब्ध रहे। जनता में रोग–भय व्याप्त रहे।

मेघेश कुण्डली :

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय को इष्ट मान कर जो कुण्डली बनाई जाती है उसे मेघेश कुण्डली कहते है।

Future Point

VI रसेश (गुड़–खाण्ड आदि रसकस का स्वामी)

रसेश– तुला संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को रसेश माना जाता है।

सूर्य–सूर्य रसेश हो तो वर्षा अपर्याप्त हो। गुड़ादि रसकस कम हों। दूध, घी, तेल, वस्त्र आदि की कमी रहे। शासक वर्ग अनेक चिन्ताओं से ग्रस्त रहे।

चन्द्रमा :

वर्षा पर्याप्त हो। गुड़–खांड आदि भी पर्याप्त मात्रा में हों। धन–धान्य की वृद्धि हो तथा युवावर्ग भोग विलास की नई–नई प्रक्रियाओं में आसक्त रहता है।

मंगल :

वर्षा अपर्याप्त हो। गुड़, खाण्ड आदि रसकस में कमी रहे। महंगाई हो। शासकों के व्यवहार से जनता असंतुष्ट हो।

बुध :

वर्षा पर्याप्त मात्रा में उचित समय पर हो। रसकस तथा सभी धान्य की समृद्धि हो; दूध–घी भी पर्याप्त मात्रा में हो। शासक वर्ग शासन को सुचारु रूप से चलाए एवं देश को सुरक्षित रखे।

गुरु :

जनता में सुख–समृद्धि रहे। कमल तृणादि रसकस की फसलें अच्छी रहें। जनपदों में बुद्धिमान व्यक्तियों का मान बढ़े। शासक वर्ग अनेक वाहनों तथा पशुधन से युक्त रहे।

शुक्र :

शुभ–मांगलिक–धार्मिक कार्य अधिक हों, कुछ प्रदेशों में वर्षा का अभाव हों। फिर भी गुड़–खाण्ड आदि रसकस का उत्पादन अधिक हो। सुभिक्ष हो, शासक वर्ग न्याययुक्त होकर सुचारु रूप से शासन चलाए।

शनि :

वर्षा का अभाव रहे। गुड़–खांड आदि रसकस की फसलों को नुकसान हो। चौपायों में भी रोग युक्त रहे।

रसेश कुण्डली : सूर्य जब तुला राशि में प्रवेश करता है तो उस समय को इष्ट मान कर जो कुण्डली बनती है उसे रसेश कुण्डली कहते हैं।

VII नीरसेश (धातु एवं व्यापार का स्वामी)

नीरसेश– मकर संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को नीरसेश माना जाता है।

1. **सूर्य** : नीरसेश सूर्य हो तो सोना, तांबा, चांदी आदि धातुएं, माणिक मोती आदि रत्न महंगे हों।

2. **चन्द्रमा** : नीरसेश चन्द्रमा हो तो सफेद वस्तुएं, चांदी, मोती और वस्त्र महंगे हों।

3. **मंगल** : सोना, पीतल, तांबा, लाल चन्दन, मूंगा आदि रत्न; लाल रंग की वस्तुएं महंगी हों।

4. **बुध** : बुध नीरसेश हो तो रेडीमेड कपड़े, होजरी का सामान, शंख, चंदन, धातुएं एवं रत्न महंगे हों।

5. **गुरु** : सोना, पीले वस्त्र, हल्दी इत्यादि और पीले रंग की वस्तुएं महंगी हों।

6. **शुक्र** : सोना, मोती, हीरा, आदि रत्न, रेडीमेड़ कपड़े एवं सुगन्धित पदार्थ, शृंगार की वस्तुएं महंगी हों।

7. **शनि** : हार्डवेयर का सामान, लोहा, मशीनरी, काले रंग के वस्त्र और वस्तुएं आदि महंगे होते हैं।

नीरसेश कुण्डली : सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तो उस समय को इष्ट मान कर जो कुण्डली बनाई जाती है उसे नीरसेश कुण्डली कहते हैं।

Future Point

Future Point

VIII फलेश (फल–फूल आदि का स्वामी)

फलेश– मीन संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को फलेश माना जाता है।

1. **सूर्य** : भूमि सब प्रकार के फलों–फूलों से शोभायामान होती है। वर्षा भी पर्याप्त होती है।

2. **चन्द्रमा** : फसलें अधिक हों। फल–फूल पर्याप्त मात्रा में हों। विद्वत वर्ग भोगों की तरफ आकृष्ट हो। शासक वर्ग कर्तव्यपरायण रहे।

3. **मंगल** : फलों–फूलों की फसलें कम मात्रा में हों, रोगों से परेशानी एवं शासक वर्ग में परस्पर तनाव बना रहे।

4. **बुध** : फलों की उत्तम उपज हो। वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो। घास और पुष्प भी पर्याप्त मात्रा में हों। जनता में सुख–आनन्द का वातावरण बना रहे।

5. **गुरु** : फलों, पौधों की पैदावार अधिक हो। सभी लोग अपने–अपने धार्मिक उत्सवों में लीन रहें।

6. **शुक्र** : घास, शाक, फलों–फूलों की फसलें अधिक हों। प्रशासकों को विशेष भोग्य पदार्थ प्राप्त हो। धर्मपरायण लोग धार्मिकता की ओर अधिक प्रवृत्त हों।

7. **शनि** : फलों की फसलों की हानि हो। वृक्षों के पुष्प निष्फल हों। शीत में हिमपात से हानि, चोरी की घटनाएं अधिक, जनता रोगों से परेशान रहे।

फलेश कुण्डली : सूर्य के मीन राशि में प्रवेश के समय को इष्ट मानकर बनाई गई कुण्उली फलेश कुण्डली कहलाती है।

Future Point

IX धनेश (धन एवं खजाने का स्वामी)

धनेश– कन्या संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी को धनेश माना जाता है।

1. **सूर्य** : व्यापारी वर्ग को व्यापार में उत्तम लाभ हो। गाय, भैंस, घोड़े इत्यादि चौपायों के व्यापारी भी उत्तम लाभ को प्राप्त करते हैं।

2. **चन्द्रमा** : क्रय–विक्रय से धन संचय अधिक हो। व्यापार में अधिक लाभ हो। वस्त्र, चावल, घी, तेल, रसादि एवं सुगन्धित वस्तुओं के व्यापारी वर्ग को विशेष लाभ होता है। शासक वर्ग भी सुख–साधनों से युक्त रहे।

3. **मंगल** : वर्षा असमय हो। गेहूँ, चना, धान्यादि की फसलें खराब हों। व्यापार में अस्थिरता रहती है। प्रशासन से जनता दुःखी रहती है। मार्गशीर्ष में वस्तुओं के विक्रय से अधिक लाभ हो।

4. **बुध** : विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का संग्रह लाभ देता है। कृषि कार्य करने वालों को अच्छा लाभ प्राप्त हो। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहें।

5. **गुरु** : व्यापारी वर्ग सुख–समृद्धि से रहे। फलों और फूलों की उपज अच्छी हो। जनता धन–धान्य से सम्पन्न तथा धर्मपरायण हो।

6. **शुक्र** : सभी लोग धन–धान्य से समृद्ध एवं सुखी रहें। व्यापारी वर्ग सुखी एवं शासक वर्ग कर्तव्य परायण रहे।

7. **शनि** : शासक वर्ग चिन्तित एवं अस्वस्थ हो। व्यापारी वर्ग तथा कृषक वर्ग के लोगों में आर्थिक विपन्नता का वातावरण बना रहे। विद्वत् वर्ग भी अनेक सन्तापों से युक्त रहे।

धनेश कुण्डली : सूर्य के कन्या राशि में प्रवेश के समय को इष्ट मान कर जो कुण्डली बनाई जाती है उसे धनेश कुण्डली कहते हैं।

X दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा का स्वामी)

दुर्गेश– सिंह की संक्रान्ति के दिन जो वार होता है उस वार का स्वामी दुर्गेश माना जाता है।

1. **सूर्य** : शासक वर्ग कानून व्यवस्था को सुचारु बनाता है तथा राजदरबार में प्रत्येक को न्याय दिलाता है। राजकर्मी अपने क्षेत्र में ईमानदारी से काम करते हैं।

2. **चन्द्रमा** : शासक वर्ग नीतिपूर्वक शासन करे। जनता में विलासिता बढ़े। ईख तथा गोरक्ष (दूध, घी आदि) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहें। निरोगता रहे, शासक और उच्चपदासीन वर्ग में संघर्ष भी रहे।

3. **मंगल** : शासकों के व्यवहार या राष्ट्रीय आपत्ति से जनता को कष्टों का सामना करना पड़ता है। व्यापारी वर्ग में सरकारी नीतियों के कारण क्रय–विक्रय में भय व्याप्त रहे तथा लाभान्वित न हो सके अर्थात् कठोर कानून बने।

4. **बुध** : जनता में सुख–दुःख बना रहे। जल व थल सेनाओं की वृद्धि हो। यात्रा में लोग सुरक्षा अनुभव करें। चोरी–ठगी की घटनाएं कम हों। शासक कूटनीति का उपयोग करें।

5. **गुरु** : शासन अधिकारी न्यायिक कानून व्यवस्था को बनाए रखें। ग्राम और नगरों में सामान्य सुविधा उपलब्ध हो। सैन्यबल सुदृढ़ बनें।

6. **शुक्र** : वरिष्ठ शासकों को अनेक सुख–सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो। व्यापारी एवं पर्वत वत सुदृढ़ निकटस्थ नागरिक समान सुख के भागी हों।

7. **शनि** : युद्धादि के कारण अशान्त वातावरण से जनता को पलायन करना पड़े। नागरिकों को शत्रु जन्य अनेक भावनाओं को सहना पड़े। टिड्डी दल, चूहों आदि से खड़ी फसलों को हानि हो।

दुर्गेश कुण्डली : सूर्य के सिंह राशि में प्रवेश के समय को इष्ट मान कर दुर्गेश कुण्डली बनाई जाती है। दुर्गेश कुण्डली में लग्न में शुभ ग्रहों की स्थिति तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो अच्छा और सुचारु शासन यदि क्रूर ग्रहों की स्थिति और दृष्टि हो तो शासन व्यवस्था कष्टकारी होती है।

Future Point

3. मेघ :

मेघ नौ प्रकार के होते हैं।

1. आवर्त 2. संवर्त 3. पुष्कर 4. द्रोण 5. काल 6. नील 7. वरुण 8. वायु 9. वेग।

शक सम्वत् को 8 से गुणा कर 9 से भाग दें–जो शेष बचे वह मेघ होता है।

उदाहरण– जैसे अभी सन् 2002 में शक सम्वत् 1924 है। इसे 8 से गुणा करें तो योग 15,392 निकलता है। इस योग को 9 से भाग देने पर शेष 2 बचते हैं। अतः क्रम के अनुसार इस संवत में संवर्त नामक मेघ है। इस प्रकार प्रत्येक संवत् का मेघ निकाल कर उसका फल नीचे दिए गए नव मेघों के फलों में से जाना जा सकता है।

नव मेघों का फल–

1. आवर्त– वर्षा कम होती है। गेहूँ, जौ, चावल, चने, कपास आदि की फसलों को नुकसान होता है। घी, तेल महंगे होते हैं।

2. संवर्त– वर्षा पर्याप्त हो। पूर्व दिशा में वायु चले। वासना जन्य अनैतिक घटनाएं अधिक हों। धर्म–कर्म में रुचि कम रहे। शासक वर्ग स्वकार्य में संलग्न रहे।

3. पुष्कर– वर्षा कम हो। जनता में रोग–पीड़ा अधिक रहे। अनैतिक कार्यों में वृद्धि हो। कंद, मूल, फल कम होते हैं।

4. द्रोण– वर्षा उत्तम तथा सुसमय पर हो। सभी लोग धन–धान्य से समृद्ध हों। शासकीय खजाना भी भरपूर रहता है।

5. काल– वर्षा अपर्याप्त मात्रा में हो, उच्च वर्ग के लोग रोग–शोकों से मुक्त रहें। शासकों में परस्पर तनाव अधिक रहे।

6. नील– वर्षा उत्तम तथा पर्याप्त मात्रा में हो, जनता समृद्ध तथा संतुष्ट हो। दूध पर्याप्त मात्रा में हो। कपास आदि की फसलें अधिक हों।

7. वरुण– वर्षा अच्छी तथा सुसमय पर हो। जनता में सुख–ऐश्वर्य की वृद्धि हो, धार्मिक लोगों का आदर हो।

8. वायु– वर्षा कम हो। सभी अनाज इत्यादि की फसलों की हानि हो। संग्रहीत भण्डार (गोदाम) खाली होते हैं।

9. तम– वर्षा की कमी रहे। बीमारियां अधिक हों। फसलों की उपज कम हो। जनता अनेक कष्टों से पीड़ित रहे।

Future Point

4. नाग :

नाग बारह प्रकार के होते हैं।

1. सुनुघ्न 2. नन्दसारी 3. ककोटक 4. पृथुश्रव 5. वासुकी 6. तक्षक 7. कंबल 8. अश्वतर 9. हेममाली 10. नरेन्द्र 11. वज्रदंष्ट्र 12. वृष।

शक सम्वत् में 2 जोड़ कर 12 का भाग देने से जो शेष बचे उसके अनुसार नाग होता है। जैसे वर्तमान में 1924 शक संवत् है। इसमें 2 जोड़ने से 1926 का योग बनता है। अब 1926 को 12 से भाग देने पर शेष 6 बचता है। नागों के क्रम में 6ठा स्थान तक्षक का है इसलिए वर्तमान शक संवत् का नाग तक्षक हुआ। इस प्रकार प्रत्येक शक संवत् का नाग पता करके उसका फल द्वादश नागों के फलों में से जाना जा सकता है।

द्वादश नागों का फल :

1. **सुनुघ्न नाग**— वर्षा मध्यम हो तथा लोगों की बुद्धि श्रेष्ठ कार्यों में लगे।
2. **नन्दसारी नाग**— वर्षा अधिक हो। जनता में सुख—ऐश्वर्य और आनन्द की वृद्धि हो।
3. **ककोटक नाग**— वर्षा कम हो। शासकों में पीड़ाजनक स्थिति तथा वरिष्ठ शासक के मरण से शोक हो।
4. **पृथुश्रव नाग**— वर्षा कम हो तथा अनाजों की फसलों को नुकसान हो।
5. **वासुकी नाग**— वर्षा अति उत्तम होती है तथा फसलों की उपज भी उत्तम होती है।
6. **तक्षक नाग**— वर्षा मध्यम होती है तथा दो देशों के बीच तनाव से अशान्ति का वातावरण रहे।
7. **कंबल नाग**— वर्षा और अनाजों की उपज कम हो।
8. **अश्वतर नाग**— वर्षा बहुत कम हो जिससे सूखा पड़े और फसलों की हानि हो।
9. **हेममाली नाग**— वर्षा अधिक हो तथा अनाज आदि की पैदावार भी अधिक हो।
10. **नरेन्द्र नाग**— सभी जगहों पर वर्षा पर्याप्त मात्रा में तथा सुसमय पर हो।
11. **वज्रदंष्ट्र नाग**— वर्षा बहुत कम मात्रा में होने से फसलों का नुकसान होता है।
12. **वृष नाग**— वर्षा मध्यम में रहे तथा अनाजादि फसलों की उपज कम हो।

प्रश्नमाला :

1. संवत्सर में आकाशीय कौंसल का गठन किस प्रकार होता है ?
2. सम्वतसर में ग्रहों की राजा के पद पर नियुक्ति कैसे की जाती है ?
3. सम्वत्सर में ग्रहों की मन्त्री पद पर नियुक्ति कैसे की जाती है ?
4. सम्वत्सर में सस्येश की नियुक्ति कैसे की जाती है ?
5. धान्येश किसे माना जाता है ? और धान्येश कुण्डली किस प्रकार बनाई जाती है ?
6. मेघेश किसे नियुक्त किया जाता है ? मेघेश कुण्डली बनाने की विधि का वर्णन करो।

Future Point

7. रसेश किसे नियुक्त किया जाता है ? रसेश कुण्डली किस प्रकार बनाई जाती है ?

8. नीरसेश की नियुक्ति किस प्रकार की जाती है ? नीरसेश कुण्डली बनाने की विधि का वर्णन करो ?

9. फलेश किसे नियुक्त किया जाता है ? फलेश कुण्डली किस प्रकार बनाई जाती है ?

10. धनेश की नियुक्ति किस प्रकार की जाती है ? धनेश कुण्डली बनाने की विधि का वर्णन करो।

11. दुर्गेश की नियुक्ति किस प्रकार की जाती है ? दुर्गेश कुण्डली बनाने की विधि का वर्णन करो।

12. मेघ कितने प्रकार के होते हैं ? संवत् में मेघ निकालने की विधि क्या है ?

13. नाग कितने प्रकार के होते हैं ? संवत् में नाग निकालने की विधि क्या है ?

Future Point

Future Point

अध्याय–3

विशेष कुण्डलियां

1. जगत् लग्न कुण्डली बनाने की विधि एवं फल :

नव वर्ष में मेष संक्रान्ति अर्थात् जिस समय सूर्य मेष में प्रवेश करे उस समय को लग्न बना कर जो कुण्डली बनती है उसे जगत कुण्डली कहते हैं। इसके अनुसार संसार के हित–अहित के बारे में शुभाशुभ फल का विचार होता है।

जगत लग्न में शुभ ग्रह स्थित हो या यदि यह शुभ ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो उस वर्ष सम्पूर्ण वस्तुओं की उपज अच्छी होती है।

जगत कुण्डली के जो बारह भाव होते हैं उन्हें वर्ष के चैत्रादि बारह मास माना जाता है। जिसे हम सामने वाली कुण्डली से जान सकते हैं।

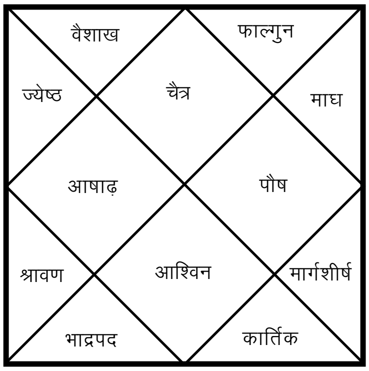

जगत लग्न कुण्डली

इन भावों में स्थित ग्रहों के अनुसार ही शुभाशुभ फल जाना जाता है। जिस भाव में सौम्य ग्रह स्थित होते हैं वह मास शुभप्रद रहता है और जिसमें क्रूर ग्रह होते हैं वह अशुभ प्रद होता है। फल ग्रहों के गुण–धर्म के अनुसार ही जाना जाता है। जगत कुण्डली के सातवें भाव में क्रूर ग्रहों सूर्य, मंगल, शनि और राहु की स्थिति खड़ी फसलों को हानि करती है।

यदि दूसरे, 12वें या केन्द्र में सौम्य ग्रह हो, स्वग्रही या मित्रग्रही हो तो सुभिक्ष अर्थात् महंगाई कम होती है। अन्यथा दुर्भिक्ष अर्थात् महंगाई रहती है।

उदाहरण : हमने 2059 की जगत लग्न कुण्डली बनानी है पंचांग से मालूम हुआ सूर्य मेष राशि में 14 अप्रैल को 5 बजकर 49 मिनट पर प्रवेश कर रहा है। इस समय को इष्ट मान कर यह कुण्डली बनेगी।

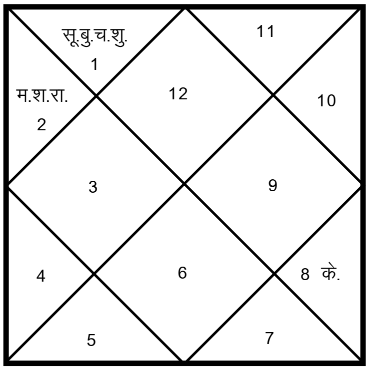

उदाहरण के रूप में इस कुण्डली में तीसरे और नवें भाव में अशुभ ग्रहों की स्थिति होने से ज्येष्ठ और मार्गशीर्ष मास में अशुभ घटनाएं होती हैं।

2. वर्ष लग्न कुण्डली बनाने की विधि एवं फल :

जब चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का आरम्भ होता है, अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के प्रारम्भ के समय अमावस्या जितनी घड़ी और पल पर समाप्त हो उसे इष्ट मान कर उस इष्ट से लग्न बना कर जो कुण्डली बनती

है, उसे नव वर्ष प्रवेश वर्ष कुण्डली मानते हैं। संसार के शुभाशुभ कार्यों का विचार भी उसी कुण्डली से देखा जाता है।

उदाहरण– मान लें कि सम्वत् 2059 की नव वर्ष लग्न कुण्डली बनानी है। इसके लिए संवत् 2058 को चैत्र कृष्ण अमावस्या शुक्रवार तदनुसार 12 अप्रैल 2002 को 47 घड़ी 01 पल अर्थात् मध्यरात्रि के समय पर दृष्टि डालनी होगी। इस दृष्टि से संक्रमण का समय 13 अप्रैल 2002 को मध्य रात्रि 00 बजकर 41 मिनट तक है। यही समय नववर्ष प्रवेश का समय था और इसका लग्न धनु था। इसी के आधार पर सम्वत् 2059 की निम्नलिखित कुण्डली बनती है।

वर्ष लग्न कुण्डली

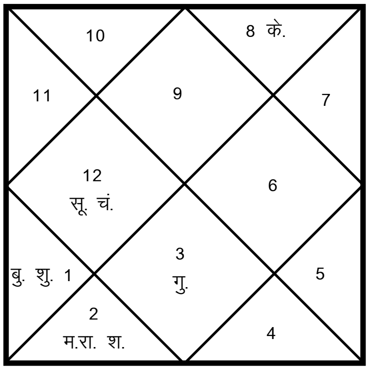

3. वर्ष लग्न कुण्डली में द्वादश लग्नों का फल :

1. मेष लग्न :

नव वर्ष प्रवेश के समय मेष लग्न हो तो पूर्वी राज्यों में राज विग्रह तथा दुर्भिक्ष हो और दक्षिण में उपज अधिक तथा सुभिक्ष हो। वर्षा अधिक हो तथा घी–तेल महंगे हों। उत्तर में सुभिक्ष तथा शासकों में उद्वेग रहे और मध्य प्रदेश में वर्षा तथा फसलें अधिक हों।

2. वृष लग्न :

पश्चिम में अकाल, पूर्व में राजविग्रह, उत्तर में कम उपज हो और दक्षिण में भी अकाल की स्थिति हो।

3. मिथुन लग्न :

मिथुन लग्न हो तो देशों के बीच युद्ध की ज्वाला भड़के। पूर्वी राज्यों में फसलें खराब हों। उत्तर और दक्षिण राज्यों में अधिक वर्षा तथा धान्य अधिक हों, पश्चिम में कम वर्षा तथा सत्ता परिवर्तन हो। मध्य प्रदेश में फसलों की उपज आधी हो तथा पशुओं में रोग रहे।

4. कर्क लग्न :

पूर्वी राज्यों में सुख समृद्धि रहे। उत्तरी राज्यों में उपद्रव अधिक हो तथा पश्चिमी राज्यों में दुर्भिक्ष रहे।

5. सिंह लग्न :

दक्षिणी राज्यों में बाढ़ इत्यादि का भय, धान्य सस्ते हों और आधा वर्ष धन–धान्यदायक रहे। पश्चिमी राज्यों में सभी धातुओं की वस्तुएं तथा फल महंगे हों। उत्तरी राज्यों में अतिवृष्टि हो, जनता में सुख समृद्धि बनी रहे। पूर्वी राज्यों में उपज कम हो अन्तिम पांच माह कल्याणकारी हों। मध्य प्रदेश में पांच मास राज विद्रोह रहे।

6. कन्या लग्न :

पूर्वी राज्यों में स्थिति सामान्य रहे। घी महंगा हो। दक्षिणी राज्यों में भूखमरी पड़े। बंगाल में उपद्रव हो।

Future Point

पश्चिम में जनता में विग्रह तथा अनाज महंगे हों। पूर्वोत्तर राज्यों में विग्रह हो। मध्यप्रदेश में घी सस्ता तथा जनता में रोष और प्रजातन्त्र भंग हो।

7. तुला :

मध्य प्रदेश में जनता में विग्रह तथा सत्ता भंग हो। पूर्व में भी सत्ता भंग हो तथा उपद्रव अधिक हो। वर्षा कम हो। तेज वायु (आंधी) से नुकसान हो, दुर्भिक्ष हो पश्चिम में दो देशों के बीच युद्ध का वातावरण रहे तथा महंगाई हो। दक्षिण में सुख–समृद्धि तथा पश्चिम में दो मास उत्पात रहे।

8. वृश्चिक :

पश्चिम में 9 मास तक दुर्भिक्ष रहे। उत्तर में उपज आधी हो और धातुएं सस्ती हों। पूर्व में शासकों में विग्रह, जनता में 3 मास तक कष्ट किन्तु बाद में सुखकारी। मध्यप्रदेश में धान्य की फसलें नष्ट हों। दक्षिण में अधिक वर्षा तथा सत्ता परिवर्तन हो। धातुओं में लाभ रहे।

9. धनु :

उत्तर–पूर्व में सुख समृद्धि रहे। मध्य प्रदेश में बाढ़ आदि से हानि, दुर्भिक्ष तथा रोग का भय रहे। पश्चिम में घी–अनाज महंगे हों। दक्षिण में सुख–समृद्धि होने पर भी पशुओं में पीड़ा रहे।

10. मकर :

उत्तर में प्राकृतिक प्रकोपों से जन–धन की हानि हो। पश्चिम में उपज अच्छी तथा सुख–समृद्धि बनी रहे। मध्य प्रदेश में फसलें कम उपजें तथा अनाज महंगे हों। सूखा पड़ने के बाद वर्षा हो। शेष दिशाओं में समानता रहे।

11. कुम्भ :

पूर्व में सुख–समृद्धि तथा उत्तर में दुर्भिक्ष हो। पश्चिम में महंगाई से जनता में रोष की भावना जागे। दक्षिण में विग्रह हो तथा मध्य प्रदेश में सुख–समृद्धि रहे।

12. मीन :

दक्षिण में सुख–समृद्धि तथा कहीं शासन परिवर्तन हो मध्य प्रदेश में फसलों का नुकसान हो। शेष दिशाओं में सुख–समृद्धि बनी रहे।

Future Point

4. सम्वत् स्तम्भ निकालने की विधि एवं फल :

सम्पूर्ण विश्व की सत्ता जल, वायु, अन्न और तृण (जड़ी–बूटियों) पर ही निर्भर है। सम्वत् का शुभाशुभ फल भी इन पर आधारित है और जन मानस की खुशहाली तथा देश की उन्नति भी इन्हीं पर आश्रित है।

प्रत्येक सम्वत् में चार स्तम्भ होते हैं–

I जल स्तम्भ।

II तृण स्तम्भ।

III वायु स्तम्भ।

IV अन्न स्तम्भ।

जिस वस्तु का स्तम्भ हो उसी वस्तु के आधिक्य से सम्वत् व्यतीत होता है। स्तम्भ जितने अधिक होंगे, उतना ही अच्छा होगा, जितने कम हों उतना ही मध्यम और यदि कोई स्तम्भ न हो तो समय खराब रहता है।

सम्वत् स्तम्भ निकालने की विधि एवं फल–

1. जल स्तम्भ : चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र हो तो जल स्तम्भ होता है।

फल : उस वर्ष वर्षा अधिक होती है।

2. तृण स्तम्भ : वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र हो तो तृण स्तम्भ होता है।

फल : उस वर्ष घास और जड़ी–बूटियाँ अधिक होती हैं।

3. वायु स्तम्भ : ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र हो तो वायु स्तम्भ होता है।

फल : उस वर्ष वायु वेग अधिक रहता है।

4. अन्न स्तम्भ : आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र हो तो अन्न स्तम्भ होता है।

फल : उस वर्ष अनाज अधिक पैदा होता है।

अब आगे देखा जाता है कि सम्वत् में कौनसा स्तम्भ कितने प्रतिशत है। इसके लिए उपरोक्त तिथि में नक्षत्र कितने समय तक था उसके माध्यम से स्तम्भ का प्रतिशत निकाल लिया जाता है। मान लो हमें सम्वत् 2059 का जल स्तम्भ देखना है। तो पंचांग से ज्ञात किया कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 13 अप्रैल 2002 को 0 बजकर 51 मिनट से आरम्भ होकर 14 अप्रैल को 2 बजकर 53 मिनट तक है। इसलिए प्रतिपदा तिथि का कुल मान 26 घण्टे 2 मिनट = 1562 मिनट हुआ। अब रेवती नक्षत्र 13 अप्रैल 2002 को केवल प्रातः 3 बजकर 13 मिनट तक ही है। इसलिए रेवती नक्षत्र प्रतिपदा तिथि में केवल 2 घण्टे 22 मिनट = 142 मिनट ही रहा। अब प्रतिशत अनुपात से जाना कि यह केवल 9 प्रतिशत है। अतः जल स्तम्भ 9 प्रतिशत ही रहा। इस तरह अन्य स्तम्भों का भी प्रतिशत इसी ढंग से निकाल लेंगे।

जिस वर्ष चारों स्तम्भ हो वह शुभ व आनन्ददायक होता है।

Future Point

जिस वर्ष चारों स्तम्भ न हो वह वर्ष अशुभ व कष्टकारी होता है।

मान लें कि किसी सम्वत् में तृण स्तम्भ और अन्न स्तम्भ ही हैं। इस प्रकार चारों स्तम्भों में से दो स्तम्भों के पाये जाने सम्वत् का फल मध्यम रहेगा। तृण स्तम्भ और अन्न स्तम्भ के आधार पर सम्वत् में घास जड़ी–बूढियाँ और अन्नादि तो उचित मात्रा में सुसमय पर होंगे लेकिन जल स्तम्भ और वायु स्तम्भ का अभाव वर्षा में कमी लाकर उपरोक्त फलों को भी मध्यम स्थिति में रखेगा इस प्रकार सम्वत् में पाए गए दोनों स्तम्भों का फल भी पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होगा।

प्रश्नमाला :

1. जगत् कुण्डली किस प्रकार बनाई जाती है ?
2. वर्ष कुण्डली किस प्रकार बनाई जाती है ? नव वर्ष प्रवेश कुण्डली में सिंह लग्न का विवेचन करें।
3. स्तम्भ कितने प्रकार के होते हैं ? सम्वत् में स्तम्भ किस प्रकार जाने जाते हैं ? इनके फलों का संक्षिप्त वर्णन करें।

Future Point

Future Point

अध्याय–4

कूर्म चक्र

1. कूर्म चक्र बनाना एवं फल :

मेदिनी में राष्ट्रों, देशों, नगरों, शहरों, ग्रामों आदि में शुभ–अशुभ, वर्षा, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप और उन्नति अवनति के बारे में कूर्म चक्र बनाकर विचार किया जाता है। कूर्म चक्र में कछुए की आकृति बनाकर उसे 27 नक्षत्रों में वर्गीकृत किया जाता है।

कूर्म चक्र

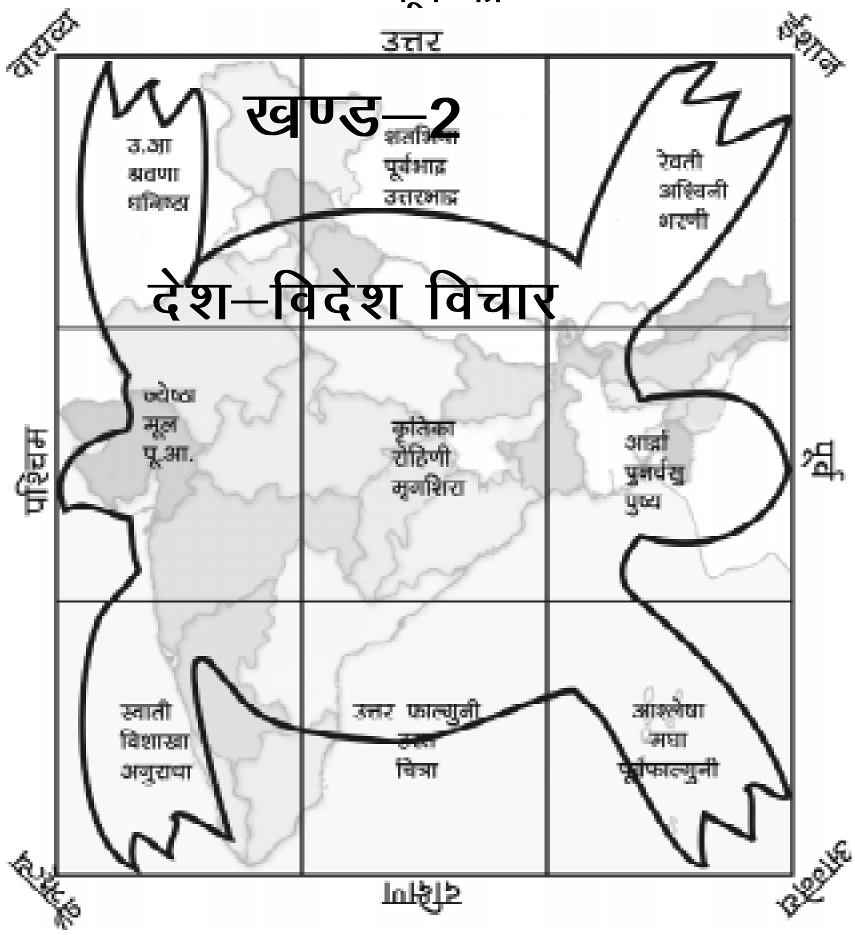

कूर्म चक्र की पीठ में अर्थात् मध्य में कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्र।
कूर्म चक्र के मुंह की तरफ (पूर्व दिशा) में आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र।
आगे के दाहिने पैर (अग्नि कोण) में आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी।
कूर्म चक्र की दाहिनी कुक्ष (दक्षिण दिशा) में उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, नक्षत्र।

Future Point

जेलें, गुप्तचर विभाग

डाक, तार रेल
टेलीफोन,
परिवहन

संसद प्रधान
कानून व्यव

जल, कृषि विभाग

विपक्ष पक्ष

राष्ट्रपति, सत्ता पक्ष

न्याया
न्याया
धार्मिक
संस्था
वायुसे

जन्मदर
शिक्षा विभाग

अन्तरराष्ट्रीय व्यापार,
विदेशी मामले

जलसेना और थलसेना, जनरोग,
श्रमिक वर्ग चिकित्सा मंत्रालय

प्राकृतिक प्रकोप
आत्महत्याएं दुर्घटनाएं

Future Point

कूर्म चक्र के पिछले दाहिने पैर (नैर्ऋत्य कोण) में स्वाति, अनुराधा, विशाखा नक्षत्र।
कूर्म चक्र की पूंछ (पश्चिम दिशा) में ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।
कूर्म चक्र के पिछले वाम पैर (वायव्य कोण) में उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा।
कूर्म चक्र की बायीं कुक्ष (उत्तर दिशा) में शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र।
कूर्म चक्र के आगे के बायें पैर (ईशान कोण) में रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र होते हैं।
किसी भी भूखण्ड, ग्राम, नगर, जिला, प्रान्त देश, राष्ट्र आदि के शुभ–अशुभ पर विचार करने के लिए उस भूखण्ड पर कूर्म चक्र की स्थापना की जाती है।
इस प्रकार पाँच कूर्म बन जाते हैं।

1. विश्व के मानचित्र पर कूर्म चक्र
2. किसी देश के मानचित्र पर कूर्म चक्र
3. देश के किसी प्रान्त के मानचित्र पर कूर्म चक्र
4. प्रान्त के जिला या नगर के मानचित्र पर कूर्म चक्र
5. नगर के मानचित्र पर कूर्म चक्र,

1. जैसे आप भारत के मानचित्र पर कूर्म चक्र के नक्षत्रों की स्थापना देख रहे हैं उसी प्रकार आप विश्व का मानचित्र लेकर कूर्म चक्र की स्थापना या किसी प्रान्त, नगर, या ग्राम के मानचित्र लेकर कूर्म चक्र की स्थापना कर सकते हैं। जिस भू–भाग के नक्षत्र पर सर्वतोभद्र चक्र के अनुसार क्रूर ग्रहों का वेध हो या वह नक्षत्र क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्टित होगा उस नक्षत्र के अन्तर्गत भू–भाग में अशुभ ग्रहों के स्वभाव एवं प्रकृति के अनुसार अनेक प्रकार के कष्ट होंगे। इसी प्रकार जिस नक्षत्र पर सर्वतोभद्रचक्र द्वारा शुभ ग्रहों का वेध होगा या वह नक्षत्र शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्टित होगा उस नक्षत्र के अन्तर्गत आने वाले भू–भाग में शुभ ग्रहों के स्वभाव एवं प्रकृति के अनुसार अनेक प्रकार के शुभ फल प्राप्त होंगे।
विशेष नोट– सर्वतोभद्रचक्र द्वारा ग्रहों का वेध नक्षत्र आप अध्याय न 1 से जान सकते हैं।

2. ग्रहों का कार्यतत्व और प्रकृतियाँ :

1. सूर्य अग्नि तत्व का है। सभी ग्रहों का स्वामी होने से शासक, प्रशासक, राष्ट्रपति, मन्त्रीमण्डल, न्यायधीश इन सभी का प्रतिनिधित्व करता है। वन, औषधियों आदि का कारक है। भ्रमणशील होने के कारण वातावरण में परिवर्तनकारी है।
2. चन्द्रमा जल तत्व है। यह साधारण आम लोगों तथा आम लोगों के मामलों, स्त्री वर्ग, खाद्य, फसलों, औषधि, वनस्पति आदि का कारक है। यह शान्त प्रवृत्ति का है।
3. मंगल अग्नि तत्व है। सेनाध्यक्ष, सेनापति, सेनाबल, अस्त्र, शस्त्र, अग्निकाण्ड, शल्य चिकित्सा क्षेत्र, दुर्घटना, युद्ध आदि का प्रतिनिधित्व करता है।
4. बुध, पृथ्वी तत्व का ग्रह, राजदूत, व्यापार तथा वाणिज्य, समाचार पत्र, साहित्य जगत, बौद्धिक कर्म, क्रीड़ा क्षेत्र, वायु प्रदूषण आदि का प्रतिनिधित्व करता है।
5. बृहस्पति आकाश तत्व का ग्रह है। व्यापार आदि का संचालन, बैंक कर्मचारी, शिक्षक वर्ग, न्यायधीश, वकील, धर्म आदि का प्रतिनिधित्व करता है।
6. शुक्र जल तत्व का ग्रह है। स्त्री जाति, गायक, कलाकार, जन्म–दर, आबादी, स्नेह एवं सौन्दर्य का

Future Point

प्रतिनिधित्व करता है।

7. शनि वायु तत्व का ग्रह है। किसान और मजदूर वर्गों, खनिज एवं कृषि उत्पादक, रोग और कष्ट का प्रतिनिधित्व करता है।

8. राहु अचानक दुर्घटनाओं, पशुधन की हानि इत्यादि विनाशकारी तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है।

9. केतु राहु की भांति ही फल देता है लेकिन फल को (घटना) के अन्तिम छोर तक ले जाने का काम करता है।

10. यूरेनस नागरिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, गैस, जल संस्थाओं, दंगे फसाद आदि पर प्रभाव डालता है।

11. प्लूटो वैज्ञानिक आविष्कार, विस्फोट, विमान संचालन, अराजकता की घटनाओं आदि का प्रतिनिधित्व करता है।

12. नेप्च्यून राजद्रोह, धोखाधड़ी, झूठी कम्पनियों, भ्रष्टाचार आदि चालाकियों का प्रतिनिधित्व करता है।

3. विभिन्न देशों व प्रदेशों की राशियाँ :

विभिन्न राशियों में आने वाले देशों–क्षेत्रों आदि के नाम इस प्रकार हैं :

1. मेष : इंग्लैण्ड, डेनमार्क, जर्मनी, लघु पोलैंड, फिलिस्तीन, सीरिया, जापान, मद्रास, नेपाल, श्रीलंका।

2. वृष : आयरलैण्ड, फारस, पोलैंड, लघु एशिया, जार्जिया, सिप्रस, श्वेत रूस, मध्य प्रदेश, आस्ट्रेलिया, ईरान,जर्मनी।

3. मिथुन : उ. अमेरिका, बेल्जियम, नॉर्वे, लोम्बार्डे, मिस्र का निचला भाग, सार्डिनिया, ब्रिटेन का पश्चिमी भाग, आर्मिनिया, त्रिपोली, फ्लैंडर्स, वेल्स, अफ्रीका, जयपुर, हरियाणा।

4. कर्क : स्कॉटलैंड, हॉलैंड, न्यूजीलैण्ड, पश्चिम अफ्रीका, मौरिशस द्वीप, सिंध क्षेत्र, चीन, कनाडा।

5. सिंह : फ्रांस, इटली, बोहेमिया, सिसली, काल्डिया, रोमानिया का उत्तरी भाग, अपूलिया, आल्प्स में साइडल तथा टापर क्षेत्र, काबुल का क्षेत्र, विन्ध्याचल क्षेत्र।

6. कन्या : तुर्की, वेस्टइंडीज, स्विट्जरलैंड, यूनान के कुछ क्षेत्र, लवाडिया, वर्जीनिया, ब्राजील, मालवा क्षेत्र, पाकिस्तान, बगदाद।

7. तुला : आस्ट्रिया, हिंदचीन, चीन, तिब्बत, कैस्पियन के सीमावर्ती क्षेत्र, मिस्र का ऊपरी क्षेत्र, उत्तरी चीन, ब्रह्मदेश, अर्जेण्टीना, कश्मीर, मारवाड़, जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया।

8. वृश्चिक : अल्जीरिया, बारबारी, बरानिया, जड़िया, जूटलैंड, मोरक्को, नॉर्वे, उत्तरी सीरिया, क्वीन्सलैण्ड, सूरत, ब्राजील, वार्शिगटन।

9. धनु : अरब देश, आस्ट्रेलिया, फेलिक्स, केप फिनिस्टर, हंगरी, स्पेन, फ्रांस का प्रांत, मैडागास्कर, टोरण्टो, उत्तर प्रदेश।

10. मकर : भारत, सिरकान, अफगानिस्तान, अल्बानिया, बोलोनिया, यूनान, सीरिया, मेक्सिको, और्कने द्वीप, पंजाब, बंगलादेश, पं. बंगाल।

11. कुंभ : अरबदेश, प्रशिया, रूस, पोलैंड, स्वीडन तथा अबीसीनिया।

12. मीन : पुर्तगाल, कैलाव्यिग्रा, गैलिसिया, नारमंडी, न्यूबिया, सहारा रेगिस्तान, हिमाचल, मिस्र आदि।

Future Point

4. मेदिनीय ज्योतिष में द्वादश भाव विचार :

जिस प्रकार जातक की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों से उसका अलग–अलग विचार किया जाता है उसी प्रकार मेदिनी ज्योतिष के अध्ययन में द्वादश भावों का विचार इस प्रकार किया जाता है :

1. प्रथम भाव : कुण्डली के प्रथम भाव से जनसाधारण व जन स्वास्थ्य, शासक या सांसद, वातावरण, मौसम, आन्तरिक घटनाएं, देश की आम स्थिति, आन्तरिक घटनाओं का विचार किया जाता है।

.2. द्वितीय भाव : शेयर बाजार, राष्ट्रीय कोष, आयात–निर्यात, बैंक, व्यापारिक गतिविधियों पर विचार किया जाता है।

3. तृतीय भाव : यातायात, रेल तथा इससे सम्बन्धित मामले, डाक, तार, टेलीफोन, डाक–तार से सम्बन्धित मामले, परिवहन के साधन, समाचार पत्र, साहित्यिक गोष्ठियों पर विचार किया जाता है।

4. चतुर्थ भाव : कृषि, फसल विभाग, खानों का, सार्वजनिक संस्थानों, धार्मिक व शिक्षा संस्थाओं का तथा विपक्ष का विचार किया जाता है।

5. पंचम भाव : जन्म दर, मनोरंजन स्थल, प्राइमरी शिक्षा, प्रशासकीय बुद्धि, सभागारों का विचार किया जाता है।

6. छठा भाव : छठे भाव से थलसेना और जलसेना का बल, युद्धपोत, आक्रमण सम्बन्धित घटनाएं, जन स्वास्थ्य रोग आदि विचार किया जाता है।

7. सप्तम भाव : विदेशी सम्बन्ध, अन्तरराष्ट्रीय वाद–विवाद, अन्तरराष्ट्रीय व्यापार, षडयंत्र और विद्रोह का विचार किया जाता है।

8. अष्टम भाव : मृत्युदर, आत्महत्याएं, प्राकृतिक प्रकोप, दुर्घटनाएं, संक्रामक रोग का विचार किया जाता है।

9. नवम भाव : अदालतें, न्यायाधीश, धार्मिक स्थान, वायुसेना, विज्ञान तथा टेक्नोलोजी के बारे में विचार किया जाता है।

10. दशम भाव : राष्ट्रपति, शासक वर्ग, सत्ताधारी शक्ति, अनुशासन सम्बन्धी विचार किया जाता है।

11. एकादश भाव : प्रधानमंत्री, सांसद, वाणिज्य, कानून, आयकर इत्यादि करों का विचार किया जाता है।

12. द्वादश भाव : चिकित्सालयों, कारागारों, गुप्तचर विभाग, गोपनीय बल और विदेशी आक्रमण का विचार किया जाता है।

मेदिनी–कुण्डली

Future Point

5. ग्रहणों का भू–मण्डल पर प्रभाव :

प्रत्येक सम्वत में सूर्य व चन्द्र ग्रहण अक्सर लगते रहते हैं। इनका भी भू–खण्डों पर प्रभाव होता है। अब हम सूर्य व चन्द्र ग्रहणों का अलग–अलग मासों में राशियों में प्रभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

सूर्य व चन्द्र ग्रहण का चैत्र आदि मासों में फल

चैत्र : चैत्र मास में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो कहीं वर्षा अधिक, कहीं सूखा कहीं बाढ़ तथा वर्षा रुक–रुक कर होती है। तो आगे बौद्धिक व्यक्तियों, व्यापारियों और अभिनेताओं, लेखकों, चित्रकारों के लिए कष्ट रहता है।

वैशाख : वैशाख मास में ग्रहण हो तो आगे सुभिक्ष होता है। लेकिन सैन्य बलों पर विपत्ति रहती है।

ज्येष्ठ : ज्येष्ठ मास में ग्रहण हो तो प्रदेशों में सत्ता परिवर्तन होता रहता है राजकीय व राज सम्माननीय व्यक्तियों और उपद्रवकारियों को कष्ट रहता है।

आषाढ़: आषाढ़ मास में ग्रहण हो तो वर्षा के लिए अवरोधक रहता है। नदियां–नाले अपना मार्ग बदल देते हैं। देश में पानी का संकट रहता है।

श्रावण : श्रावण मास में ग्रहण हो तो कश्मीर, भूटान, नागालैंड, कुरुक्षेत्र, मध्य प्रदेश आदि को छोड़कर सर्वत्र सुख शान्ति रहती है।

भाद्रपद : भाद्रपद मास में ग्रहण हो तो सौराष्ट्र , बंगलादेश इत्यादि प्रदेशों में स्त्री जातकों के लिए कष्ट रहता है।

अश्विनी : अश्विनी में हो तो शल्य चिकित्सकों के लिए कष्टकारी रहता है।

कार्तिक : कार्तिक में ग्रहण हो तो अग्निजीवी (सुनार, लोहार) लोगों के लिए कष्ट तथा बिहार, अयोध्या, मथुरा, काशी की जनता को कष्ट होता है।

मार्गशीर्ष : मार्गशीर्ष मास में चन्द्र ग्रहण हो तो सुभिक्ष रहता है एवं धार्मिक लोगों को तथा सीमाओं पर कष्ट रहता है।

पौष : पौष मास में ग्रहण हो तो विद्वत वर्ग एवं सेना अधिकारियों को कष्ट रहता है। वर्षा का अभाव रहता है।

माघ : माघ मास में ग्रहण हो तो विद्यार्थी वर्ग और विद्वत वर्ग को कष्ट रहता है।

फाल्गुन : फाल्गुन मास में ग्रहण हो तो अभिनेताओं, कलाकारों, संगतिकारों एवं योगियों को कष्ट होता है।

ग्रहणों का राशियों में फल

1. मेष राशि में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो अग्नि द्वारा कार्य करने वाले एवं शस्त्रधारियों के लिए कष्टकारी होता है। पंजाब, उड़ीसा, मथुरा आदि में उपद्रव होता है।
2. वृष राशि में ग्रहण हो तो विशिष्ट लोगों एवं दूध से सम्बन्धित कार्य करने वालों के लिए कष्टकारी होता है।
3. मिथुन राशि में ग्रहण हो तो शासकों एवं राज्य कर्मचारियों कलाकारों और यमुना तटवर्ती प्रदेशों में प्रकृतिक प्रकोप से जनता को पीड़ित करता है।
4. कर्क राशि में ग्रहण हो तो आदिवासी, अमीर, पहलवानों, विकलांगों के लिए कष्टकारी रहता है।
5. सिंह राशि में ग्रहण हो तो विभिन्न राजनीतिक दलों, सत्ता व विपक्ष के अधिकारियों के लिए पीड़ाकारक रहता है।

Future Point

6. कन्या राशि में ग्रहण हो तो लेखकों, गायकों, विद्वत् लोगों, एवं कृषकों के लिए कष्टकारी रहता है।
7. तुला राशि में ग्रहण हो तो व्यापारी वर्ग एवं राजस्थान, कच्छ, उज्जैन प्रदेशों के लिए उपद्रवकारी होता है।
8. वृश्चिक राशि में ग्रहण हो तो विष या रसायन प्रयोग करने वाले एवं दक्षिण प्रदेशों तथा सैन्य अधिकारियों में पीड़ाकारक होता है।
9. धनु राशि में ग्रहण हो तो शासकों, वैद्य, चिकित्सकों, व्यापारियों एवं तकनीकी के लिए कष्टकारी होता है।
10. मकर राशि में ग्रहण हो तो वशिष्ट व्यक्तियों के परिवारों व मंत्री परिषदों, औषधि निर्माताओं व बुद्धिजीवियों के लिए कष्टप्रद रहता है।
11. कुम्भ राशि में ग्रहण हो तो मजदूर वर्ग पश्चिमी प्रदेशों, ऊंचे पर्वतीय प्रदेशों तथा सीमावर्ती प्रदेशों में कष्ट रहता है।
12. मीन राशि में ग्रहण हो तो बुद्धिजीवियों तथा जल सम्बन्धित कार्य करने वाले लोगों के लिए कष्टकारी होता है।

सूर्य या चन्द्र ग्रहण पर मंगल आदि ग्रहों की दृष्टि का फल

1. सूर्य या चन्द्र ग्रहण पर मंगल की दृष्टि हो तो अग्निकांड, तस्करी तथा कहीं युद्धमय वातावरण बने।
2. बुध की दृष्टि हो तो शासकों में परस्पर खींचातानी व द्वेष बढ़े।
3. गुरु की दृष्टि हो तो ग्रहण के कुफल की शान्ति होती है। अर्थात् ग्रहण से पड़ने वाला अशुभ फल नष्ट होता है।
4. शुक्र की दृष्टि हो तो देशों में अनेक प्रकार के कलह, उपद्रव आदि होते हैं एवं खड़ी फसलों का नाश होता है।
5. शनि की दृष्टि हो तो दुर्भिक्ष, चोरी आदि की वारदातें अधिक होती हैं। वर्षा का अभाव रहता है।

चन्द्र ग्रहण के बाद सूर्य ग्रहण का फल

ग्रहण के 15 दिन बाद अमावस्या को सूर्य ग्रहण चन्द्र आए तो शासक वर्ग में अनीति व अन्याय फैलाता है तथा पति–पत्नियों के परस्पर प्रेम में कमी लाता है।

अमावस्या में सूर्य के बाद पक्ष बीतने पर यदि चन्द्र ग्रहण आ जाए तो धार्मिक प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी एवं जनता में खुशहाली लाता है।

प्रश्नमाला :

1. कूर्म चक्र बनाकर नक्षत्रों की स्थिति का ज्ञान करवाएं।
2. मेदिनी ज्योतिष में द्वादश भावों का विवेचन कीजिए।
3. किसी भी प्रान्त के मानचित्र पर कूर्म की स्थापना करके फल का विवेचन करें।
4. अमेरिका की कौन सी राशि है ?
5. मेदिनीय ज्योतिष में सत्ता पक्ष और विपक्ष का किस भाव से विचार करेंगे ?
6. सूर्य व चन्द्र ग्रहणों के भूमण्डल पर होने वाले फल का संक्षेप में वर्णन करें।

Future Point

Future Point

खण्ड–3

मौसम–विचार

Future Point

Future Point

अध्याय–5

आर्द्रा प्रवेश एवं फल

1. सम्वत् में आर्द्रा जानने की विधि :

सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है उस समय जो तिथि या वार होता है उसका फल सम्वत् में विशेष महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा वर्षा का कम या अधिक एवं फसलों पर उसका असर जाना जाता है।

2. आर्द्रा का तिथियों, वारों, नक्षत्रों एवं योगों में फल :

तिथि अनुसार आर्द्रा प्रवेश फल निम्नलिखित है–

प्रतिपदा– शुभप्रद तथा मंगलमय होता है।
द्वितीया– अनाजों की वृद्धि होती है।
तृतीया– उपद्रव अधिक होते हैं।
चतुर्थी– अशुभ होता है।
पंचमी– उत्तमोत्तम फलकारी होता है।
षष्ठी– सब प्राणियों के लिए सुखदायक रहता है।
सप्तमी– उत्तम क्षेम हो।
अष्टमी– सस्य अनाजों की फसलें अधिक हों।
नवमी– उत्पात का भय हो।
दशमी– शुभ मंगल हो।
एकादशी– अनाज सस्ते भाव में रहे।
द्वादशी– शुभप्रद रहे।
त्रयोदशी– जल वृष्टि उत्तम हो।
चतुर्दशी– अनाज तथा वस्त्र महंगे हों।
पूर्णमासी– मनोरथ पूर्ण हो।
अमावस्या– फसलें खराब हों तथा शासकों के लिए अशुभ हो।

वारों को प्रवेश का फल :

रविवार– को आर्द्रा प्रवेश– पशुओं के लिए कष्टकारी
सोमवार– सुभिक्ष हो (भाव सस्ते हों)
मंगलवार– शासकों में शोक हो।
बुधवार– भाव सस्ते हों (सुभिक्ष हो)
गुरुवार– समृद्धि दायक हो।
शुक्रवार– शान्ति प्रद हो।

शनिवार– अशुभ, रोगकारक हो।

नक्षत्रों के अनुसार आर्द्रा प्रवेश का फल :

अश्विनी– पशुओं की वृद्धि हो, भयदायक हो।
भरणी– अशुभ फल, रोग अधिक हों।
कृत्तिका– अग्निकाण्ड अधिक, वर्षा कम हो।
रोहिणी– अनाज अधिक हो, सुभिक्ष हो, सन्तोष रहे।
मृगशिरा– अनाज अधिक हो, सुभिक्ष हो, भाव सस्ते हों।
आर्द्रा– अशुभ, उपद्रव अधिक हो।
पुनर्वसु– सब अनाज अधिक हों।
पुष्य– वर्षा अधिक हो, अनाजों की फसलें अधिक हों।
आश्लेषा– अशुभ फलप्रद तथा सुखों का नाश हो।
मघा– वर्षा और फसलों की उपज कम हो।
पूर्वाफाल्गुनी– शासकों की कीर्ति (प्रसिद्धि) बढ़े।
उत्तरा फाल्गुनी– अनाजों की वृद्धि हो, जनता बढ़े।
हस्त– जनता में सुखों की वृद्धि हो।
चित्रा– सब अनाज, दलहन अधिक हों; शुभ प्रद रहे।
स्वाति– अनाजों की वृद्धि हो।
विशाखा– सब रोगों का नाश हो।
अनुराधा– शासकों तथा जनता में सन्तोष बढ़े।
ज्येष्ठा– जनता में भय व्याप्त रहे।
मूला– जनता में भय अधिक तथा रोगों की वृद्धि हो।
पूर्वाषाढ़– शासकों में परस्पर विरोध बढ़े।
उत्तराषाढ़– मंगलकारी, जनता कार्यों में व्यस्त रहे।
श्रावण– शुभफल प्रद तथा वृद्धिकारक हो।
धनिष्ठा– शुभप्रद, मंगलकारी हो।
शतभिषा– वर्षा अधिक हो।
पूर्वाभाद्रपद– अशुभ कारक तथा सुख का नाश हो।
उत्तराभाद्रपद– सर्वकार्य सम्पन्न सिद्ध हो।
रेवती– शासकों के लिए अमंगलकारी और कष्टकारी हो।

आर्द्रा प्रवेश का योगों के अनुसार फल :

विष्कुम्भ– फसलों के लिए शुभ होता है।
प्रीति– वर्षा अधिक हो।
आयुष्मान– शासकों के चरित्र उत्तम हों।

Future Point

सौभाग्य– आरोग्यता तथा सौभाग्यदायक।
शोभन– शासक तथा जनता शुभ कार्यों में लगें।
अतिगण्ड– शासनाध्यक्षों में परस्पर विरोध बढ़े।
सुकर्मा– धर्मपरायण लोग धार्मिकता में लगें।
धृति– सुभिक्ष हो, (महंगाई कम हो)
शूल– रोग–पीड़ा अधिक हो।
गण्ड– मंगलमय, आनन्ददायक हो।
वृद्धि– धार्मिक कार्य अधिक हो, जनता की वृद्धि।
ध्रुव– शासकों से जनता उदासीन रहे।
व्याघात– दुर्भिक्ष हो (महंगाई बढ़े)।
हर्षण– अनाज सस्ते हों। सुखों की वृद्धि हो।
वज्र– शासकों में क्लेश हो।
सिद्धि– धान्यों की वृद्धि हो, लेकिन रोग अधिक हों।
व्यातिपात– शासकीय और जनता के खजानों का नाश हो।
वरीयान– वर्षा कम हो, फसलें भी कम हों।
परिघ– शासकों के लिए पीड़ाकारक होता है तथा धर्म और अर्थ की हानि होती है।
शिव– जनता में सद्भावना बढ़े, समय मंगलप्रद रहे।
सिद्धि– नए आविष्कारों की वृद्धि हो, सफलता मिले।
साध्य– रुके हुए सब कार्य सफल हों।
शुभ– वर्षा अधिक हो, जनता में सुखों की वृद्धि हो।
शुक्ल– वर्षा अधिक हो, फसलें अधिक हों।
ब्रह्म– वर्षा मध्यम हो।
ऐन्द्र– वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो।
वैधृति– रोगों तथा व्याधि की वृद्धि हो।

समयानुसार आर्द्रा प्रवेश फल :

1. सूर्योदय के समय आर्द्रा का प्रवेश हो तो रोग अधिक रहे।
2. सूर्योदय के 2 घण्टे बाद विग्रहकारी,
3. दोपहर के समय प्रवेश फसलों को नुकसानदायक अनाज महंगे।
4. सूर्यास्त के समय सुभिक्ष, अनाज सस्ते रहें।

Future Point

5. रात्रि के समय जनता में सुखकारी।

6. मध्य रात्रि में आर्द्रा का प्रवेश सब रोगों की वृद्धिदायक

7. मध्यरात्रि के बाद पहले का आधा भाग सुखकारक तथा बाद का दु:खकारक रहता है।

3. आर्द्रा प्रवेश कुण्डली बनाने की विधि एवं फल :

सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है उस समय को इष्ट मान कर जो कुण्डली बनती है उसे आर्द्रा प्रवेश लग्न कुण्डली कहते हैं। आर्द्रा प्रवेश लग्न कुण्डली बना कर उससे भी फल जाना जाता है।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली केन्द्र और त्रिकोण 1–4–7–10, 5, 9 भाव में सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति हो तथा चन्द्रमा जल राशि में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अनाजों की फसलें अति उत्तम होती हैं। यदि पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो फसलों का नाश होता है।

उदाहरण : जैसे सम्वत् 2059 विक्रमी में ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि शनिवार तदानुसार 22 जून सन् 2002 को विशाखा नक्षत्र सिद्ध योग और वृश्चिक राशि के चन्द्रमा (तथा कर्क लग्न में) 8 बजकर 50 मिनट पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है इस समय आर्द्रा कुण्डली इस प्रकार बनेगी।

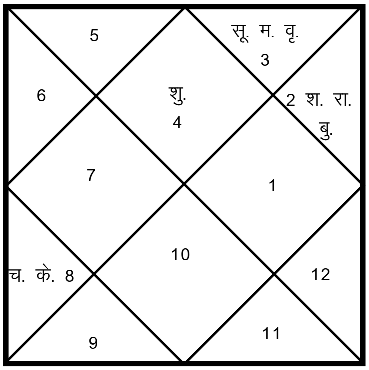

उपरोक्त कुण्डली में लग्न का स्वामी चन्द्रमा पंचम भाव में (त्रिकोण में) वृश्चिक राशि का (जल तत्व राशि में) केतु के साथ है। लग्न में जल तत्व राशि है। तथा इसे वृष राशि के तीनों अशुभ ग्रह बुध, शनि और राहु पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। अत: जलवायु विचार से इस वर्ष वर्षा पर्याप्त मात्रा में मालूम होती है। द्वादश भाव में सूर्य मंगल और गुरु के साथ है तो कहीं सूखा और कहीं बाढ़ आदि से हानि का योग बनाता है। विचार करने से आर्द्रा का प्रवेश त्रयोदशी तिथि होने पर जल वृष्टि उत्तम हो। शनिवार का आर्द्रा प्रवेश का फल विग्रहकारी लिखा है विशाखा नक्षत्र में प्रवेश रोगनाशक लिखा है आर्द्रा प्रवेश सिद्ध योग में होने से धान्य की वृद्धि और अधिक रोगकारक है। तो इस सब पर विचार करने से स्थिति अच्छी मालूम होती है।

Future Point

4. रोहिणी वास का जानना एवं फल विचार :

समुद्र चक्र में मेष संक्रान्ति के दिन जो नक्षत्र हो उससे आरम्भ करके दो–दो नक्षत्र समुद्रों में, दो–दो नक्षत्र तटों पर, एक पर्वतों पर और दो–दो सन्धियों में — इस प्रकार अभिजित नक्षत्र सहित अट्ठाईस नक्षत्र स्थापित किए जाते हैं। जिस जगह पर रोहिणी नक्षत्र पड़ता है वहीं रोहिणी निवास माना जाता है।

रोहिणी चक्र

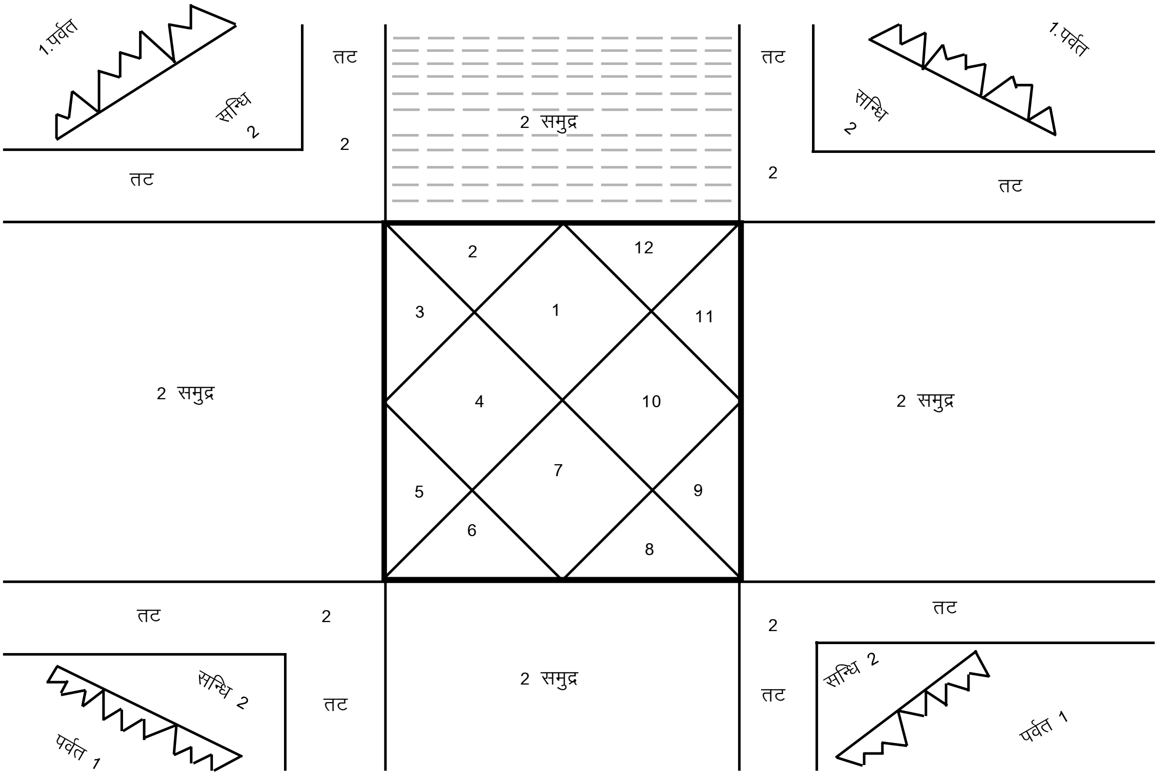

उदाहरण: – सम्वत् 2059 में मेष संक्रान्ति के दिन अश्विनी नक्षत्र है। इस आधार पर गणना करें तो पाएंगे कि अश्विनी + भरणी समुद्र में, कृत्तिका + रोहिणी तटों पर, मृगशिरा पर्वत पर और आर्द्रा + पुनर्वसु सन्धि पर आते हैं। इस प्रकार रोहिणी चक्र में सब नक्षत्रों को स्थापित किया गया। यहाँ पर रोहिणी नक्षत्र क्योंकि तटों पर स्थित है इसलिये इसका वास तट पर है।

रोहिणी निवास का फल :

1. रोहिणी का निवास समुद्र में हो तो उस वर्ष अधिक वर्षा होती है तथा फसलें पर्याप्त मात्रा में होती हैं।

Future Point

2. यदि तट पर रोहिणी का निवास हो तो वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है तथा अनाजों की भी वृद्धि होती है।

3. यदि रोहिणी का वास सन्धि में हो तो खण्डवृष्टि हो लेकिन फसलें सूखें नहीं।

4. रोहिणी का वास यदि पर्वत पर हो तो वर्षा कम होती है तथा फसलों को नुकसान होता है।

समय निवास :

1. रोहिणी का वास समुद्र में हो तो समय का निवास माली के घर होता है, 2. सन्धि में हो तो वैश्य (व्यापारी) के घर 3. यदि पर्वत पर हो तो कुम्हार के घर 4. तटों पर हो तो धोबी के घर होता है।

प्रश्नमाला :

1. आर्द्रा प्रवेश क्या होता है ? आर्द्रा प्रवेश लग्न कुण्डली किस प्रकार बनाई जाती है ?
2. सम्वत् 2060 की आर्द्रा प्रवेश कुण्डली बनायें और उसके फल विवेचन करें।
3. यदि आर्द्रा प्रवेश स्वाति नक्षत्र, षष्ठी तिथि, बुधवार, और शोभन योग में हो तो क्या फल होगा ?
4. आर्द्रा प्रवेश फल समय अनुसार किस प्रकार बदलता है ?
5. रोहणी वास किस प्रकार निकाला जाता है इसका फल स्पष्ट करें ?
6. सम्वत् 2060 का रोहणी वास कहाँ होगा ? और उसका फल क्या होगा ?

Future Point

Future Point

अध्याय–6

मौसम

1. त्रिनाड़ी चक्र द्वारा वर्षादि का जानना :

भारतीय ज्योतिष में मौसम विज्ञान अध्याय में अनावृष्टि, अतिवृष्टि, आंधी, तूफान, हिमपात, भूस्खलन आदि की जानकारी के लिए अनेक विधियां हैं। इनमें से कुछ विशेष विधियों जैसे सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र, सप्त नाड़ी चक्र, नक्षत्र संख्या बोध चक्र, नक्षत्र मण्डल चक्र आदि का उपयोग ज्योतिषीगण अधिक करते हैं। हम इन चक्रों से मौसम विज्ञान के बारे में जानेंगे। सर्वप्रथम सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र के आधार पर इसकी जानकारी प्राप्त करें।

इसमें सर्प का चित्र बनाकर उसमें तीन नाड़ियां बनाई जाती हैं। सबसे ऊपरवाली नाड़ी को स्वर्ग, बीच वाली को भूमि और सबसे नीचे वाली पाताल नाम की नाड़ी से जाना जाता है। प्रत्येक नाड़ी में अश्विनी आदि नक्षत्रों की स्थापना की जाती है।

सर्वप्रथम नक्षत्रों के क्रम से स्वर्ग–भूमि–पाताल और फिर पाताल–भूमि–स्वर्ग से 27 नक्षत्रों की स्थापना की जाती है। इसको आप निम्नलिखित चक्र के द्वारा जान लेंगे। इस चक्र में स्वर्ग को आदि, भूमि को मध्य और पाताल को अनन्त के रूप में दर्शाया गया है।

आदि	अश्विनी	आर्द्रा	पुनर्वसु	उ.फाल्गुनी	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शतभिषा	पू. भा.
मध्य	भरणी	मृगशिरा	पुष्य	पू.फाल्गुनी	चित्रा	अनुराधा	पू.आ.	धनिष्ठा	उ.भा.
अनन्त	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा	मघा	स्वाति	विशाखा	उ.आ.	श्रवण	रेवती

त्रिनाड़ी चक्र

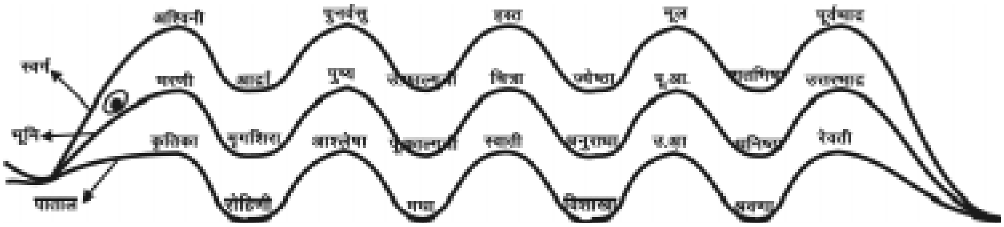

सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र द्वारा वर्षा आदि का फल :

1. सभी शुभ–अशुभ ग्रह एक ही नाड़ी में आ जाएं तो वर्षा अधिक मात्रा में होती है। जब तक एक ही नाड़ी में रहेंगे, वर्षा होती रहेगी।

2. बली सूर्य और गुरु एक नाड़ी में आ जाएं तो सुवृष्टि होती है।

3. सभी पुरुष ग्रहों का योग एक नाड़ी में आ जाए तो अतिवृष्टि का भय रहता है।

4. स्त्री और नपुंसक ग्रहों का योग एक नाड़ी में हो जाए तो ओला–वृष्टि होती है।

5. स्वर्ग नाड़ी में पाप और शुभ ग्रह इकट्ठे हो जाएं तो भारी वर्षा होती है।

6. स्वर्ग नाड़ी में पाप ग्रह और भूमि नाड़ी में शुभ ग्रह हों तो वर्षा होती है।

7. स्वर्ग नाड़ी में पाप ग्रह और पाताल नाड़ी में शुभ ग्रह हों तो वर्षा का अभाव होता है।

8. पाताल नाड़ी में पाप ग्रह हों और स्वर्ग नाड़ी में शुभ ग्रह तो वर्षा नहीं होती है।

नक्षत्र संख्या बोधक चक्र :

नक्षत्र संख्या बोधक चक्र में 27 नक्षत्रों को स्त्री, पुरुष और नपुंसक की संज्ञा से गिना जाता है। इनमें से कुछ नक्षत्र सूर्य के और कुछ चन्द्रमा के होते हैं।

सूर्य के नक्षत्र : रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूला शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद।

चन्द्रमा के नक्षत्र : अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू. षा., उ. षा. श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद और रेवती।

इनसे वर्षा आदि का ज्ञान :

सूर्य और चन्द्रमा की नक्षत्रों पर अवस्थिति के आधार पर मिलने वाले फलाफल का विवरण इस प्रकार है :

दोनों का सूर्य, सूर्य हो = वायु चले।

दोनों का चन्द्रमा, चन्द्रमा हो = वर्षा नहीं हो

दोनों का सूर्य और चन्द्रमा हो = वर्षा हो

उदाहरण : मान लें कि सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र पर है और चन्द्रमा का नक्षत्र मृगशिरा है । उपरोक्त सूत्र के अनुसार सूर्य चन्द्रमा के नक्षत्र पर है और चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्र मृगशिरा पर, अतः वर्षा होगी। इसी प्रकार नक्षत्रों की पुरुष, स्त्री और नपुंसक संज्ञाओं से भी वर्षा का विचार किया जाता है।

पुरुष संज्ञा के नक्षत्र : अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, मूला, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती। ये 14 नक्षत्र पुरुष संज्ञा के हैं।

स्त्री संज्ञा के नक्षत्र : आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उतराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा स्वाति। ये 10 नक्षत्र स्त्री संज्ञा के हैं।

नपुंसक संज्ञा के नक्षत्र : विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा। ये 3 नक्षत्र नपुंसक संज्ञा के है।

फल : सूर्य और चन्द्रमा के वर्तमान नक्षत्र और उसकी संज्ञा आदि के आधार पर फलाफल का विवरण इस प्रकार है :

1. यदि दोनों ग्रह पुरुष संज्ञा में हों (पुरुष, पुरुष) तो अधिक गर्मी हो, आकाश साफ रहे।

Future Point

2. यदि दोनों ग्रह स्त्री संज्ञा (स्त्री, स्त्री) में हों तो वायु चले या बादल छाए रहें।

3. यदि एक स्त्री संज्ञा में और दूसरा पुरुष में हो तो उत्तम वर्षा हो।

4. यदि दोनों ग्रह नपुंसक संज्ञा के नक्षत्र में हों तो वायु चले, गर्मी अधिक हो।

5. यदि एक स्त्री या पुरुष संज्ञा में हो और दूसरा नुंसक में तो बूंदा–बांदी हो।

चन्द्र	अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, उ.भा., रेवती।	पुरुष
सूर्य	रोहिणी, मृगशिरा, मूला, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद।	
सूर्य	पूर्वाफल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति।	स्त्री
चन्द्र	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा।	
सूर्य	विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा।	नपुंसक

उदाहरण : मान लें कि सूर्य पुनर्वुसु नक्षत्र पर है तो इसकी संज्ञा स्त्री हुई, और वर्तमान में चन्द्रमा का नक्षत्र रेवती है तो इसकी संज्ञा पुरुष। स्त्री–पुरुष के संयोग का फल उत्तम वर्षा है।

2. सप्तनाड़ी चक्र द्वारा वर्षादि का जानना :

नक्षत्र मण्डल के 28 नक्षत्रों (अभिजित सहित) को आचार्यों ने 7 नाड़ियों में विभाजित किया है।

सात नाड़ियों के नाम : चण्डा, वायु, दहन, सौम्या, नीरा, जला और अमृता। नक्षत्रों की नाड़ी और उसके स्वामी का ज्ञान निम्नलिखित सप्त नाड़ी चक्र से प्राप्त किया जा सकता है।

सप्तनाड़ी

(नक्षत)				नाड़ी	स्वामी	पुरुषादि संज्ञा
कृत्तिका	विशाखा	अनुराधा	भरणी	चण्डा	शनि	नपुं.
रोहिणी	स्वाति	ज्येष्ठा	अश्विनी	वायु	सूर्य	पुरुष
मृगशिरा	चित्रा	मूला	रेवती	दहन	मंगल	पुरुष
आर्द्रा	हस्त	पूर्वाषाढ़ा	उ. भाद्रपद	सौम्य	गुरु	पुरुष
पुनर्वसु	उत्तरा फा.	उत्तराषाढ़	पू. भाद्रपद	नीरा	शुक्र	स्त्री
पुष्य	पू.फा.	अभिजित	शतभिषा	जला	बुध	पुरुष
आश्लेषा	मघा	श्रवण	धनिष्ठा	अमृता	चन्द्र	स्त्री

Future Point

सर्पाकार सप्त नाड़ी चक्रम्

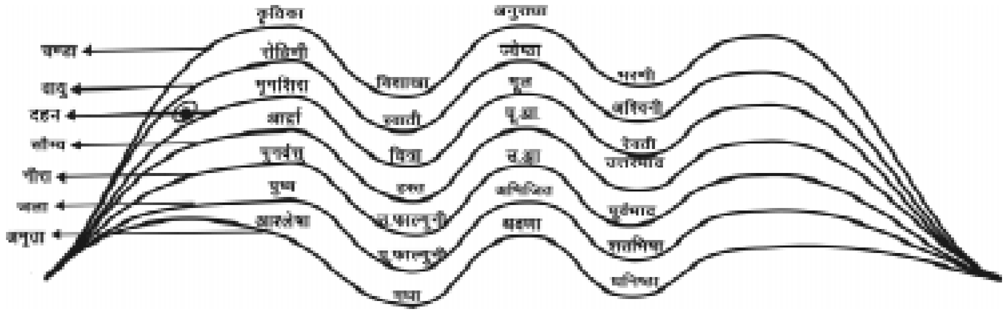

किसी भी एक नाड़ी के नक्षत्रों अर्थात् उन नक्षत्रों में से किसी पर भी, जिनकी नाड़ी एक हो, दो या दो से अधिक ग्रह आ जायें तो उस नाड़ी का वेध होता है।

1.चण्डा नाड़ी में दो या दो से अधिक पाप ग्रह आएं तो बहुत तेज वायु (तूफान) और सौम्य ग्रह हों तो तेज वायु (आंधी) आती है।

2. वायु नाड़ी में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो वायु वेग से चले।

3. दहन नाड़ी में दो या दो से अधिक ग्रह आ जाएं तो पृथ्वी पर दाह (अग्नि) की घटनाएं अधिक हों।

4. सौम्य नाड़ी में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो शुभ।

5. नीरा में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो बूंदा–बांदी।

6. जला में हों तो अतिवृष्टि कारक।

7. अमृता में दो या दो से अधिक ग्रह हों तो वृष्टिकारक।

ग्रह अपनी–अपनी नाड़ी में नाड़ी के स्वामी के अनुसार भी फल प्रदान करते हैं। जैसे– अमृता नाड़ी का स्वामी चन्द्रमा भी अमृता नाड़ी में ही हो तो विशेष फलदायक होता है। इस प्रकार ग्रह अपनी–अपनी नाड़ी में आने पर अपना–अपना फल देते हैं।

अन्य नाड़ियों में नाड़ी के समान फल देते हैं। केवल मंगल प्रत्येक नाड़ी में उस नाड़ी के समान फल देता है। अर्थात् मंगल अकेला भी प्रत्येक नाड़ी में उस नाड़ी के अनुरूप फल देता है।

1. किसी भी नाड़ी के चारों नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र पर चन्द्रमा उपस्थित हो और उस नक्षत्र पर क्रूर और सौम्य ग्रह हों तो उस दिन वर्षा होती है।

2. एक नक्षत्र पर क्रूर और सौम्य ग्रह स्थित हों तो जितने समय तक इन ग्रहों के साथ चन्द्रमा का अंशात्मक योग रहेगा (चन्द्रमा और ग्रहों के अंश एक समान रहेंगे) तब तक महावृष्टि होगी।

3. जिस नाड़ी में केवल सौम्य या केवल पाप ग्रह हों और चन्द्रमा भी उस नाड़ी पर हो तो अल्प वर्षा होती है या आकाश में बादल मंडराते रहते हैं।

4. जिस नाड़ी में उसका स्वामी ग्रह स्थित हो वह क्षीण चन्द्रमा से युक्त हो तो वर्षा होती है।

5. अमृता नाड़ी में सौम्य और क्रूर ग्रह हो और उनके स्वामी चन्द्रमा का भी इस पर योग हो तो एक,

Future Point

तीन या सात दिनों में दो, चार या पांच बार वर्षा होती है।

इसी तरह जला नाड़ी में भी सौम्य और क्रूर ग्रहों के साथ चन्द्रमा का भी योग हो तो 36 घंटे या 72 घंटे वर्षा होती है, अर्थात् एक नक्षत्र में चन्द्रमा और ग्रहों के योग होने पर उस दिन ग्रहों के अंश तक, चन्द्रमा जब तक रहता है, वर्षा होती है।

पुरुष, स्त्री और नपुंसक संज्ञा के अनुसार ग्रहों की नाड़ियों में अवस्थिति पर फल :

1. यदि दो पुरुष ग्रहों का एक नाड़ी को वेध हो तो चारों ओर वायु चले।
2. यदि स्त्री और पुरुष ग्रहों का वेध हो तो वर्षा हो।
3. दो नपुंसक ग्रहों का वेध हो तो आकाश में धूल भरी रहे।

विशेष नोटः क्योंकि वर्षा एक ही समय कहीं कम, कहीं अधिक और कहीं बिल्कुल नहीं होती । अतः इसको जानने के लिए अपने नगर, प्रान्तादि के नक्षत्र का ज्ञान प्राप्त कर सप्तम नाड़ी चक्र में देखें कि वह किस नाड़ी में आता है। उपरोक्त नियम के अनुसार शुभ–अशुभ ग्रहों से नाड़ी वेध का विचार कर उस स्थान में वर्षा का अनुमान लगाया जा सकता है।

उदाहरण : सप्त नाड़ी चक्र द्वारा हम वर्षादि का ज्ञान इस प्रकार जान सकते हैं। मान लो गुरु और शुक्र नामक दोनों ग्रह नीरा नाड़ी में क्रमशः पुनर्वसु और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हैं। इस प्रकार नीरा नाड़ी का वेध हो गया जिसका फल बूंदा–बांदी लिखा गया है। अब अगर चन्द्रमा भी पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में आकर नीरा नाड़ी में आ जाये तो इस प्रकार दो सौम्य ग्रहों के साथ चन्द्रमा का भी किसी नाड़ी में स्थित होने का फल अल्प वर्षा या आकाश में बादल मंडराना लिखा गया है। साथ ही पुरुष और स्त्री ग्रहों द्वारा वेध का फल वर्षा होने के बारे में लिखा गया है। अतः इन सबके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है। कि उस समय या उस दिन वर्षा तो अवश्य होगी लेकिन यह अल्प वर्षा अर्थात बूंदा–बांदी के रूप में होगी।

Future Point

वर्षा विज्ञान सारणी																																
दिसम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	दिस.
जून	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30															जून
जुलाई																		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	जुलाई
जनवरी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जनवरी
जुलाई	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31															जुलाई
अगस्त																		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	अगस्त
फरवरी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28				फरवरी
अगस्त	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31															अगस्त
सितम्बर																		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11				सित.
मार्च	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	मार्च
सितम्बर	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30													सित.
अक्टूबर																				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	अक्टू.
अप्रैल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30		अप्रैल
अक्टू.	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31													
नव.																				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11		नव.

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

वर्षा–ज्ञान सारणी से वर्षा कब और किस तारीख को होगी इसका ज्ञान प्राप्त किया जाता है। दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल के मासों में जिन तारीखों को वर्षा होती है प्रायः तदनुरूप ही जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर तथा लगभग आधे नवम्बर तक के मासों की तारीखों को वर्षा होती है।

भारतीय ज्योतिष में वर्षा–विज्ञान के अनुसार शीतकाल में प्रायः 12 दिसम्बर के बाद ही वर्षा होती है। इसके हिसाब से वर्षा काल में वर्षा उस तारीख के अनुसार ही होती है। मान लें कि लुधियाना में शीतकाल में वर्षा 7 दिसम्बर को हुई तो उपरोक्त सारणी के अनुसार वहां ग्रीष्मकाल में वर्षा 30 जून को होगी। इसी प्रकार मान लें कि शीतकाल में देहली में वर्षा 4 फरवरी को हुई तो उपरोक्त सारणी के अनुसार वहां वर्षा 18 अगस्त को होगी। वैसे ही मान लें कि जयपुर में वर्षा शीतकाल में 12 मार्च को हुई तो सारणी के अनुसार वहां वर्षा 23 सितम्बर को होगी।

इसी प्रकार अन्य शहरों में होने वाली वर्षा की स्थिति का ज्ञान भी उपरोक्त नियम के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है।

वर्षा में अवरोधक चक्र

सूर्य रोहिणी नक्षत्र पर लगभग 25 मई से 6 जून अर्थात् 13 दिन रहता है। इस रोहिणी नक्षत्र के सूर्य से आगे वर्षा के अवरोधक दिन देखे जाते हैं।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
	मई	मई	मई	मई	मई	मई	मई	जून	जून	जून	जून	जून	जून
तारीख	25	26	27	28	29	30	31	1	2	3	4	5	6
दिन	72	50	45	42	39	34	21	30	28	24	21	16	12

उपरोक्त चक्र में 25 मई से 6 जून तक की तारीखों के नीचे अवरोधक दिनों की संख्या लिखी है। इससे हम वर्षा के अवरोधक दिनों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। 25 मई के नीचे 72 की संख्या है। इस का भाव यह है कि 25 मई को यदि कहीं थोड़ी वर्षा हुई तो आगे 72 दिनों के लिये वर्षा में अवरोध रहेगा। और यदि 25 मई को दैवयोग से कहीं अधिक वर्षा हुई और नदियां–नाले चल पड़े तो 72 दिनों के अवरोध के बाद उत्तम वर्षा होगी।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र के समय (अर्थात् 15 मई से 5 जून के बीच) यदि गर्मी अधिक पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ होगी।

वायु तेज अर्थात् आँधियां हों तो शासकों में विग्रह रहे।

बिजली गर्जे तो वर्षा में कमी हो किन्तु बिजली का अधिक दिनों तक कड़कना शुभ होता है।

बादल छायें तो भी आगे वर्षा में कमी हो।

बूदा–बांदी हो तो भी वर्षा में अवरोध बने।

(ii) सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र में होने से यदि वायु अधिक वेग से चले तो शुभ है। यदि वायु न चले तो वर्षा देर से तथा कम होती है।

Future Point

Future Point

(iii) पौष मास में मूला नक्षत्र से भरणी नक्षत्र तक बादल रहे तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक के 11 नक्षत्रों में क्रमानुसार वर्षा होती है।

पौष मास के नक्षत्र	मूला	पूर्वाषाढ़ा	उ.आ.	श्रावण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्र	उ.भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी
सूर्य के नक्षत्र	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

उदाहरण :

मान लें पौष मास (धन राशि) के सूर्य में उत्तराषाढ़ नक्षत्र के समय बादल हो तो आगे जब सूर्य पुष्य नक्षत्र पर रहेगा उन दिनों वर्षा अधिक होगी।

इसी प्रकार चैत्र मास (अधिकतर कृष्ण मास) में मीन राशि के सूर्य के मूला नक्षत्र में होने से भरणी नक्षत्र तक आकाश का निर्मल रहना श्रेष्ठ है। यदि बादल या वर्षा हो तो आगे उसी चक्र के अनुसार अनावृष्टि होती है।

3. ग्रहों के योग द्वारा वर्षादि का जानना :

1. बुध और शुक्र का एक ही राशि पर क्रूर ग्रहों के साथ सम्बन्ध हो तो वर्षा नहीं होती है।

2. बुध और शुक्र का एक राशि पर क्रूर ग्रहों से सम्बन्ध हो और यदि गुरु द्वारा दृष्टित हों तो वर्षा बहुत हो।

3. बुध और गुरु एक ही राशि पर हों और शुक्र द्वारा दृष्टित हों और कोई क्रूर ग्रह न देखता हो तो उत्तम वर्षा होती है।

4. गुरु तथा शुक्र एक राशि पर हों और बुध तथा कुरु ग्रहों की दृष्टि हो तो अति वर्षा होती है।

5. बुध, गुरु तथा शुक्र तीनों ग्रह एक राशि पर हों तथा कोई कुरु ग्रह न देखता हो तो उत्तम वर्षा होती है।

6. मंगल, शुक्र तथा शनि एक ही राशि पर हों और गुरु द्वारा दृष्टित हों तो उत्तम वर्षा होती है।

7. मंगल या शुक्र का चन्द्रमा के साथ सम्बन्ध बनना अति वर्षा लाता है।

8. सौम्य ग्रह आगे हो तथा क्रूर ग्रह पीछे तो भी अधिक वर्षा होती है।

9. सूर्य तथा गुरु के एक ही राशि पर होने से वर्षा तब तक होती रहती है जब तक गुरु अस्त न हो।

10. बुध तथा गुरु का भी एक राशि में सम्बन्ध वर्षा लाता है।

11. बुध तथा शुक्र एक ही राशि में हों और शुक्र ग्रह वक्री होकर बुध का साथ छोड़ दे तो 5 या 7 दिन लगातार बर्षा होती है।

12. कर्क राशि का सूर्य गुरु द्वारा दृष्टित हो तो वर्षा होती है।

13. जब कोई ग्रह उदय या अस्त होता है तथा उस पर गुरु की दृष्टि होती है तो वर्षा होती है।

14. शुक्र तथा शनि का एक राशि में सम्बन्ध बनना कम वर्षा लाता है।

15. क्रूर ग्रहों का वक्री गति से मार्गी गति में आना वर्षा के लिये शुभ तथा गुरु का वक्री गति में आना वर्षा के लिये शुभ रहता है।

16. क्रूर ग्रह जब शीघ्रगामी (अतिचारी) हों तो कम वर्षा लाते हैं। सौम्य ग्रह जब वक्री हों तो वर्षा लाते हैं।

17. सिंह, कन्या तथा तुला राशि का गुरु हो तथा गुरु से एकादश भाव में दो या दो से अधिक ग्रहों का योग हो तो बहुत वर्षा होती है।

18. शुक्र से सातवें मंगल और शनि से सातवें गुरू हो तो प्रलयकारी वर्षा होती है।

19. क्रूर ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि) तथा सौम्य ग्रहों (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) के एक–दूसरे से सातवें–सातवें आ जाने से प्रलयकारी वर्षा होती है।

20. शुक्र ग्रह के अस्त के समय, गुरु के उदय होने के समय तथा मंगल व शनि के शीघ्रगामी होने के समय वर्षा होती है।

शीघ्र वर्षा होने का लक्षण :

यदि सायंकाल के समय पूर्व दिशा में आकाश में बादलों की घटा छायी और उनमें कोई बादल पर्वत जैसा, कोई हाथी जैसा, कोई, सफेद हाथी आदि हो तो पांच रातों में शीघ्र वर्षा होती है।

सायंकाल में उत्तर दिशा में ऐसे बादल दिखाई दें तो पर्याप्त मात्रा में तीन दिन वर्षा होती है और सायंकाल में पश्चिम में उपरोक्त प्रकार के बादल दिखाई दें तो शीघ्र वर्षा होती है। दक्षिण में यदि कोई कोटी बांध कर बादल हो तो तीन रात में कुछ वर्षा होती है।

अग्नि कोण में बादल हो तो गर्मी अधिक और वर्षा कम होती है।

नैर्ऋत्य कोण में बादल हो तो संताप और रोगकारी वर्षा होती है।

वायव्य कोण में ऊंचे बादल हों तो शीघ्र वर्षा होती है।

ईशान कोण में बादल हो तो लगातार वर्षा होती रहती है।

दक्षिण की प्रबल वायु चले और पश्चिम की वायु भी हो तो शीघ्र वर्षा होती है। पूर्व दिशा की वायु चले तो शीघ्र वर्षा का योग बनता है।

आर्द्रा आदि वर्षा काल के नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश के समय यदि कुम्भ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला में जल लग्न हो तो वर्षा काल में वर्षा का योग बनता है।

4. प्रश्नशास्त्र द्वारा वर्षा का फल :

जब कोई स्वस्थचित्त व्यक्ति आकर दैवज्ञ के पास वर्षा सम्बन्धी प्रश्न करे तो तात्कालिक लग्न लगाकर विचार किया जाता है।

1. उस समय यदि प्रश्न लग्न से दूसरे व तीसरे स्थान में जल राशि हो और वहां जल ग्रह स्थित हो तो शीघ्र वर्षा होती है।

2. बुध व शुक्र का एक राशि में या गुरु व शुक्र का एक राशि में या बुध और गुरु का एक राशि में योग

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

हो तो निःसंदेह शीघ्र वर्षा होती है।

3. प्रश्न लग्न के समय चौथे भाव में शनि या राहु हो तो वर्षा नहीं होती, दुर्भिक्ष होता है।

4. यदि केन्द्रों में (1, 4, 7, 10) शुभ ग्रह हो तो सुभिक्ष एवं वर्षा होती है।

5. सूर्य के एक भाव आगे और एक भाव पीछे ग्रह हों तो वर्षा होती है।

6. बुध और शुक्र के मध्य सूर्य हो तो शीध्र बहुत वर्षा होती है।

7. सूर्य के आगे मंगल हो तो वर्षा में अवरोध होता है।

प्रश्नमाला :

1. सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र से आप क्या समझते हैं ? विस्तार पूर्वक लिखें।
2. सर्पाकार त्रिनाड़ी चक्र का वर्षा आदि के फल कथन में क्या महत्व है ? स्पष्ट करें।
3. सप्त नाड़ी चक्रम् क्या होता है ? व्याख्या करें।
4. सप्त नाड़ी चक्रम का मौसम विज्ञान में क्या योगदान होता है ? वर्णन करो।
5. वर्षा में अवरोधक चक्र की व्याख्या करो।
6. सभी पुरुष ग्रह एक नाड़ी में आ जाए तो का फल होगा ?
7. कौन–2 से ग्रहों का योग होने पर वर्षा नहीं होती ? संक्षेप में लिखें।
8. कौन–2 से ग्रहों का योग होने पर अतिवृष्टि होती है ? संक्षेप में लिखें।

Future Point

Future Point

खण्ड—4

अर्घ—विचार

Future Point

अध्याय–7

सस्य जातक कुण्डलियाँ

1. शरद सस्य जातक की कुण्डली बनाने की विधि :

महर्षि वादरायण ने कृषक वर्ग एवं व्यापारी वर्ग के हितार्थ भारतीय ज्योतिष के अर्ध काण्ड में सस्यजातक की रचना करके फसलों की पैदावार, शुभाशुभ तथा वस्तुओं के मूल्यों में तेजी–मन्दी आदि पर विचार किया हैं। जिस प्रकार हम जातक की जन्म कुण्डली बना कर उसके भावी जीवन के शुभाशुभ का विचार करते हैं उसी प्रकार इसमें ग्रीष्म सस्य तथा शरतसस्य की कुण्डली बनाकर शुभाशुभ योगों पर विचार किया जाता है। यहां पहले हम ग्रीष्म सस्य तथा फिर शारदीय सस्य जातक की कुण्डली कैसे बनायें इस पर विचार करेंगे।

2. ग्रीष्म सस्य जातक की कुण्डली बनाने की विधि :

सूर्य जब भचक्र पर भम्रण करता हुआ वृश्चिक राशि में अर्थात् वृश्चिक संक्रान्ति में प्रवेश करता है उस समय पर जो लग्न कुण्डली बनती है उसे ग्रीष्म सस्य के नाम से जाना जाता है।

उदाहरणः मान लें कि हमें सन् 2002 ईस्वी की ग्रीष्म कुण्डली बनानी है। इस हेतु हम पंचाग देखें तो पायेंगे कि 16 नवम्बर सन् 2002 को सूर्य संध्या 4 बजकर 05 मिनट पर वृश्चिक राशि में प्रवेश कर रहा है। अतः इस समय बनायी जाने वाली कुण्डली ग्रीष्म सस्य (फसल) जातक कुण्डली होगी।

ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली

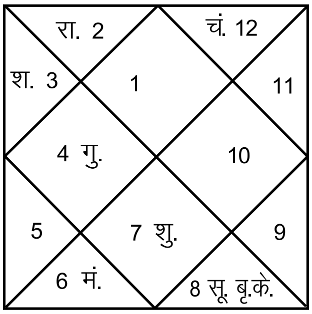

3. शरद सस्य जातक एवं ग्रीष्म सस्य जातक की कुण्डली में योग फलः :

सूर्य जब भचक्र में भम्रण करता हुआ वृष राशि में (वृष संक्रान्ति के समय) में प्रवेश करता है उस समय (इष्ट) पर जो कुण्डली बनती है उसे शरत्सस्य जातक कुण्डली कहते हैं।

उदाहरण : मान लें हमें ईस्वी सन् 2002 की शरत्सस्य जातक कुण्डली बनानी है। पंचाग के अनुसार सूर्य वृष राशि में 15 मई 2002 को प्रातः 2 बजकर 40 मिनट पर प्रवेश कर रहा है। अतः इस समय की जो कुण्डली बनेगी वह शरत्सस्य (शारदीय) जातक कुण्डली होगी।

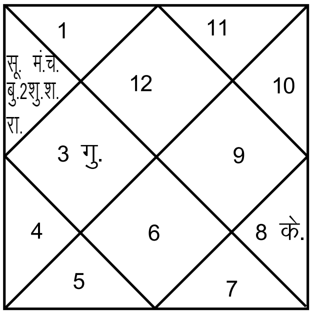

शरत्सस्य जातक कुण्डली

विशेष : उपरोक्त दोनों कुण्डलियों में लग्न–कुण्डली के साथ–साथ सस्य जातक में सूर्य जिस राशि पर हो उसे ही लग्न मानकर शेष सभी ग्रहों को उनकी राशियों के अनुसार संस्थापित करके फसलों के शुभाशुभ योगों का विचार किया जाता है।

Future Point

(i) सूर्य के वृश्चिक राशि में होने पर सूर्य से केन्द्रीय (1–4–7–1) भावों में शुभ ग्रह हो (या) सूर्य शुभ बलवान ग्रहों से दृष्टित हो तो ग्रीष्म धान्य में वृद्धि होती है। अर्थात् ग्रीष्म कालीन फसलों की पैदावार अधिक (पर्याप्त मात्रा में) होती है और ग्रीष्म सस्य (गेहूँ, जौ, चना, दालवान) सस्ते होते है।

सूर्य वृष राशि में और सूर्य से केन्द्रीय (1–4–7–10) भावों में शुभ ग्रह हो (या) वृष का सूर्य शुभ व बलवान ग्रहों से दृष्टित हो तो शारदीय धान्य में वृद्धि होती है। अर्थात् शारदीय फसलों की पैदावार पर्याप्त मात्रा में होती है। शारदीय सस्य मूंग, मोठ, बाजरा आदि सस्ते होते हैं।

(ii) सूर्य वृश्चिक राशि का, गुरु कुम्भ राशि का तथा चन्द्रमा सिंह राशि का हो (या) गुरु सिंह राशि का हो तथा चन्द्रमा कुम्भ राशि का तो ग्रीष्म धान्य की पैदावार अच्छी होती है तथा वे सस्ते होते हैं।

सूर्य वृष राशि का, गुरु कुम्भ राशि का तथा चन्द्रमा सिंह राशि का हो या गुरु सिंह राशि का तथा चन्द्रमा कुम्भ राशि का हो तो शारदीय फसलें अच्छी तथा सस्ती होती हैं।

(iii) सूर्य वृश्चिक राशि का हो तथा सूर्य से दूसरे (या) बारहवें भाव में बुध या शुक्र या दोनों ही हों (अर्थात् सूर्य से दोनों आगे या पीछे हों) तो ग्रीष्म धान्य की पैदावार पर्याप्त मात्रा में होती है। यदि उपरोक्त योग के साथ–साथ सूर्य पर गुरु की भी दृष्टि हो तो ग्रीष्म धान्य की पैदावर अत्यधिक मात्रा में होती है।

सूर्य वृष राशि का हो तथा सूर्य से द्वितीय (या) द्वादश भाव में बुध (या) शुक्र या दोनों ही हों (अर्थात सूर्य से दोनों आगे या पीछे हों) तो शारदीय धान्य की पैदावार पर्याप्त मात्रा में होती है। यदि सूर्य पर गुरु की भी दृष्टि हो तो शरद फसलों की पैदावार अत्यधिक मात्रा में होती है।

(iv) वृश्चिक राशि के सूर्य से सप्तम स्थान पर गुरु तथा चन्द्रमा हों (अर्थात् गुरु तथा चन्द्रमा वृष राशि के हों) और शेष शुभ ग्रहों बुध तथा शुक्र के मध्य में आ जायें (अर्थात् सूर्य के आगे–पीछे बुध या शुक्र हो) तो ग्रीष्म कालीन धान्य और अन्य फसलों की पैदावार अधिक होती है।

वृष राशि के सूर्य से सप्तम स्थान पर गुरु तथा चन्द्रमा हों (अर्थात् गुरु तथा चन्द्रमा वृष राशि के हों) और शेष शुभ ग्रहों बुध तथा शुक्र के मध्य में आ जाये तो अर्थात सूर्य के आगे–पीछे बुध या शुक्र हो) शरद् धान्य की पैदावार अधिक होती है।

(v) वृश्चिक राशि के सूर्य से ग्यारहवें भाव में शुक्र या चन्द्रमा हो तथा दूसरे भाव में बुध हो तो ग्रीष्मकालीन फसलों की पैदावार उत्तम होती है। यदि इस योग के साथ गुरु भी दसवें भाव में हो तो फसलों की उपज और भी उत्तम होती है तथा चौपायों से दूध भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है।

वृष राशि के सूर्य से ग्यारहवें भाव में शुक्र या चन्द्रमा तथा दूसरे भाव में बुध हो तो शरदकालीन फसलों की पैदावार उत्तम होती है। यदि इस योग के साथ गुरु भी दसवें स्थान में हो तो फसलें और भी उत्तम होती हैं तथा चौपायों से दूध भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है।

(vi) वृश्चिक राशि का सूर्य हो, कुम्भ का गुरु, वृष का चन्द्रमा और मकर के शनि व मंगल हों तो ग्रीष्म धान्य की पैदावार उत्तम होती है। किन्तु देश में शत्रुओं के कुचक्र रहते हैं तथा रोगों का भय भी रहता है।

वृष का सूर्य हो, कुम्भ का गुरु, वृष राशि का चन्द्रमा और मकर राशि के शनि व मंगल हों तो शारदीय

Future Point

धान्य की पैदावार उत्तम होती है। किन्तु रोग भय रहता है।

(vii) वृश्चिक राशि का सूर्य पाप ग्रहों मंगल और शनि के मध्य में आ जाये तो ग्रीष्म की उपज कम होती है या नष्ट हो जाती है। ग्रीष्म सस्यों में तेजी रहती है। सूर्य से सप्तम स्थान पर अर्थात् वृष राशि पर पाप ग्रह (मंगल और शनि) हों तो भी ग्रीष्म फसलें खराब या नष्ट हो जाती हैं। इनमें महंगाई (तेजी) भी रहती है।
वृष राशि का सूर्य यदि पाप ग्रहों मंगल और शनि के मध्य में आ जाये तो शारदीय फसलों की उपज कम होती है या नष्ट होती है। शारदीय सस्यों में महंगाई (तेजी) रहती है।
सूर्य से सप्तम स्थान पर पाप ग्रह (मंगल और शनि) हों तो भी शारदीय फसलें खराब या नष्ट हो जाती हैं। इनमें तेजी भी रहती है।

(viii) वृश्चिक राशि के सूर्य से दूसरे स्थान में क्रूर ग्रह हो तथा सूर्य को कोई शुभ ग्रह देखता हो तो ग्रीष्म कालीन फसल अंकुर निकलते ही नष्ट हो जाती है। अतः फिर बीज बोने पर धान्य की उत्पत्ति होती है।

वृष राशि का सूर्य हो, दूसरे स्थान में क्रूर ग्रह हो तथा सूर्य को कोई शुभ ग्रह देखता हो तो शरद कालीन फसल अंकुर निकलते ही नष्ट हो जाती है। दूसरी बार बोने पर धान्य की उत्पत्ति होती है।

(ix)

वृश्चिक राशि का सूर्य हो और इससे सातवें स्थान में अर्थात् वृष राशि में पाप ग्रह मंगल या शनि में से कोई एक हो और दूसरा पाप ग्रह पहले, चौथे और दसवें स्थान में हो तो ग्रीष्म कालीन फसलें नष्ट होती हैं। यदि इन पाप ग्रहों पर किसी शुभ ग्रह की भी दृष्टि हो तो फसलें हर जगह नहीं बल्कि कहीं–कहीं नष्ट होती हैं।

वृष राशि का सूर्य हो और इससे 7वें स्थान में अर्थात् वृश्चिक राशि में पाप ग्रह मंगल या शनि में से कोई एक हो और दूसरा पाप ग्रह पहले, चौथे या दसवें स्थान में हो तो शारदीय फसलें नष्ट होती हैं। यदि इन पाप ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो फसलें हर जगह नहीं बल्कि कहीं–कहीं नष्ट होती हैं।

(x) वृश्चिक राशि के सूर्य से पाप ग्रह शनि या मंगल में से एक सप्तम स्थान में और दूसरा छठे स्थान में हो तो ग्रीष्म कालीन फसलों की उत्पत्ति अधिक होती है और इनके मूल्यों में मन्दा हो जाता है।

वृष राशि के सूर्य से पाप ग्रह शनि या मंगल में से एक सप्तम स्थान में और दूसरा छठे स्थान में हो तो शारदीय फसलों की अधिक उत्पत्ति होने से मूल्यों में मन्दी आती है।
उपरोक्त योगों में भी धान्य की अधिक उत्पत्ति होने से उसके मूल्यों में कमी आयेगी। जब धान्य की उत्पत्ति कम होती है तो मूल्य तेज होते हैं। इन योगों को ग्रीष्म सस्य और शरत्सस्य लग्न कुण्डलियों से भी देखना चाहिए।
इसी प्रकार सूर्य के शेष राशियों में प्रवेश के समय (संक्रान्ति के समय) भी कुण्डली बना कर देखना उपयुक्त है।

प्रश्नमाला :

1. ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली कैसे बनती है ? उदाहरण देकर समझायें।
2. सम्वत् 2060 की शरद सस्य जातक कुण्डली बना कर फल की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

अध्याय–8
ग्रहों का स्वामित्व

1. ग्रहों के कारक द्रव्य व वस्तुएँ :

सूर्य की द्रव्य वस्तुएं : सोना, तांबा, धान्य, गेहूँ, सरसों, सुगन्धित द्रव्य, लालवर्ण की वस्तुएं, रेशम और चमड़े की वस्तुएं। इनका कारक सूर्य ग्रह है।

चन्द्रमा की द्रव्य वस्तुएं : चाँदी, चावल, गेहूँ, जौ, जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थ, नमक, रसदार पदार्थ, ईख, मोती, शंख, मधु इत्यादि। इन का कारक चन्द्रमा है।

मंगल की द्रव्य वस्तुएं : तांबा, गुड़, लाल रंग की वस्तुएं तथा पदार्थ, मूंगा, मनसिल, लाल रंग के फूल, फल, शस्त्र इत्यादि का कारक मंगल ग्रह है।

बुध की द्रव्य वस्तुएं : हरे रंग की वस्तुएं, सब्जी, हरे वस्त्र, मूंग, अरहर, मटर, वनस्पति, मूंगफली, सुगन्धित द्रव्य तथा व्यापार के उतार–चढ़ाव का स्वामी (कारक) बुध है।

गुरु की द्रव्य वस्तुएं : हल्दी, सोना, पीले रंग के पदार्थ तथा लताओं से उत्पन्न होने वाली वस्तुएं, पुखराज, सूती वस्त्र, सेंधा नमक आदि का स्वामी गुरु है।

शुक्र की द्रव्य वस्तुएं : चांदी, रेशमी वस्त्र, घृत व होजरी का सामान, चीनी, सफेद वस्तुएं तथा सुख–विलास–कामना के पदार्थों का स्वामी शुक्र है।

शनि की द्रव्य वस्तुएं : तीक्ष्ण वस्तुएं, बड़े–बड़े कारखानें, लोहे के उद्योग, चमड़े की वस्तुएं, नीले और काले रंगों के वस्त्र, तिल, उड़द, चना, मटर, स्टील उद्योग, मशीनरी, केमिकल, विदेशी पूंजी आदि का स्वामी शनि है।

राहु व केतु की द्रव्य वस्तुएं : गोमेद, बकरा, गधा, ऊंट इत्यादि पशुओं, प्याज–लहसुन, दुर्गन्धदायक वस्तुओं के स्वामी राहु व केतु है।

उपरोक्त ग्रहों के स्वाभाविक कारक जो–जो वस्तुएं हैं उन पर उस ग्रह के उच्चनीच वक्री, मार्गी, उदय, अस्त, सौम्य व क्रूर ग्रह की दृष्टि तथा बलाबल के अनुसार उत्पादन में तेजी मन्दी में प्रभाव पड़ता है।

2. राशियों के स्वाभाविक कारक द्रव्य व वस्तुएँ :

1. मेष : लाल गेहूँ, जौ, लाल रंग, लाल चन्दन, कपड़ा, रेशम, ऊनी वस्त्र, पशमीना, हल्दी, सब प्रकार की गोद, सोना, चाँदी औषधि मसर आदि।

2. वृष : घी, दूध, सूत एवं सूती वस्त्र, श्वेत वस्तुएं, खांड, नमक, सौंफ।

3. मिथुन : ज्वार, मक्का, विनोला, जमीकन्द, वारदाना, जूट, कपास, चावल, बाजरा आदि।

Future Point

4. कर्क : चांदी, करियाने की वस्तुएं, केला, घास, दूर्वा, दालचीनी, प्याज, तेजफल संतरा, नीबू, चाय, गर्म मसाले।

5. सिंह : चना, भूसी वाले अनाज, गुड़, सब प्रकार के रसदार पदार्थ, चमड़ा इत्यादि।

6. कन्या : ज्वार, अरहर, मटर, मूंग, मोठ, गेहूँ, हरे वस्त्र, खाण्ड, शक्कर, अलसी, राजमाह।

7. तुला : उड़द, गेहूँ, जौं, नारियल, अरहर, सरसों, मटर।

8. वृश्चिक : गुड़, खांड, मिठाईयां, सुगन्धित द्रव्य, तिल, काली वस्तुएँ।

9. धनु : रसदार पदार्थ, आलू, क्षार वाले पदार्थ, सफेद अनाज, मूल, समुद्री पदार्थ नमक।

10. मकर : सोना, लोहा, कोयला, स्टील, शीशा, कांसा, वृक्ष।

11. कुम्भ : जल से उत्पन्न पदार्थ, उड़द, तिल, तेल, पंसारी का समान या बिजली का समान, आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक का समान।

12. मीन : घी, तेल, मछली, युद्ध–सामग्री।

संसार में असंख्य पदार्थ हैं। किसी पदार्थ के आदि अक्षर पर उसकी राशि का निर्धारण किया जाता है। आदि अक्षर जिस राशि में आता है वही उस द्रव्य या पदार्थ की राशि समझी जाएगी।

3. नक्षत्राधीन द्रव्य व वस्तुएँ :

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर किसी न किसी नक्षत्र का स्वामित्व है। अलग–अलग नक्षत्रों के स्वाभित्व में आने वाली वस्तुओं का वर्णन इस प्रकार हैं :

अश्विनी नक्षत्र : चावल, चूर्ण, सभी प्रकार के धान्य और वस्त्र, घी, ऊंट, खच्चर इत्यादि पशु।

भरणी : तुषधान्या, युगंधरी (ज्वार या बाजरा), मिर्च, सभी औषधियाँ।

कृत्तिका : चावल, जौ, धातुए,ं तिल, माणिक, हीरा।

रोहिणी : सभी धान्य, सर्वरस, सभी धातुएं, ऊनी वस्त्र, पुराने कम्बल।

मृगशिरा : घोड़े, भैंस, गाय आदि पशु, लाख, कोदा, धान्य, गर्दभ, तुअर, रत्न।

आर्द्रा : नमक, तेल, सर्वक्षार, सर्वरस, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुएं।

पुनर्वसु : सोना, चांदी, कपास, युगंधरी (ज्वार–बाजरा) कुशुंभ, काला रेशमी वस्त्र।

पुष्य : सोना, चांदी, घी, चावल, सेंधा नमक, हींग, तेल, सरसों, सब्जी।

आश्लेषा : मजीठ, गुड़, खांड, गेहूँ, सौंठ, मिर्च, कोदा, धान्य, चावल।

मघा : तिल, तेल, घी, प्रवाल, चना, अलसी, गुड़।

पूर्वाफाल्गुनी : ऊन, कम्बल, युगन्धरी, तेल, चांदी की वस्तुएं।

उत्तराफाल्गुनी : उड़द, मूंग, चावल, कोदा, सेंधा नमक, लहसुन, सब्जी।

हस्त : चन्दन, कपूर, देवदारु, अगर, लाल चन्दन, कन्द।

चित्रा : सोना, रत्न, मूंग, उड़द, चावल, गुड़, घोड़ा, वाहन।

स्वाति : सुपारी, मिर्च, सरसों का तेल, राई, हींग, खंजूर आदि।

विशाखा : जौ, गेहूँ, चावल, मूंग, मसूर, मोठ, धान्य आदि।

अनुराधा : तुअर, बिना दालों के सब अनाज, चावल, मोठ, चना।

ज्येष्ठा : गुगुल, गुड़, लाख, कपूर, पारा, हींग, हींगुलु, कलसी।

मूल : सफेद वस्तुएं, रस, धान्य, सेंधा नमक, लवण, कपास।

पूर्वाषाढ़ा : सुरमा, तुष, धान्या, घी, कन्दमूल, जूर्ण, चावल।

उत्तराषाढ़ा : घोड़े, बैल, हाथी, लोहे की वस्तुएं और सभी प्रकार की क्षार वस्तुएं, घी।

अभिजित : दाख, खजूर, सुपारी, इलायची, मूंग, जायफल, घोड़ा।

श्रवण : अखरोट, चिरौंजी, पिप्पली, सुपारी, तुष, धान्य।

धनिष्ठा : सोना, चांदी, सभी प्रकार की करेंसी, माणिक, मोती, रत्न आदि।

शतभिषा : तेल, कोदा, शराब आदि, आंवला, अर्क वृक्षों के मूल, छालपत्र।

पूर्वाभाद्रपद : प्रीयंगु मूल, जावित्री, सभी धान्य, सर्व औषधि, देवदारु।

उत्तराभाद्रपद : गुड़, खांड, शक्कर, खल, चावल, घी, माणिक, मोती।

रेवती : करियाने का सब समान, माणिक, मोती, नारियल, सुपारी।

प्रश्नमाला :

1. सूर्यादि ग्रहों की कारक द्रव्य वस्तुओं की व्याख्या करो।
2. द्वादश राशियों के अधीन द्रव्य व वस्तुओं की व्याख्या कीजिए ?
3. केतु के तीनों नक्षत्रों के अधीन कौन–कौन सी वस्तुएँ आती है ?

Future Point

Future Point

खण्ड—5

तेजी—मन्दी विचार

Future Point

अध्याय–9

सर्वतोभद्र चक्र

1. सर्वतोभद्र चक्र से वेध देखने की विधि :

फलित ज्योतिष शास्त्र में वस्तुओं की तेजी–मन्दी और ग्राम, नगर, प्रान्त, देश, प्रदेश आदि की शुभ–अशुभ घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिये नरपति जयचर्या नामक ग्रन्थ में महर्षि नरपति ने सर्वतोभद्र चक्र का उल्लेख किया है। उन्होंने इस चक्र को ग्रहों की नक्षत्रों पर स्थिति और एक से दूसरे नक्षत्र पर संचरण तथा अक्षरों या राशियों के वेध द्वारा फल जानने का उत्तम माध्यम बताया है।

ईशान — पूर्व — आग्नेय

उत्तर — दक्षिण

अ	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	आ
भरणी	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	मघा
अश्विनी	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	लॄ	म	पू.फा.
रेवती	च	मेष	ओ		औ	सिंह	ट	उ.फा.
उ.भाद्र	द	मीन				कन्या	प	हस्त
पूर्वभाद्र	स	कुम्भ	अः		अं	तुला	र	चित्रा
शतभिषा	ग	ऐ	मकर	धनु	वृश्चिक	ए	त	स्वाती
धनिष्ठा	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	विशाखा
ई	श्रवण	अभिजित	उ.आ	पू.आ.	मूल	ज्येष्ठा	अनुराधा	इ

वायव्य — पश्चिम — नैऋत्य

Future Point

2. नक्षत्रों पर ग्रह स्थिति से वेध जानना :

किसी भी नक्षत्र पर बैठा हुआ ग्रह तीन ओर से वेध करता है।

1. दक्षिण दृष्टि से दायीं तरफ।
2. वाम दृष्टि से बायीं तरफ।
3. सम्मुख दृष्टि से सामने की तरफ।

ग्रहों की तीन गतियां होती हैं :

1. वक्री गति 2. शीघ्रगामी (अतिचारी) गति और 3. मध्याचारी (सामान्य) गति

1. नक्षत्र पर स्थित ग्रह जब वक्री गति का होता है तो वह दाहिनी दृष्टि से दाहिनी ओर के नक्षत्र, राशि और अक्षर का वेध करता है।

2. ग्रह जब शीघ्रगामी गति का होता है तो वह वाम दृष्टि से बायीं तरफ को नक्षत्र, राशि और अक्षर वेध करता है।

3. जब ग्रह मध्य गति का होता है तो वह अपने से सामने की ओर केवल नक्षत्र वेध करता है।

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन पांचों ग्रहों की गति समय–समय पर बदलती रहती है। इसलिए इन पांचों की दृष्टि भी बदलती है।

सूर्य और चन्द्रमा सदा शीघ्र गति के ही रहते हैं और राहु और केतु सदा वक्री गति, इसलिए गति का एक ही रूप होने से इन चारों की दृष्टि हमेशा तीनों तरफ (बायीं, दायीं और सामने की ओर) होती है।

विद्यार्थियों के लिये यह जानना आवश्यक है कि किसी नक्षत्र पर स्थित कोई ग्रह किन–किन नक्षत्रों, अक्षरों व राशियों को वेधता है। अलग–अलग नक्षत्रों पर स्थित ग्रह के वेध से सम्बद्ध जानकारी इस प्रकार है :

1. अश्विनी नक्षत्र पर स्थित ग्रह :

(i) दक्षिण दृष्टि से ज्येष्ठा नक्षत्र, धनु और मीन राशियों तथा च, अः और य अक्षरों को वेधता है।

(ii) वाम दृष्टि से रोहिणी नक्षत्र और उ अक्षर को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र को।

2. भरणी नक्षत्र पर स्थित ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से अनुराधा नक्षत्र, मेष और वृश्चिक राशियों तथा ल और न अक्षरों को वेधता है।

(ii) वाम दृष्टि से कृत्तिका नक्षत्र को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से मघा नक्षत्र को वेधता है।

3. कृत्तिका नक्षत्र पर स्थित ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से भरणी नक्षत्र को वेधता है।

(ii) वाम दृष्टि से विशाखा नक्षत्र, अ और त अक्षर तथा वृष और तुला राशियों को।

Future Point

(iii) सम्मुख दृष्टि से श्रवण नक्षत्र को वेधता है।

4. रोहिणी नक्षत्र पर स्थित ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से अश्विनी नक्षत्र और उ अक्षर को वेधता है।

(ii) वाम दृष्टि से स्वाति नक्षत्र, व, र अक्षरों और मिथुन व कन्या राशियों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से अभिजित नक्षत्र को।

5. मृगशिरा नक्षत्र पर स्थित ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से रेवती नक्षत्र और अ और ल अक्षरों को।

(ii) वाम दृष्टि से चित्रा नक्षत्र, क, प अक्षरों और कर्क तथा सिंह राशियों को।

(iii) सम्मुख से उतराषाढ़ा नक्षत्र को वेधता है।

6. आर्द्रा नक्षत्र पर ग्रह स्थित :

(i) दाहिनी दृष्टि से उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और ब, लृ तथा च अक्षर को ।

(ii) वाम दृष्टि से हस्त नक्षत्र तथा ह, लृ और ट अक्षरों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र को वेधता है।

7. पुनर्वसु नक्षत्र पर ग्रह स्थित :

(i) दाहिनी दृष्टि से पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, क और द अक्षरों तथा मेष व वृष राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र और ड़ तथा म अक्षरों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से मूला नक्षत्र को बेधता है।

8. पुष्य नक्षत्र पर ग्रह स्थित :

(i) शतभिषा नक्षत्र, ह, स और ओ अक्षरों तथा मिथुन व मीन राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से पूर्वाफाल्गुनी और ऊ अक्षर को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से ज्येष्ठा नक्षत्र को वेधता है।

9. आश्लेषा नक्षत्र पर ग्रह स्थित :

(i) दाहिनी दृष्टि से धनिष्ठा नक्षत्र, व, ड़ और ग अक्षरों तथा कर्क और कुंभ राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से मघा नक्षत्र को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से अनुराधा नक्षत्र को वेधता है।

10. मघा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से आश्लेषा नक्षत्र को।

(ii) वाम दृष्टि से श्रवण नक्षत्र, म तथा ख अक्षरों और सिंह व मकर राशियों को।

Future Point

(iii) सम्मुख दृष्टि से भरणी नक्षत्र को वेधता है।

11. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से पुष्य नक्षत्र और ऊ अक्षर को वेधता है।

(ii) वाम दृष्टि से अभिजित नक्षत्र, ट, अं और ज अक्षरों तथा कन्या व धनु राशियों को वेधता है।

(iii) सम्मुख दृष्टि से अश्विनी नक्षत्र को वेधता है।

12. उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से पुनर्वसु नक्षत्र तथा म और ड़ अक्षरों को।

(ii) वाम दृष्टि से उत्तराषाढ़ा नक्षत्र और प, भ, अक्षर तथा तुला, वृश्चिक को राशि

(iii) सम्मुख दृष्टि से रेवती नक्षत्र को वेधता है।

13. हस्त नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से आर्द्रा नक्षत्र और ट, लृ तथा ह अक्षरों को।

(ii) वाम दृष्टि से पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र और ज, र तथा ए अक्षरों को

(iii) सम्मुख दृष्टि से उत्तराभाद्रपद नक्षत्र को वेधता है।

14. चित्रा नक्षत्र पर ग्रह स्थित :

(i) दाहिनी दृष्टि से मृगशिरा नक्षत्र और क, प अक्षरों तथा कर्क और सिंह राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से मूला नक्षत्र और त और न अक्षर को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र को वेधता है।

15. स्वाति नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से रोहिणी नक्षत्र, र, व, ओ अक्षरों तथा मिथुन और कन्या राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से ज्येष्ठा नक्षत्र और ऋ अक्षर को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से शतभिषा नक्षत्र को वेधता है।

16. विशाखा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से कृत्तिका नक्षत्र, अ, त, अक्षरों तथा वृष व तुला राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से अनुराधा नक्षत्र को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से धनिष्ठा नक्षत्र को वेधता है।

17. अनुराधा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से विशाखा नक्षत्र को।

(ii) वाम दृष्टि से भरणी नक्षत्र, न और ल अक्षर और मेष व वृश्चिक राशियों को।

Future Point

(iii) सम्मुख दृष्टि से आश्लेषा नक्षत्र को वेधता है।

18. ज्येष्ठा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से स्वाति नक्षत्र और ऋ अक्षर को।

(ii) वाम दृष्टि से अश्विनी नक्षत्र, च, ज अः अक्षरों तथा धनु और मीन राशियों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से पुष्य नक्षत्र को वेधता है।

19. मूला नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से चित्रा नक्षत्र और न तथा त अक्षरों को।

(ii) वाम दृष्टि से रेवती नक्षत्र, द और भ अक्षरों तथा मकर व कुंभ राशियों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से पुनर्वसु नक्षत्र को वेधता है।

20. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से हस्त नक्षत्र और य, र तथा ए अक्षरों को।

(ii) वाम दृष्टि से उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और स, ज तथा ऐ अक्षरों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से आर्द्रा नक्षत्र को वेधता है।

21. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, प और भ अक्षरों तथा वृश्चिक राशि को।

(ii) वाम दृष्टि से उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और ख तथा ग अक्षरों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से मृगशिरा नक्षत्र को वेधता है

22. अभिजित नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, ट, ज, अं अक्षरों और कन्या व धनु राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से शतभिषा नक्षत्र और ऋ अक्षर को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से रोहिणी नक्षत्र को वेधता है।

23. श्रवण नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से मघा नक्षत्र, म और ख अक्षरों और सिंह व मकर राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से धनिष्ठा नक्षत्र को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से कृत्तिका नक्षत्र को वेधता है।

24. धनिष्ठा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से श्रवण नक्षत्र को वेधता है।

(ii) वाम दृष्टि से आश्लेषा नक्षत्र, ग, ड़ अक्षरों और कर्क व कुम्भ राशियों को।

Future Point

(iii) सम्मुख दृष्टि से विशाखा नक्षत्र को वेधता है।

25. शतभिषा नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से अभिजित नक्षत्र ऋ अक्षर को

(ii) वाम दृष्टि से पुष्य नक्षत्र को ह, स, ओ अक्षर; मिथुन व मीन राशि

(iii) सम्मुख दृष्टि से–स्वाति नक्षत्र को वेधता है

26. पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि–उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, को ग, ख अक्षर

(ii) वाम दृष्टि से पुनर्वसु नक्षत्र को; क, द अक्षर को; मेष व वृष राशि को

(iii) सम्मुख दृष्टि से चित्रा नक्षत्र को वेधता है।

27. उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से पूर्वाषाढ़ नक्षत्र और ज, स तथा ऐ अक्षरों को।

(ii) वाम दृष्टि से आर्द्रा नक्षत्र और व, च तथा लृ अक्षरों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से हस्त नक्षत्र को वेधता है।

28. रेवती नक्षत्र पर ग्रह :

(i) दाहिनी दृष्टि से मूला नक्षत्र, द, भ अक्षरों और मकर व कुम्भ राशियों को।

(ii) वाम दृष्टि से मृगशिरा नक्षत्र और अ तथा ल अक्षरों को।

(iii) सम्मुख दृष्टि से उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र को वेधता है।

3. अश्विनी आदि नक्षत्रों पर शुभ/अशुभ ग्रहों का फल :

क्रूर और अशुभ ग्रह — सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु

सौम्य और शुभ ग्रह—चन्द्रमा, बुध, गुरु और शुक्र

(i) बुध का अशुभ ग्रहों से संयोग अशुभ तथा शुभग्रहों से संयोग शुभ फल देता है। चन्द्रमा क्षीण हो तो अशुभ फल देता है।

सर्वतोभद्रा चक्र में शुभ ग्रहों के वेध करने से मन्दा तथा अशुभ ग्रहों के वेध करने से तेजी होती है यही फल देश एवम् राजकीय परिस्थितियों के अनुसार कम एवम् अधिक होता है।

(i) अश्विनी नक्षत्र पर क्रूर (अशुभ) ग्रहों का वेध– चावल, सभी धान्य, तृण, सभी प्रकार के वस्त्र, घी, खच्चर, ऊंट आदि महंगे होते हैं।

(ii) **शुभ ग्रहों का वेध** : उपरोक्त वस्तुएं सस्ती होती हैं।

(ii) **भरणी नक्षत्र पर अशुभ (क्रूर) ग्रहों का वेध** : गेहूँ, चावल, जौ, चना, ज्वार आदि धान्य, जीरा, काली मिर्च, सौंठ, पिप्पल आदि गर्म मसाले और किराने की सब वस्तुएं महंगी होती हैं।

Future Point

(iii) **शुभ ग्रहों का वेध** : उपरोक्त वस्तुएं सस्ती होती हैं।

कृतिका नक्षत्र पर अशुभ (क्रूर) ग्रहों का वेध : चावल, जौ, चना आदि अनाजों, तेलवान पदार्थ, माणिक, पन्ना, हीरा आदि रत्नों और सोना चांदी आदि धातुओं में तेजी आती है।

शुभ ग्रहों का वेध : उपरोक्त वस्तुओं में मन्दा होता है।

रोहिणी नक्षत्र पर क्रूर (अशुभ) ग्रहों का वेध : गेहूँ, चना, जौ, चावल आदि सभी धान्य, सोना, चांदी आदि सभी धातुएँ, सभी प्रकार के रस; कम्बल, पुराने ऊनी वस्त्र आदि तेज होते हैं।

शुभ ग्रहों का वेध : उपरोक्त वस्तुओं में मन्दा होता है।

मृगशिरा नक्षत्र पर क्रूर (अशुभ) ग्रहों का वेध : कोदा आदि अनाजों, तुअर दाल, तरल पदार्थों, गायों–भैंसों आदि पशुओं, लाख तथा माणिक आदि में तेजी आती है।

शुभ ग्रहों का वेध : उपरोक्त वस्तुओं में मन्दा होता है।

आर्द्रा नक्षत्र पर क्रूर (अशुभ) ग्रहों का वेध : तेल, नमक, सभी प्रकार की खारी वस्तुएं, सभी प्रकार के रसदार पदार्थ; चन्दन आदि महंगे होते हैं।

शुभ ग्रहों का वेध हो तो : ये वस्तुएं सस्ती होती हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : ज्वार, बाजरा, सूत, कपास, रुई, पाट वारदाना, कुशुम्भ, और रेशमी श्याम वस्त्र, सोना, चांदी आदि महंगे होते हैं।

शुभ ग्रहों का वेध : उपरोक्त वस्तुएं सस्ती होती हैं।

पुष्य नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सोना, चांदी, चावल, घी, साम्भर नमक, हींग, सज्जी, सरसों तेल आदि महंगे होते हैं।

शुभ ग्रहों का वेध : ये वस्तुएं सस्ती होती हैं।

आश्लेषा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : गेहूँ, कोदा, चावल, मसूर, सौंठ, मजीठ, मिर्च, गुड़ और खाण्ड तेज होते हैं।

शुभ ग्रहों का वेध : इनमें मन्दा होता है।

मघा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : तेल, तिल, घी, मूँग, चना, अलसी, गुड, कांगुनी, प्रवाल आदि तेज होते है।

शुभ ग्रहों का वेध : उपरोक्त वस्तुएं मन्दी होती हैं।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : वस्त्र, ऊन, कम्बल आदि, जुगन्धर (ज्वार बाजरा) तिल और चांदी की वस्तुएँ तेज होती हैं।

शुभ ग्रहों का वेध : यह वस्तुएं मन्दी होती हैं।

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : उड़द, मूंग आदि दालों, चावल, कोदा, सेंधा नमक, लहसुन और सब्जी में तेजी आती है।

Future Point

शुभ ग्रहों का वेध : उपरोक्त वस्तुएं मन्दी होती है।

हस्त नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : चन्दन, कपूर, देवदार, अगर, लाल चन्दन, कन्द आदि में तेजी होती है। शुभ ग्रहों का वेध हो तो मन्दी आती है।

चित्रा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सोना, सभी रत्नों, मूंग उड़द, प्रवाल और घोड़े तथा वाहन, कारें इत्यादि तेज होते हैं। शुभ ग्रहों का वेध हो तो मन्दी आती है।

स्वाति नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सुपारी, मिर्च, सरसों, तेल, रुई, हींग, खजूर तथा किराने की वस्तुएँ आदि तेज होती हैं। शुभ ग्रहों का वेध हो तो यह वस्तुएँ मन्दी होती हैं।

विशाखा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : गेहूँ, चावल, जौ, मूंग, मसूर, धान्य, रुई आदि तेज होते हैं और शुभ ग्रहों का वेध हो तो इनमें मन्दा होता है।

अनुराधा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : तुअर आदि सब प्रकार की दालें, मोठ, चावल, चना आदि महंगे होते हैं। शुभ ग्रहों का वेध हो तो इन पदार्थों में मन्दा आता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : गुग्गुल, गुड़, लाख, कपूर पारा, हींग, हिगुलू, कांसी आदि तेज होते हैं और शुभ ग्रहों का वेध होतो इनमें मन्दा आता है।

मूला नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सभी प्रकार की सफेद वस्तुएँ, सभी रसदार पदार्थ धान्य, सेन्धा नमक, कपास धागा आदि तेज होते हैं। शुभ ग्रहों का वेध हो तो इनमें मन्दी होती है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सुरमा, तुष धान्या, कन्द–मूल–फल, चावल आदि तेज होते हैं और शुभ ग्रहों का वेध हो तो इनमें मन्दा आता है।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : घी, घोड़े, बैल हाथी, लोहा आदि धातुएँ, सभी प्रकार के वाहन तथा अन्य सभी वस्तुएं तेज होती हैं और शुभ ग्रहों का वेध हो तो इनमें मन्दा आता है।

अभिजित नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : दाख, खजूर, इलायची, जायफल, सुपारी, मूंग एवं करियाने की वस्तुओं में तेजी रहती है। शुभ ग्रहों का वेध हो तो मन्दा होता है।

श्रवण नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : अखरोट, चिरौंजी, पिप्पली, सुपारी, मीठे पदार्थ, धान्य आदि तेज होते हैं। और शुभ ग्रहों का वेध हो तो इन पदार्थों में मन्दा आता है।

धनिष्ठा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सोना, चांदी आदि धातुएँ सभी प्रकार की करेंसी, माणिक, मोती रत्न तेज होते हैं और शुभ ग्रहों का वेध हो तो इनमें मन्दा रहता है।

शतभिषा नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : तेल, कोदा, मदिरा (शराब) अर्क, आँवला वृक्षों के मूल–पत्र–छाल आदि तेज होते है। शुभ ग्रहों का वेध हो तो इनमें मन्दे का माहौल रहता है।

पूर्वाभाद्र पद नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : सभी धातुएँ, सभी औषधियाँ, सभी धान्य, देवदारु प्रियांगु मूल आदि महंगे और शुभ ग्रहों का वेध हो तो मन्दे होते हैं।

Future Point

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : गुड़–खांड–शक्कर, तिल, सरसों आदि तिलहन, खल, चावल, माणिक एवं मोती तेज होते हैं। शुभ ग्रहों का वेध हो तो मन्दी रहती है।

रेवती नक्षत्र पर क्रूर ग्रहों का वेध : नारियल, सुपारी, करियाने की सभी वस्तुएँ, माणिक, मोती आदि तेज होते हैं। शुभ ग्रहों का वेध हो तो इन वस्तुओं में मन्दा होता है।

उदाहरण : सर्वतोभद्र चक्र के आधार पर अनाजों, धातुओं व विभिन्न पदार्थों में मन्दा तेजी का इस प्रकार से विचार किया जाता है। मान लो हमें किसी विशेष दिन में बाजार के भावों का फल जानना है तो उस दिन सूर्यादि ग्रहों की विभिन्न गतियों (वक्री, शीघ्रगामी व मध्यगति) के आधार पर सर्वोभद्र चक्र में उनके द्वारा वेध किये जाने वाले नक्षत्रों के बारे में पता करेंगे। अब शुभ और अशुभ ग्रहों के वेध का विभिन्न नक्षत्रों में अलग–अलग पदार्थों के बाजारों के रुख पर पड़ने वाले प्रभाव का फल देखेंगे कि किस–2 पदार्थ या वस्तु में तेजी आयेगी। ग्रहों के नक्षत्र परिवर्तन के साथ ही उनके द्वारा वेध किये जाना वाला नक्षत्र भी बदल जायेगा जिससे बाजारों के रुख में परिवर्तन आता रहेगा।

प्रश्नमाला :

1. सर्वतोभद्र चक्र के बारे में विस्तृत जानकारी दीजिए।
2. सर्वतोभद्र चक्र का मन्दा–तेजी में क्या योगदान है ? संक्षिप्त टिप्पणी करो।
3. ग्रह यदि वक्री गति पर हो तो किस दिशा में वेध करता है ?
4. सूर्य ग्रह का वेध किस दिशा में होता है ?
5. क्या ग्रहों की गति परिवर्तन का प्रभाव होता है ? संक्षिप्त व्याख्या करो।

Future Point

Future Point

अध्याय—10

ग्रहचार

सूर्यादि ग्रहों का ग्रहचार फल :

ग्रहों के विभिन्न राशियों, नक्षत्रों तथा मार्गी वक्री गतियों के संचार को ही ग्रहचार कहते हैं।

सूर्यचार

मेष आदि राशियों में ग्रहों का फल :

मेष : सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, फल, सूखे, मेवे, तिल, तेल, घी, सूत आदि में तेजी हो तथा गेहूँ इत्यादि अनाज और मूंग, अरहर आदि दालों में मन्दी आती है।
वृष : सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, चीनी आदि रसकस; तिल, तेल व तेलवान; सूखे मेवों आदि में तेजी और चना, जौ आदि अनाजों व मूंग, अरहर आदि दालों में मन्दी आती है।
मिथुन : सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड आदि रसकस तिल, तेल व तेलवान, वारदाना, सूत व गेहूँ , चना इत्यादि अनाजों व दालवानों में तेजी का रुख रहता है।
कर्क: गेहूँ, चना, जौ आदि अनाजों और मूंग, मोठ, अरहर, उड़द आदि दालवानों में मन्दी तथा सोना, चांदी आदि धातुओं, गुड़, खांड, शक्कर, फलों, सूखे मेवों आदि में तेजी रहती है।
सिंह : सोना, चांदी, गुड़ खाण्ड तिल व तेल तथा लाल वर्णों की वस्तुओं औरं रत्नों में तेजी लाता है। अनाजों व दालवानों में मन्दी होती है।
कन्या : चांदी में मन्दा, तिल व तैलीय वस्तुओं, रुई, नारियल आदि में तेजी आती आती है।
तुला : गेहूँ, जौ, चना, सोना, तांबा, रक्त चन्दन, श्रीफल, सुपारी इत्यादि में तेजी और रुई व चांदी में मन्दी आती है।
वृश्चिक : सोना, चांदी, तांबा, रुई आदि में तेजी तथा लाल रंग की वस्तुओं में मन्दी आती है।
धनु : गेहूँ, चना, जौ आदि अनाजों में मन्दा लाये जबकि सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत तिल व तेलवानों में तेजी बनाये।
मकर : गेहूँ, चना आदि अनाजों, वारदाना, पाट में मन्दी गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रसकस, रुई, धागा, तेल व घी में तेजी रखे।
कुंभ : गेहूँ, चना आदि रसकस में मन्दादायक होता है। अनाजों, गुड़, खाण्ड वारदाना, तिल व तेलवान, घी, मूंगफली आदि में तेजी आती है।
मीन : तिल, तेल व तेलवान, गुड़, खाण्ड आदि रसकस और रुई, धागा व सोने में तेजी बनाता है तथा अनाजों व दालवानों में मन्दी लाता है।

सूर्य का नक्षत्रों में फल :

अश्विनी : सोना, चांदी, तांबा, लोहा, तिल, तेल व तेलवान, लाल चन्दन, सूती कपड़ा, लौंग, इलायची

व अनाजों में तेजी और रुई में मन्दा लाता है।

भरणी : सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं एवं पीतल के बर्तनों, गेहूँ, जौ, चना आदि अनाजों, गुड़, खाण्ड आदि रसकस और घी व तेलवान में तेजी और रुई में मन्दी आती है।

कृत्तिका : सोना, चांदी, गेहूँ ,जौ, चना आदि अनाज, मूंग मोठ आदि दालवान तथा तेलवान और घी में तेजी हो।

रोहिणी : गेहूँ, जौ, चना आदि अनाज, गुड़, खाण्ड आदि रसकस, तेल व तेलवान तथा घी, ऊनी व सूती वस्त्रों और मिर्च में तेजी तथा चांदी में मन्दी आती है।

मृगशिरा : सोना, चांदी, मूंग, मोठ, उड़द, दालवान, चना, बाजरा इत्यादि अनाजों और जल से उत्पन्न पदार्थों आदि में तेजी रहती है।

आर्द्रा : गेहूँ, चना, चावल, जौ, आदि अनाज व चांदी तथा सूत रुई खल में तेजी हो। सोने में मन्दी आती है।

पुनर्वसु : गुड़, खाण्ड आदि रसकस, रुई, कपास, सूत, तिल, तेलवान, मूंग आदि दालवान व करियाने की वस्तुओं में तेजी आती है।

पुष्य : गेहूँ, जौ, चना, चावल आदि अनाजों, तिल, तेल, तेलवान, सोना, चांदी आदि धातुओं और ऊनी वस्त्रों में तेजी हो। रुई और सूत में मन्दी आती है।

आश्लेषा : गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, उड़द, मूंग आदि दालवान तथा सोना, चांदी आदि धातुओं, तेल, घी व मिर्च में तेजी हो।

मघा : तिल, तेलवान, मूँग आदि दालवान व चांदी में तेजी हो।

पूर्वाफाल्गुनी : गेहूँ आदि अनाजों, गुड़, खाण्ड, तेल व तेलवान घी, ऊनी व सूती तथा सोने में तेजी तथा चांदी मन्दी हो।

उत्तराफाल्गुनी : सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओं, तिल, तेलवान व घी, चावल उड़द और रुई आदि में तेजी हो।

हस्त : जौ, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, खाण्ड आदि रसकस और हल्दी, धनिया आदि गर्म मसाले तेज हों।

चित्रा : सोना, चांदी आदि धातुएँ, चना आदि अनाज, अरहर, मूंग, दालवान, सूत व लाल कपड़ा तथा गुड़ व खाण्ड तेज हों।

स्वाति : सोना, चांदी आदि धातुएँ, गुड़, खाण्ड, तेलवान, सुगन्धित पदार्थ, सूत व रेशमी कपड़े तेज हों।

Future Point

विशाखा : गेहूँ, चावल, जौ आदि अनाज, मसूर, दालवान, तिल, तेलवान, गुड़ व खाण्ड तेज हों और चांदी में नरमी का रुख रहे।

अनुराधा : जौ, चना, धान्य व ऊनी वस्त्रों में तेजी और गेहूँ, सोना, चांदी में मन्दी हो।

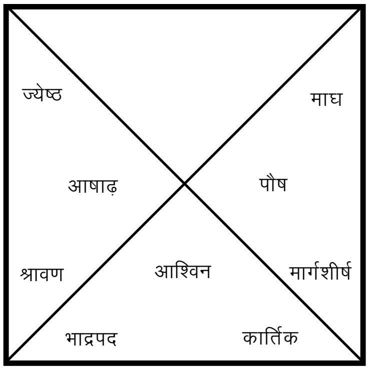

ज्येष्ठा : सोना, चांदी आदि धातुओं, गेहूँ, जौ, चना, चावल आदि अनाजों, तेलवान, सुगन्धित पदार्थों, गुड़ व खाण्ड में तेजी तथा रुई में मन्दी रहे।

मूला : सोना, चांदी, कपास, सूत, रुई में मन्दी हो।

पूर्वाषाढ़ा : गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र, चांदी, तिल व तेलवान पदार्थों में तेजी दें।

उत्तराषाढ़ा : गेहूँ, चना, चावल आदि अनाज, मूंग, उड़द आदि दालवान, गुड़, खाण्ड आदि रसकस, तेलवान व पाट वारदानां में तेजी हो।

श्रवण : गेहूँ, जौ, चावल आदि अनाजों, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी रुई व सूत में तेजी हो।

धनिष्ठा : गेहूँ आदि अनाजों, मूंग, मसूर आदि दालवान तथा सोना, चांदी व रत्नों और रुई व सूत में तेजी हो।

शतभिषा : गेहूँ आदि अनाज, तिल व तेलवान, गुड़, सोना, चांदी, सूती कपड़े, सुगन्धित पदार्थ आदि तेज हों।

पूर्वा भाद्रपद : गेहूँ, चना आदि अनाजों, उड़द आदि दालवान, गुड, खाण्ड, तेल और तेलवान व घी, सोना, चांदी आदि धातुओं और वस्त्रों में तेजी हो।

उत्तरा भाद्रपद : गेहूँ, चावल, गुड़ व खाण्ड आदि रसकस तथा तेल तेज हों।

रेवती : गेहूँ, चना, चावल आदि अनाजों, तेलवान पदार्थ, मूंगफली, रुई आदि में तेजी हो।

नोट : सूर्य के नक्षत्रों में प्रवेश का फल 14–15 दिनों में होता है।

संक्रान्तियों के दिनों का फल :

संक्रान्ति : सूर्य के एक राशि से दूसरी में प्रवेश को संक्रान्ति कहते हैं और उस संक्रान्ति को उसी राशि के नाम से जोड़ा जाता है अर्थात् यदि सूर्य मेष से वृष में प्रवेश करे तो वह संक्रान्ति वृष संक्रान्ति कहलायेगी।

1. **मेष संक्रान्ति :** रविवार, मंगलवार या शनिवार को हो तो गेहूँ, चना, जौ, धान्य, मजीठ, केसर आदि तेज रहते हैं।

सोमवार को हो तो गुड़, खाण्ड, तेल, तेलवान, कपास और सूती कपड़े तेज रहते हैं। गुरुवार को हो तो

Future Point

अनाजों में मन्दा हो बुधवार और शुक्रवार को हो तो अनाज मन्दा और सफेद वस्तुएं तथा चीनी तेज हों।

2. वृष संक्रान्ति : रविवार, मंगलवार, शनिवार की हो तो गेहूँ आदि अनाज, गुड़ व खाण्ड, सूखे मेवे तथा करियाने की वस्तुएं तेज हों।

सोमवार को हो तो अनाजों में तेजी, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को हो तो गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दा हो। तेल व तेलवान, कपास, सूती कपड़ा आदि तेज रहते है। गुरुवार को हो तो अनाजों में मन्दा हो। बुधवार व शुक्रवार को हो तो अनाज मन्दे तथा सफेद वस्तुएं और चीनी तेज हों।

3. मिथुन संक्रान्ति : रविवार, मंगलवार व शनिवार को हो तो अनाजों में तेजी हो। बुधवार की संक्रान्ति से मोती आदि रत्नों में तेजी आती है। सोमवार, शुक्रवार या गुरुवार को हो तो अनाजों तथा सूत में तेजी हो।

4. कर्क संक्रान्ति का प्रवेश : रविवार या मंगलवार को हो तो गेहूँ, चना आदि अनाज, गुड़, खाण्ड तथा घी तेज हों। सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार को हो तो अनाजों में मन्दा हो। बुधवार की हो तो बायु के अधिक वेग से चलने से वृक्ष आदि टूटें तथा पक्षियों का भी नाश हो। शनिवार को संक्रान्ति हो तो अनाजों में तेजी हो सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में मन्दा हो।

5. सिंह संक्रान्ति का प्रवेश : रविवार, मंगल या शनिवार की हो तो मूंग, मोठ, उड़द, दालवान में तेजी हो। गुरुवार को हो तो वर्षा अधिक हो, घी मन्दा हो। तेल व तेलवान, गुड़, खाण्ड आदि रसकस में तेजी हो। सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और गुरुवार को हो तो अनाजों में मन्दा हो।

6. कन्या संक्रान्ति का प्रवेश : रविवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों; सोना, चांदी आदि धातुओं, गुड़ व चीनी में तेजी हो। तेल, तेलवान व घी में उतार–चढ़ाव अधिक हो, सोमवार को हो तो गेहूँ इत्यादि सभी अनाजों, सभी दालवान, तेलवान, गुड़ आदि में तेजी हो; खाण्ड व चांदी में मन्दी होती है। मंगलवार को हो तो मूंग इत्यादि दालवान, गेहूँ , जीरा आदि गर्म मसालों में तेजी हो। बुधवार को हो तो घी एवं चांदी में मन्दी हो। गुरुवार को हो तो गेहूँ , सोना आदि मन्दे हों। शुक्रवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा शनिवार को घी गुड़ और खाण्ड तेज, कपास मन्दा, सोना, चांदी आदि धातुएं सम रहती हैं।

7. तुला संक्रान्ति : रविवार की हो तो गेहूँ इत्यादि अनाज, गर्म मसाले तेज, दालें मन्दी हों। सोमवार की हो तो अनाजों में समता हो। गुड़, खाण्ड में तेजी, सोना और तांबे में उतार–चढ़ाव अधिक, चांदी ,चावल, दालें आदि सस्ते हों। मंगलवार को हो तो गेहूँ आदि अनाज, मिर्च, गर्म मसाले व सोना चांदी आदि धातुएं तथ मूंग, मोठ, उड़द में समता आए। अरहर तेज, घी–तेलों में उतार, चढ़ाव, चावल व पशु भी मन्दे रहें। बुधवार को हो तो गेहूँ , चावल आदि अनाजों और सफेद पदार्थों में मन्दा और तेल व तेलवानों में तेजी आती है। गुरुवार को हो तो गेहूँ आदि अनाज और दालवान मन्दे हों। तेलवान व सोना आदि धातुएं तेज हों। शुक्रवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा हो, गुड़, खांड आदि रसकस और सोना आदि धातुएं तेज हों। तेल व दालवान में समता हो। शनिवार को हो तो गेहूँ, चावल, चना, गुड़,

Future Point

खांड, घी और तेलवानों में तेजी हो तथा रूई, कपास व चांदी मन्दे हों।

8. वृश्चिक संक्रान्ति : रविवार की हो तो गेहूँ आदि अनाजों; तेल व तेलवान; सोना, चांदी आदि धातुओं हल्दी, मिर्च और गर्म मसालों में तेजी हो। सोमवार को हो तो गेहूँ, चना आदि अनाज, चांदी, घी आदि मन्दे और सोना, तांबा, लोहा व तेलवान तेज हों। मंगलवार को हो तो अनाज, दालवान, गुड़ और खांड मन्दे हों। बुधवार को हो तो गुड़, खांड, चावल, चांदी और कपास मन्दे हों तथा लाल रंग की वस्तुओं व वस्त्रों में तेजी हो। गुरुवार को हो तो गुड़, खांड आदि रसकस, लाल रंग की वस्तुओं व तेलों में तेजी आती है। मोठ, मसूर, अरहर आदि दालवान तथा सोना–चांदी आदि धातुएं और तेलवान मन्दे हों।

शुक्रवार को हो तो गेहूँ, चना आदि अनाज व तेलों में तेजी, मूंग, अरहर आदि दालवान में समता, सोना–चांदी में पहले तेजी और बाद में मन्दा रहे। शनिवार को हो तो अनाजों में घटा–बढ़ी के साथ मन्दा रहे। तेलवानों में समता रहे। लोहा, पीतल, ज्वार, बाजरा आदि के भाव तेज हों।

9. धनु संक्रान्ति : रविवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों, सोना, तेल व तेलवान, गुड़, खांड आदि में समता और करियाने में तेजी हो। सोमवार को हो तो गेहूँ, चावल, चांदी आदि मन्दे हों। तेलों व तेलवान, लाल रंग की वस्तुओं व लोहे में तेजी हो। मंगलवार को हो तो गेहूँ आदि अनाज, तेल व तेलवान, घी, कपास, चांदी, चावल, लाल रंग के वस्त्र आदि तेज हों। दालवान में मन्दा हो। बुधवार को हो तो उड़द, मूंग इत्यादि दालवान, पशुओं का चारा, सूखे मेवे व गर्म मसाले आदि मन्दे हों, तेलों में समता हो। गुरुवार को हो तो गेहूँ, जौ आदि अनाज मन्दे और मूंग, उड़द, चांदी व रसदार पदार्थ तेज हों। शुक्रवार को हो तो अनाजों तथा कपास में समता आए; सोना व चांदी में तेजी हो। गुड़, तेल व तेलवान में घटा–बढ़ी के साथ मन्दा रहे। शनिवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं, रुई, कपास तथा स्फेद वस्तुओं में तेजी और घी व चावल में मन्दा रहे।

10. मकर संक्रान्ति : रविवार को हो तो गेहूँ आदि अनाज; गुड़, तेल, तेलवान अरहर आदि गर्म मसाले उतार–चढ़ाव के साथ तेज हों।

सोमवार को हो तो करियाने की वस्तुओं, गुड़, खांड, सोना, सूती वस्त्र, चांदी, चावल, घी व तेल सस्ते हों, दालों में समता हो। मंगलवार को हो तो गेहूँ आदि अनाज, गुड़, खांड रसकस और तेल में तेजी हो। सोना–चांदी और करियाने की वस्तुओं में उतार–चढ़ाव अधिक हो। दालवान व घी में मन्दा हो। बुधवार को हो तो सूखे मेवे तेज और सोना, चांदी, सूत आदि मन्दे हों। अरहर, हल्दी, गर्म मसाले में तेजी और घी, चावल आदि में मन्दा हो। गुरुवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों, गुड़, खांड और घी में मन्दा हो। सोना, चांदी व करियाने में उतार–चढ़ाव अधिक हो। शुक्रवार को हो तो गेहूँ, चना, गुड़, खांड में मन्दा, सोना–चांदी में घटा–बढ़ी और करियाने की वस्तुओं में मन्दा हो। शनिवार को हो तो अनाजों में उतार–चढ़ाव के साथ तेजी, गुड़, खांड रसकस एवं तेल व तेलवानों में मन्दा। सोने में तेजी और चांदी में मन्दा हो।

11. कुम्भ संक्रान्ति : रविवार को हो तो गेहूँ आदि अनाजों में तेजी, गुड़, खांड, मक्की, सूती वस्त्रों व

Future Point

तेलवानों मन्दा हो। सोमवार को हो तो गेहूँ जौ, चना, तेलवानों, सोना, चांदी आदि में मन्दा हो; मूंग, उड़द, तेल व तेलवान तेज हों। मंगलवार को हो तो गेहूँ, चना, अनाज व दालवान में तेजी हो, सोना, चांदी, पीतल, जिस्त, सिक्का सस्ते हो, बुधवार को हो तो गेहूँ, जौ, चना, मटर, काली, गर्म मसाले मन्दे हों, मूंग, उड़द, कुल्थी तुअर, तेज हो, गुरुवार को हो तो मूंग, मौठ, मक्की, चावल, ज्वार, सोना, चांदी, तांवा, पीतल, सुखे मेवों व तेल में मन्दा, गेहूँ, जौ, रेशम में तेजी हो। शुक्रवार को हो तो ज्वार, बाजरा, मक्की आदि मन्दे हों, गेहूँ, चना उतार–चढ़ाव के साथ तेज हों; तिल, तेल व करियाने की वस्तुओं तथा गुड़, खांड, शक्कर आदि में तेजी होती है। शनिवार को हो तो गेहूँ, चना, नमक, मिर्च, घी, दूध तेज हों। मूंग, मोठ, उड़द आदि सस्ते हों।

12. मीन संक्रान्ति : रविवार को हो तो सोना, चांदी में मन्दा हो। गेहूँ, चना, मक्की, मसूर, सुगन्धित वस्तुओं, घी, तेल, गुड़, खांड उड़द में उतार–चढ़ाव अधिक हो; सोमवार को हो तो गेहूँ, चना, तेल, सरसों, रुई, घी व दूध तेज हों। मंगलवार को हो तो गेहूँ, चना, कपास, रुई, सूत, मूंग, अरहर, उड़द, मसूर, सोना और दूध में तेजी हो, घी में मन्दा हो। बुधवार को हो तो गेहूँ, जौ, चना, दूध, सुगन्धित वस्तुएं सम रहें। गुरुवार को हो तो गेहूँ इत्यादि अनाजों में मन्दा; मूंग, उड़द, गर्म मसाले, तेल, कपास और तांबे में तेजी हो। सोना, चांदी, सूखे मेवे में मन्दा हो। शुक्रवार को हो तो सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूँ जौ, नमक, मिर्च आदि तेज रहें। शनिवार को हो तो गेहूँ, जौ चना इत्यादि अनाज, तेल, गुड़, खांड, शक्कर में समता, लाल रंग के पदार्थ व वस्तुएं तेज रहें।

विशेष नोट : उपरोक्त द्वादश मासों की संक्रान्तियों का रविवार आदि वारों में प्रवेश होने से फल साधारणतया स्थूल रूप से तेजी–मन्दी में होता है। सूक्ष्म रूप से तेजी–मन्दी का विचार ग्रहों के राशि, नक्षत्र व वेगों के योगायोग से किया जाता है।

अब हम मुहूर्तों के अनुसार संक्रान्ति के फल का विचार करेंगे।

संक्रान्ति की मुहूर्ती के तीन भेद होते हैं।

1. 15 मुर्हूती 2. 30 मुर्हूती 3. 45 मुर्हूती

1. संक्रान्ति प्रवेश के समय यदि भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा और शतभिषा में से कोई नक्षत्र हो तो संक्रान्ति 15 मुर्हूती होती है।

2. अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूला, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद और रेवती इन 15 नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र संक्रान्ति प्रवेश के समय हो तो संक्रान्ति 30 मुर्हूती होती है।

3. रोहिणी, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़, उत्तरा भाद्रपद — इन 6 नक्षत्रों में सूर्य संक्रान्ति का प्रवेश हो तो संक्रान्ति 45 मुर्हूती होती है।

संक्रान्ति का मुहूर्ती आधारित फल :

1. 15 मुहूर्ती में धान्य एवं रसदार पदार्थ तेज होते हैं और अनावृष्टि होती है।

2. 30 मुहूर्ती में धान्य, घास आदि तथा रस आदि के भाव सम हों और वर्षा मध्यम हो।

Future Point

3. 45 मुहूर्ती में वर्षा अच्छी हो, फसलें अधिक हों, अनाजों एवं घी, तेल, कपास आदि वस्तुओं में मन्दा हो।

Future Point

Future Point

चन्द्रचार

चन्द्र अतिशीघ्रगामी ग्रह है जो एक राशि में लगभग 2 1/4 दिन तथा नक्षत्र में 1 दिन के लगभग रहता है। इसका बहुत अधिक प्रभाव वस्तुओं की तेजी–मन्दी पर नहीं पड़ता, फिर भी दैनिक मार्केट की तेजी–मन्दी पर कुछ प्रभाव जरूर पड़ता है। प्रसंगवश हम इसे भी जान लें।

चन्द्रमा का द्वादश राशियों में प्रवेश होने पर वस्तुओं पर प्रभाव :

मेष : गेहूँ, चना, जौ आदि अनाजों में तेजी तथा सोना व चांदी में मन्दी आती है।

वृष : गेहूँ, उड़द, मूंगफली, रुई और चांदी में तेजी आती है। चौपायों में मन्दे का रुख रहता है।

मिथुन : गेहूँ, चना, रुई व सूत तेज होते हैं।

कर्क : सोना, चांदी, रुई व सूत में मन्दा लाता है।

सिंह : सोना, चांदी और रुई में तेजी लाता है।

कन्या : सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी तथा रुई में मन्दा रखता है।

तुला : सोना, चांदी, चावल, घी और रुई में मन्दा।

वृश्चिक : सोना, चांदी, रुई आदि को मन्दा करता है।

धनु : रुई, कपास, सूत व तेलों में मन्दी आती है।

मकर : सोना, चांदी आदि धातुओं, वस्त्रों व फलों में तेजी लाता है।

कुम्भ : सोना, चांदी, रुई व सूत में मन्दा तथा तेलों में तेजी आती है।

मीन : सोने तथा तेलवान में तेजी और चांदी में मन्दी होती है।

विभिन्न नक्षत्रों में चन्द्रमा के उदय का प्रभाव

चन्द्रोदय के उपरोक्त प्रभावों के अतिरिक्त विभिन्न नक्षत्रों में भी चन्द्रोदय का वस्तुओं के भावों पर अलग–अलग प्रभाव पड़ते हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

अश्विनी : सोना, चांदी व कपास में मन्दी आती है।

भरणी : चांदी, रुई व नमक में मन्दी का रुख रहता है।

कृत्तिका : चांदी में मन्दी और रुई में तेजी आती है।

रोहिणी : गेहूँ, चना, गुड़ और खाण्ड में तेजी आती है।

मृगशिरा : सोना, चांदी व रुई में मन्दी का रुख रहता है।

आर्द्रा : सोना, चांदी, तांबा, गुड़ व खाण्ड में तेजी आती है।

पुनर्वसु : सोना, चांदी, गेहूँ, चना, मूंग व उड़द में मन्दा रहता है।

पुष्य : सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, व गेहूँ में मन्दे का रुख रहता है।

आश्लेषा : सोना, चांदी और रुई में मन्दी आती है।

मघा : सोना, चांदी और रुई में उतार–चढ़ाव अधिक होता है।

पूर्वाफाल्गुनी : चांदी, गेहूँ, चना, गुड़ व खाण्ड मन्दे होते हैं।

उत्तराफाल्गुनी : सोना, चांदी, तांबा, आदि धातुओं में मन्दे का रुख होता है।

हस्त : सोने, चांदी और तांबे में मन्दी तथा तेलवान में तेजी आती है।

चित्रा : सोना, चांदी, गेहूँ, चना व मूंग में तेजी का रुख रहता है।

स्वाति : सोना, चांदी व रुई में मन्दा रहता है।

विशाखा : सोना, चांदी, रुई, सूत तेज और तेल मन्दे होते हैं।

अनुराधा : सोना, चांदी में मन्दा तथा ऊन में तेजी रहती है।

ज्येष्ठा : चांदी, रुई तथा सूत मन्दे होते हैं।

मूला : चांदी, रूई व सफेद वस्त्रों में मन्दा रहे।

पूर्वाषाढ़ : सोना, पीतल, गुड़ व खाण्ड में मन्दा रहता है।

उत्तराषाढ़ : सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड नमक व फलों में मन्दे का रुख रहता है।

श्रवण : सोना, चांदी व अनाजों में मन्दा रहे।

धनिष्ठा : सोना, चांदी तेज और गुड़, खाण्ड मन्दे होते हैं।

शतभिषा : सोना में मन्दा, चांदी में तेजी रहती है।

पूर्वाभाद्रपद : सोना, चांदी, रुई व अनाजों में मन्दे का रुख रहता है।

उत्तराभाद्रपद : सोना, चांदी, रुई व वस्त्रों में मन्दी रहती है।

रेवती : सोना, चांदी व फल मन्दे होते हैं।

Future Point

मंगलचार :

मंगल का 12 राशियों में फल :

मेष : गेहूँ **आदि अनाजों में मन्दा हो; सोना, चांदी आदि धातुओं और रत्नों, पाट वारदाना, रुई, ऊनी व**स्त्र आदि में तेजी होती है।

वृष : अनाज, लाल रंग की वस्तुओं एवं पदार्थों, वस्त्र; सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं व तेलों में तेजी होती है।

मिथुन : गुड़, खाण्ड आदि रसकस; तांबे व लाल पदार्थों में तेजी हो।

मंगल के साथ शुभ ग्रह का संयोग उपरोक्त वस्तुओं में मन्दी लाता है और यदि पाप ग्रह का संयोग हो तो इन वस्तुओं में तेजी आती है।

कर्क : अनाज, गुड़, खाण्ड आदि रसकस में तेजी तथा तेल व तेलवानों में मन्दी हो।

सिंह : गेहूँ आदि अनाज; गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी और लाल चीजों व लाल वस्त्र में तेजी हो।

कन्या : गेहूँ, चने, लाल रंग के पदार्थों व सोने में तेजी हो।

तुला : गेहूँ आदि अनाज व दालवान, पाट—वारदाना कपास और सूत में तेजी हो।

वृश्चिक : गेहूँ आदि अनाज, गुड़, खाण्ड आदि रसकस; सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी हो।

धनु : गेहूँ आदि अनाजों; सोना, चांदी आदि धातुओं और तेलवान व घी में तेजी हो।

मकर : गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा हो। लेकिन गुड़, खाण्ड घी व तेलवान और सोना, चाँदी आदि धातुओं में तेजी हो।

कुम्भ : गेहूँ आदि अनाजों; गुड़, खाण्ड़ व सोने में तेजी तथा रुई और चांदी में मन्दा हो।

मीन : सोना, रुई तथा लकड़ी से बनी हुई वस्तुओं में तेजी और चांदी में मन्दा रहे।

नोट :

1. मंगल का राशि में प्रभाव 15 दिन से 1 मास के बीच होता है।

2. मंगल का शुभ ग्रह से संयोग या दृष्टि सम्बन्ध मन्दे का कारक तथा अशुभ ग्रहों से संयोग और दृष्टि तेजी दायक होती है।

नक्षत्रों में मंगल का फल :

अश्विनी : गेहूँ, चना आदि अनाजों; गुड़, खाण्ड व चीनी में तेजी तथा, सोने व चांदी में मन्दा हो।

भरणी : गेहूँ आदि अनाज व सोने और चांदी आदि धातुओं में तेजी हो।

कृत्तिका : गेहूँ आदि अनाज; मूंग, मोठ, दालवान, तेल व तेलवान; घी व चांदी में तेजी।

रोहिणी : तेल व तेलवानों; लाल पदार्थों व मिर्च में तेजी।

मृगशिरा : तिल व चांदी में तेजी हो, अनाज व दालवान में मन्दा।

Future Point

आर्द्रा : तिल व तेलवान; गुड़, खाण्ड, कपास, नमक में तेजी तथा चांदी में मन्दा हो।

पुनर्वसु : तेल व तेलवानों, चांदी, रुई व खाण्ड में तेजी हो।

पुष्य : सोने में तेजी बनाये और चांदी में मन्दा रखे।

आश्लेषा : गेहूँ आदि अनाजों में तेजी तथा चांदी और रुई में मन्दा बनाये। इस नक्षत्र के चौथे चरण का मंगल चांदी में विशेष मन्दा लाये।

मघा : गेहूँ आदि अनाजों; मूंग, मोठ आदि दालवान तथा तेलवान में तेजी लाता है।

पूर्वाफाल्गुनी : तेल व तेलवानों; गुड़ और खाण्ड में तेजी हो।

उत्तराफाल्गुनी : गुड़, खाण्ड आदि रसकस और सवारी वाले पशुओं में तेजी हो।

हस्त : गुड़, खाण्ड आदि रसकस तथा घी व नमक में तेजी हो।

चित्रा : सोना, चांदी आदि धातुओं और गेहूँ, चना आदि अनाजों में तेजी हो।

स्वाती : गेहूँ, तेल व तेलवानों तथा ऊनी वस्त्रो में तेजी और सोने में मन्दा हो।

विशाखा : गेहूँ, कपास वस्त्रों में तेजी लाता है।

अनुराधा : गेहूँ आदि अनाजों, लाल रंग के पदार्थों व वस्त्रों में तेजी हो।

ज्येष्ठा : चांदी में मन्दा हो, सोना व गेहूँ आदि अनाजों में तेजी बनाये।

मूला : गेहूँ, जौ, चना आदि अनाजों; मूंग आदि दालवान और सोने व चाँदी में तेजी हो।

पूर्वाषाढ़ा : गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा बनाये; सोना व चाँदी आदि धातुओं, तेल, तेलवान, घी आदि में तेजी बनाये।

उत्तराषाढ़ा : तेल व तेलवान पदार्थों में तेजी हो, रुई में भी तेजी हो।

श्रवण : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी रखे।

धनिष्ठा : सोना, चाँदी आदि धातुओं में तेजी; गुड़, खाण्ड, घी और अनाजों में मन्दा हो।

शतभिषा : अनाजों में मन्दा हो; सोना, चाँदी में भी मन्दा रखे।

पूर्वाभाद्रपद : सोना, चांदी, आदि धातुओं, तिल व तेलवान, रुई और कपास में तेजी रखे।

उत्तराभाद्रपद : गेहूँ, जौ, चना आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं और लाल व सुगन्धित पदार्थों में तेजी हो।

रेवती : गेहूँ आदि अनाजों और मूंग, मोठ आदि दालवान में मन्दा हो; सोने में भी मन्दा हो किन्तु चांदी में तेजी बनाये।

नोट :

1. नक्षत्रों में मंगल का फल नक्षत्र प्रवेश से 12 और 24 दिनों के बीच रहता है।
2. मार्गी गति का मंगल रुई में 3 दिन बाद मन्दा और तेल व चाँदी में तेजी बनाता है।
3. वक्री गति का मंगल सोना, चांदी, गेहूँ व लाल रंग तथा अपनी राशि से प्रभावित वस्तुओं में भी तेजी बनाये।

Future Point

4. मंगल जब उदय हो तो अनाजों में मन्दा और तिल व तेलवानों में तेजी हो। यह तेजी उदय के पांच दिनों के बाद आती है।

5. मंगल अस्त होता है तो गेहूँ, चना आदि अनाजों तथा गुड़ आदि को तेज बनाता है।

मंगल का राशियों में मार्गी गति में आने का फल :

मेष : अनाजों में मन्दा हो।

वृष : मार्गी गति में रुई में तेजी और चाँदी में उतार–चढ़ाव आते हैं।

मिथुन : सब पदार्थों में एकदम तेजी व मन्दा अधिक बनाए।

कर्क : औषधियों और वनस्पतियों में तेजी आती है।

सिंह : अनाजों में तेजी हो।

कन्या : तेल और तेलवान व गेहूँ में तेजी हो।

तुला : पश्चिम व दक्षिण के प्रांतो में अनाजों में तेजी बनाये।

वृश्चिक : पशुओं के लिये हानिकारक रहे।

धनु : अनाजों में मन्दा हो।

मकर : अनाजों में समता रखे तथा इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं में मन्दी लाये।

कुंभ : अनाजों में तेजी हो।

मीन : अनाज व घी में मन्दा हो।

राशियों में वक्री मंगल के प्रवेश का फल :

मेष : अनाजों में तेजी हो।

वृष : लाल रंग के पदार्थों में तेजी हो।

मिथुन : सब पदार्थों में धीरे–धीरे तेजी व मन्दी लाता है।

कर्क : गेहूँ आदि में घटा–बढ़ी हो; औषधियों में मन्दी हो।

सिंह : गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा हो।

कन्या : गेहूँ, तेल तथा तेलवानों में मन्दी हो।

तुला : अनाजों में मन्दा दें।

वृश्चिक : पशुओं की वृद्धि करे।

धनु : अनाज व घी में तेजी दे।

मकर : गेहूँ व विद्युत–इलेक्ट्रॉनिक की वस्तुओं में तेजी लाये।

कुम्भ : अनाजों आदि में मन्दा लाये।

मीन : अनाज व घी में तेजी हो।

Future Point

Future Point

बुधचार :

बुध का बारह राशियों में फल :

मेष : गुड़, खाण्ड, चना, तेल व तेलवान तथा सोना, चांदी आदि धातुओं और रत्नों में मन्दा हो।

वृष : गेहूँ आदि अनाजों; दालवान व तिल–तेल में तेजी हो।

मिथुन : सोना चांदी में मन्दा लाये; तेलवानों में उतार–चढ़ाव हो। पशुओं में तेजी हो।

कर्क : अनाजों में समता बनाये; गुड़, तेल व तेलवान में तेजी तथा चांदी व सफेद वस्तुओं में मन्दा दे।

सिंह : अनाजों में समता बनाये, सोना, चांदी आदि धातुओं तथा गुड़, खाण्ड आदि में मन्दा बनाये।

कन्या : गेहूँ, चना आदि अनाजों, गुड़ व शक्कर में तेजी तथा चांदी में मन्दा दे।

तुला : गुड़, खाण्ड आदि रसकस तथा सोना में तेजी और तेलवानों में मन्दी हो।

वृश्चिक : अनाजों में मन्दा और तेल–तेलवान, घी व चांदी में तेजी हो।

धनु: चांदी, कपास, धागे और वस्त्रों में मन्दा हो।

मकर : अनाजों में समता और सोने व चांदी में तेजी बनाये।

कुम्भ : गुड़, खाण्ड, तेल व घी में तेजी और चांदी व रुई में मन्दा रखे।

मीन : गुड़, खाण्ड रसकस और अनाज आदि में मन्दा दे।

बुध का नक्षत्रों में फल :

अश्विनी नक्षत्र में बुध का फल : गेहूँ, चना, ज्वार आदि अनाजों, मूंग मोठ आदि दालवानों में तेजी गुड़, खाण्ड रसकस, तिल और तेलवान व चांदी में मन्दा बनाये।

भरणी : गेहूँ, चावल आदि अनाजों में तेजी देता है।

कृत्तिका : गेहूँ आदि अनाजों तथा रुई में तेजी का सूचक और चांदी में मन्दादायक हो।

रोहिणी : तेल व तेलवानों, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी और ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दी हो।

मृगशिरा : गेहूँ आदि अनाजों, तेलवान आदि में मन्दादायक हो रुई में तेजीदायक हो।

आर्द्रा : गेहूँ आदि अनाजों, तिल, मूंग व मोठ आदि में मन्दा लाता है।

पुनर्वसु : चांदी, रुई व सूत में मन्दे का सूचक होता है।

पुष्य : सोना, चांदी में मन्दा हो, रत्नों तथा ऊनी कपड़ों में तेजी बनाये।

आश्लेषा : तेल व तेलवानों, गुड़, खाण्ड मूंग आदि में तेजी बनाता है।

मघा : गेहूँ, चना, जौ आदि अनाजों और सूत व वस्त्रों में तेजी दायक होता है।

पूर्वाफाल्गुनी : गेहूँ आदि अनाजों और गुड़, खाण्ड आदि रसकसों में मन्दा लाता है।

उत्तराफाल्गुनी : मूंग, मोठ, अरहर आदि दालवान में तेजी; रुई और चांदी में मन्दा बनाता है।

Future Point

हस्त : गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा देता है।

चित्रा : गेहूँ आदि अनाजों में कुछ तेजी और रुई तथा चांदी में अस्थिरता पैदा करता है।

स्वाति : कपास में मन्दा हो।

विशाखा : अनाजों में मन्दा हो तथा रुई भी मन्दी रहे।

अनुराधा : सोना व चांदी मन्दा रखे; अनाजों के भाव सम रहें।

ज्येष्ठा : गुड़, खाण्ड, घी व चावल में तेजी बनाता है।

मूल : सभी अनाजों तथा सोना–चांदी में मन्दा रखता है।

पूर्वाषाढ़ा : सब अनाजों और सोना चांदी में मन्दा बनाता है।

उत्तराषाढ़ा : सब प्रकार के अनाजों में मन्दा ही रखता है।

श्रवण : गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूँ, चना आदि में तेजी बनाता है।

धनिष्ठा : सोना व चांदी में मन्दा और अनाज व चावल में तेजी बनाता है।

शतभिषा : सभी अनाजों में तेजी और सोना व चांदी में मन्दा रखता है।

पूर्वाभाद्रपद : अनाजों, सोने, तांबे तथा चांदी आदि को मन्दा बनाता है।

उत्तराभाद्रपद : गेहूँ आदि अनाजों तथा गुड़, खाण्ड आदि में समता लाता है।

रेवती : गुड़, खाण्ड आदि रसकस, तेलवान, घी, चांदी तथा लाल मिर्च आदि में मन्दी आती है।

नोट :

बुध जब मार्गी गति में आता है– गेहूँ आदि अनाजों में तेजी, चांदी व रुई में पहले उतार–चढ़ाव और बाद में तेजी आती है। गुड़ व सुगन्धित पदार्थ भी तेजी होते हैं।

बुध जब वक्री हो तो : गुड़, खाण्ड आदि रसकस में तेजी और गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दा लाता है।

बुध जब उदय होता है तो गेहूँ व चना में तेजी तथा अस्त हो तो गेहूँ, चना आदि अनाजों, घी आदि में मन्दा आता है।

मार्गी बुध का राशियों पर प्रभाव तथा फल :

मेष : पशुओं में मन्दा

वृष : सूत वस्त्र, गेहूँ, चांदी, शक्कर में मन्दा

मिथुन : मूंग, मोठ आदि दालवान में मन्दा

कर्क : चांदी, सूत, चावल में मन्दा और जलोत्पन्न पदार्थो में तेजी

सिंह : रुई, पाट–वारदाना तथा शेयरों में मन्दा

Future Point

कन्या : सूखे मेवों में तेजी।

तुला : घी, शक्कर, औषधि में तेजी

वृश्चिक : तेलवानों में तेजी

धनु : गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी

मकर : सरसों आदि में मन्दी

कुम्भ : सोना व चमड़े में तेजी

मीन : गुड़, खाण्ड, तेलवानों में मन्दी

राशियों में वक्री बुध के प्रवेश का फल :

मेष : करियाने की वस्तुओं में तेजी।
वृष : चांदी में तेजी।
मिथुन : साग, सब्जियों में मन्दा
कर्क : अनाजों में मन्दा।
सिंह : अनाजों व धातुओं में तेजी।
कन्या : अनाजों में मन्दा।
तुला : सोने में तेजी।
वृश्चिक : गुड़ आदि रसकस में तेजी।
धनु : सूखे मेवों में तेजी।
मकर : तेल व तेलवानों में तेजी।
कुम्भ : गुड़, खाण्ड आदि रसकस में तेजी।
मीन : चावल, घी में तेजी।

गुरुचार

मेषः मेष राशि में सोना, चांदी, तांबा, गुड़ आदि में मन्दा हो।

वृष : वृष राशि में गेहूँ इत्यादि अनाजों तथा चांदी में तेजी हो। मूंगा, मोती, लाल वस्त्र आदि मन्दे होते हैं। चैत्र मास में तेलों व घी तथा श्रावण में चने में तेजी होती है।

मिथुन : मिथुन राशि में सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं, सूती वस्त्रों, तेलवान, घी आदि में तेजी हो। मार्गशीर्ष मास के बाद मन्दा हो।

कर्क : कर्क राशि में गेहूँ, चना आदि अनाजों, गुड़, खाण्ड आदि रसकस, घी और रुई में तेजी हो।

सिंह : सिंह राशि में गेहूँ आदि अनाजों और घी में तेजी आती है। सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में मन्दा हो।

कन्या : कन्या राशि में गेहूँ आदि अनाजों, मूंग, उड़द आदि दालवान, तेल व तेलवान, घी आदि में तेजी

और रुई, चांदी, ऊनी वस्त्रों व धातुओं में मन्दी आती है।

तुला : तुला राशि में सोना, रुई, नारियल में तेजी लाता है; तेल, तेलवान व घी में मन्दी तथा गुड़, खांड में तेजी बनाता है।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि में सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं, तेल, तेलवान, घी, गुड़ व सफेद पदार्थों में तेजी आती है।

धनु : धनु राशि में गुड़, खांड रसकस में विशेष मन्दी आती है। गेहूँ आदि अनाजों, तेल व तेलवान, घी, सोना, चांदी आदि में मन्दा रहता है।

मकर : मकर राशि में गेहूँ, चना आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं और मूंगफली में तेजी बनाता है।

कुम्भ राशि का गुरु हो तो : सोना, चांदी आदि धातुओं, सफेद वस्तुओं व पदार्थों में प्रथम तीन मास मन्दी और पश्चात् तेजी आती है।

मीन : मीन राशि में गुड़, खांड आदि रसकस; गेहूँ आदि अनाजों, मूंग, मोठ आदि दालवान, तिल व तेलवान व घी में तेजी आती है।

नक्षत्रों में गुरु ग्रह का फल :

अश्विनी नक्षत्र में गुरु हो तो : अनाजों, सोना, चांदी आदि में मन्दा हो।

भरणी : सोना, चांदी आदि धातुओं और रत्नों, गेहूँ आदि अनाजों और मूंग, मोठ, उड़द आदि दालवान में मन्दी आती है।

कृत्तिका : अनाजों तथा रुई में मन्दा और गुड़, खांड व धातुओं में उतार–चढ़ाव रखता है।

रोहिणी : सोना, चांदी, गुड़, खांड आदि में मन्दी आती है। रोहिणी नक्षत्र के दूसरे चरण में अनाज व चांदी में तेजी तथा गुड़, खांड आदि रसकस; सूखे मेवों और गर्म मसालों में उतार–चढ़ाव अधिक हो। तीसरे चरण में गेहूँ आदि अनाजों; गुड़, खांड आदि रसकस और घी, तिल और तेल में तेजी बनाए। रोहिणी के चौथे चरण में गेहूँ आदि अनाजों; तेल व तेलवानों; गुड़, खांड आदि रसकस और घी में मन्दा लाए।

मृगशिरा : घी व चांदी में मन्दा बनाए। प्रथम चरण में तिल व रुई में, दूसरे में कंद–मूल, तिल व चावल में और तीसरे व चौथे चरणों में अनाजों में तेजी आती है।

आर्द्रा नक्षत्र : रुई में मन्दी आती है। प्रथम और दूसरे चरणों में सोना आदि धातुओं, रत्नों, सुगन्धित पदार्थों व सभी रसों में तेजी होती है। तीसरे चरण में सोना, चांदी आदि धातुओं और तेलों में तेजी का वातावरण रहता है। चौथे चरण में गेहूँ आदि अनाजों, सुगन्धित पदार्थों एवं सभी रसों में मन्दी आती है।

पुनर्वसु : गेहूँ इत्यादि अनाजों, दालवान, धातुओं आदि में तेजी आती है। प्रथम और द्वितीय चरणों में चांदी और रुई में मन्दी होती है।

पुष्य नक्षत्र : गेहूँ इत्यादि अनाजों, सोना, चांदी, तेल, तेलवान व घी और रुई में तेजी रहती है।

आश्लेषा : गेहूँ आदि अनाज, सोना, चांदी आदि धातुएं और तेलवान व घी तेज होते हैं।

Future Point

मघा नक्षत्र : गेहूँ इत्यादि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं और गुड़, खांड आदि में मन्दी आती है।

पूर्वाफाल्गुनी : गेहूँ इत्यादि अनाजों, गुड़, खांड आदि रसकस और सोना, चांदी आदि धातुओं में मन्दी रहती है।

उत्तराफाल्गुनी : गेहूँ आदि अनाजों, गुड़, खांड, धातुओं आदि में मन्दी का वातावरण रहता है। प्रथम चरण में चांदी और सफेद वस्तुओं में मन्दी अधिक रहती है।

हस्त : गेहूँ, चना, हल्दी, सोना, चांदी, तेल, घी, गुड़, खांड और रुई में मन्दी रहती है।

चित्रा नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों, चांदी, गुड़ और खांड में मन्दी आती है। तीसरे और चौथे चरणों में उपरोक्त वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहता है।

स्वाति नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी एवं रसकस में मन्दा रखता है।

विशाखा नक्षत्र : गेहूँ, चना आदि अनाजों गुड़, खांड आदि रसकस और दालवान में तेजी आती है। रुई में मन्दा रहता है।

अनुराधा नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं और गुड़ आदि रसकसों में मन्दी आती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र : गेहूं इत्यादि अनाजों में उतार–चढ़ाव चांदी में मन्दा लाता है।

मूला नक्षत्र : मूंग, मोठ आदि दालवान, अनाजों, सोना और चांदी में मन्दा रहता है।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं, रुई, गुड़, खांड आदि में मन्दी का वातावरण रहता है।

श्रवण नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों, गुड़, खांड, सोना,चांदी आदि में मन्दी रहती है।

धनिष्ठा नक्षत्र : गेहूँ, चावल, जौ, चना, अनाज, दालवान व रुई में मन्दा और सोना, चांदी आदि धातुओं व रसकस में तेजी रहती है।

पूर्वा भाद्रपद : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी, सूती वस्त्र, गुड़ आदि में तेजी रहती है।

शतभिषा नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, हल्दी और केसर में मन्दा और चांदी व सफेद धातुओं में तेजी बनाए।

पूर्वा भाद्रपद : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी, सूती वस्त्र, गुड़ आदि में तेजी रहती है।

उत्तरा भाद्रपद : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, दालवान, घी आदि में तेजी आती है।

रेवती नक्षत्र : गेहूँ, चना आदि अनाजों एवं चांदी में मन्दा और, सोने में तेजी आती है।

विशेष :

गुरु जब मार्गी गति में आता है तो अनाजों, धातुओं और दालवान में मन्दा रहता है और वक्री गति में हो तो गेहूँ, चना, चावल आदि अनाजों में मन्दा और सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी रहती है।

गुरु जब उदय होता है तो सोने में मन्दा तथा चांदी में तेजी और जब अस्त होता है तो सोना, चांदी व अनाजों में मन्दा होता है।

Future Point

मेष आदि द्वादश राशियों में गुरु के मार्गी होने का फल :

मेष : घी, तेल, रसकस आदि मन्दे हों।

वृष : सोना, चावल, सूती वस्त्र, धागे आदि मन्दे हों।

मिथुन : अनाजों में मन्दा हो।

कर्क : जलोत्पन्न पदार्थ मन्दे हों।

सिंह : चावल, घी, रुई, चांदी आदि में तेजी आती है।

कन्या : चांदी में मन्दा हो।

तुला : अनाज, वारदाना व पीतल मन्दे हों।

वृश्चिक : गुड़, खांड आदि में मन्दा हो।

धनु : तेल, तेलवान, घी और अनाजों में तेजी हो।

मकर : अनाजों में तेजी आती है।

कुम्भ : सभी पदार्थों में तेजी हो।

मीन : अनाज, तेल, घी, गुड़, खांड, वारदाना आदि मन्दे हों।

मेष आदि द्वादश राशियों में गुरु के वक्री होने का फल :

मेष : तिल, तिलहन, तेलवान, सुगन्धित पदार्थों आदि में तेजी हो।

वृष : सोना, घी और तेलों में तेजी आती है।

मिथुन : सभी करियाने की वस्तुओं व पीतल में तेजी हो।

कर्क : तेल, घी, गुड़ आदि में तेजी आती है।

सिंह : सोना, चांदी में मन्दा तथा अनाजों में तेजी रहती है।

कन्या : गुड़, सभी अनाजों और तेल आदि में मन्दा हो।

तुला : तेल, तेलवान, घी, सुगन्धित पदार्थ आदि तेज हों।

वृश्चिक : सभी अनाजों व घी में तेजी।

धनु : गुड़ आदि रसकस, तेल, घी व अनाजों में मन्दी आती है।

मकर : सभी अनाजों में मन्दा हो।

कुम्भ : घी व तेलवान में तेजी।

मीन : कपास, रुई, गुड़, खांड, तेल, घी आदि में तेजी होती है।

Future Point

Future Point

शुक्रचार

मेष : गेहूँ आदि अनाजों, घी, सोना, चांदी, गुड़, खांड आदि में तेजी और तेल, तेलवान आदि में मंदे का वातावरण रहता है।

वृष : गेहूँ आदि अनाजों, रुई, कपास आदि में मन्दा होता है। सोने और चांदी में उतार–चढ़ाव के साथ तेजी आती है।

मिथुन : गेहूँ, चना, जौ और अनाजों में तेजी, तेल, तेलवान, वारदाना, सूत व वस्त्रों आदि में मन्दी का वातावरण रहता है।

कर्क : गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर आदि में मन्दा तथा गुड़, खांड आदि रसकस, तेल व घी में तेजी आती है।

सिंह : गेहूँ, चना आदि अनाजों, सोना, तांबा, लाल रंग के पदार्थ, घी व रसों में तेजी हो।

कन्या : गेहूँ, चावल आदि अनाज, गुड़, खांड, ऊन व रेशमी वस्त्र आदि तेज होते हैं।

तुला राशि : गुड़, खांड आदि रसकस में तेजी, अनाजों में शुभ ग्रहों के संयोग से मन्दा एवं पाप ग्रहों की दृष्टि व संयोग से तेजी आती है।

वृश्चिक : गेहूँ, जौ, अनाज, मूंग, मोठ, दालवान आदि में शुभ ग्रहों के संयोग से मन्दी, गुड़ में उतार–चढ़ाव और पाप ग्रहों के संयोग से तेजी आती है।

धनु राशि : गेहूँ, जौ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं, वस्त्रों और शेयरों में तेजी।

मकर : गेहूँ, चना आदि अनाजों गुड़, खांड और घी में तेजी रुई व चांदी में उतार– चढ़ाव के साथ तेजी हो।

कुम्भ : गेहूँ, चना, जौ आदि अनाजों, मूंग आदि दालवान, सफेद वस्तुओं, गुड़, खांड, चांदी आदि में मन्दी रहती है।

मीन : अनाज, तेल, तेलवान, गुड़, खाण्ड आदि में मन्दी रहती है। शुक्र के पाप ग्रहों से संयोग या दृष्टित होने से चांदी में तेजी और शुभ ग्रहों से संयोग या दृष्टित होने से मन्दी आती है।

नक्षत्रों में शुक्र ग्रह का फल :

अश्विनी : गेहूँ, चना आदि अनाजों, मूंग, मोठ, अरहर आदि दालवान, तेल व तेलवान, सोना, गुड़ व खांड में मन्दा हो।

भरणी : सोना, चांदी, तेल, तेलवान व घी में मन्दा और अनाज व दालवान में तेजी आती है।

कृत्तिका : तेल, तेलवान, सोना, चांदी, रत्नों और चावल आदि में मन्दा बनाए।

रोहिणी : सोना, चांदी आदि धातुओं, तेल, तेलवान, गुड़, खांड सूखे मेवे में मन्दा दे।

मृगशिरा नक्षत्र : गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दी और गुड़, खांड आदि रसकस में तेजी आती है।

आर्द्रा : गेहूँ आदि अनाजों, दालवान और घी में मन्दा बनाता है।

पुनर्वसु : धान्य एवं अनाजों में तेजी, सोना, चांदी आदि धातुओं और धागे में मन्दा बनाए।

पुष्य : धान्य तथा ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेजी और गुड़, खांड आदि रसकसों में मन्दी रहती है।

आश्लेषा : चावल, तुअर आदि अनाजों में मन्दा बनावे।

मघा : गेहूँ आदि अनाजों में तेजी।

पूर्वाफाल्गुनी : गेहूँ, चना आदि अनाजों, मूंग, उड़द आदि दालवान में मन्दा बनावे।

उत्तराफाल्गुनी : गेहूँ आदि अनाजों और रुई में तेजी तथा सोना आदि धातुओं में उतार–चढ़ाव करे।

हस्त : सोना, चांदी में तेजी, गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा, गुड़, खांड आदि रसकसों में उतार–चढ़ाव रखे।

चित्रा : गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं में समता बनाए।

स्वाति : गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दा तथा गुड़, खांड आदि रसकसों में तेजी लाता है।

विशाखा नक्षत्र : गेहूँ आदि अनाजों में तेजी।

अनुराधा : गुड़, खांड आदि रसकस और चावल, नमक आदि में मन्दा दे।

ज्येष्ठा : गेहूँ आदि अनाजों में तेजी, सोना, चांदी आदि धातुओं और तिल व तेलों में मन्दा बनाए।

मूला : गेहूँ आदि अनाजों में तेजी, सोने में अस्थिरता और रुई में तेजी लावे।

पूर्वाषाढ़ : तेल, तेलवान तथा मूंग, मोठ इत्यादि दालवान और नमक में मन्दा दे।

उत्तराषाढ़ : गेहूँ, चना आदि अनाजों में तेजी, सोना, चांदी आदि धातुओं और रसकस में मन्दी बनाए।

श्रवण : गेहूँ, चना आदि अनाजों, मूंग, मोठ, उड़द आदि दालवान, गुड़, शक्कर, सोना, चांदी आदि में मन्दा और तिल व तेलों में तेजी बनाए।

धनिष्ठा : गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दा, मूंग, मोठ आदि दालवान, चावल, सोना, चांदी, रुई और कपास आदि में तेजी दे।

शतभिषा : गेहूँ, चना आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं, तेलवान व घी तथा गुड़, खांड आदि रसकसों में तेजी।

पूर्वाभाद्रपद : गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा तथा रुई आदि में तेजी रखता है।

उत्तराभाद्रपद : सफेद वस्तुओं चावल, चांदी, मोती, नमक, खांड रुई आदि में मन्दा और फलों तथा सूखे मेवों में तेजी बनाता है।

रेवती : गुड़, खांड आदि रसकसों, सफेद वस्तुओं, चांदी व रत्नों में मन्दा बनाता है।

विशेष फल :

1. शुक्र जब मार्गी गति में आता है तो धान्य, गुड़, घी, सोना, चांदी व रत्नों में तेजी तथा रुई में मन्दा बनाता है और जब वक्री गति में आता है तो गेहूँ आदि अनाजों, गुड़, खांड, घी, तेल आदि में तेजी देता है।

2. शुक्र जब किसी राशि में अस्त होता है तो सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी तथा अनाजों में पहले

Future Point

तेजी और बाद में मन्दा करता है और जब किसी राशि में उदय होता है तो सोना, चांदी, सूत, वस्त्र, चावल आदि में तेजी तथा घी व खांड में मन्दा लाता है।

मेष आदि द्वादश राशियों में शुक्र की मार्गी गति का फल :

मेष : तिल, तेल व गुड़ आदि रसकस में मन्दा हो।

वृष : गुड़ आदि रसकस तथा घी और चावल में तेजी।

मिथुन : रुई, सूती वस्त्रों आदि में मन्दा।

कर्क : चौपाये पशुओं में मन्दा।

सिंह : खाद्य पदार्थों एवं अनाजों में तेजी।

कन्या : चांदी, रसकस और चावल में मन्दा।

तुला : घी, चावल व सूत में तेजी।

वृश्चिक : अनाजों में तेजी।

धनु : रुई और सूत में मन्दा।

मकर : गुड़, खांड आदि रसकस में मन्दा।

कुम्भ : सूत, चांदी व वस्त्रों में तेजी।

मीन : सभी अनाजों व वस्तुओं में मन्दे का वातावरण बनाता है।

शुक्र का द्वादश राशियों में वक्री होने का फल :

मेष : सभी व्यापारों में मन्दा।

वृष : शक्कर, खांड आदि में तेजी।

मिथुन : रुई व सूत में तेजी।

कर्क : रुई व सूत में तेजी।

सिंह : धातुओं व पशुओं में तेजी।

कन्या : चावल, सूत व घी में तेजी।

तुला : चावल, व रसदार पदार्थों में तेजी।

वृश्चिक : सभी अनाजों में मन्दा।

धनु : गर्म मसालों और रुई में मन्दा।

मकर : भावों में परिवर्तन।

कुम्भ : भावों में परिवर्तन।

मीन : रुई, धागा व कपड़े में मन्दा बनाता है।

शनिचार

Future Point

Future Point

1. मेष : मेष राशि में शनिचार का फल तेल व तेलवान, गुड़–खांड आदि रसकस, सोना, चांदी, तांबा आदि धातु, रत्न तथा सभी प्रकार की मशीनरी–हार्डवेयर के सामान तेज होते हैं। लेकिन शनि जब 28–29^0 पर होता है तो मन्दा भी लाता है।

2. वृष : वृष राशि में गेहूँ आदि अनाजों, तेल व तेलवान पदार्थों, वारदाने और खांड, गुड़ इत्यादि रसकस में तेजी लाता है। पहले नवांश में कम प्रभावशाली और अन्त के 2 नवांशों में इन वस्तुओं में मन्दा देता है।

3. मिथुन: मिथुन राशि में तेल व तेलवान पदार्थों, अनाजों, गुड़, खांड आदि रसकस और लोहे से निर्मित कलपुर्जों में तेजी आती है। इस राशि में 3–20^0 अर्थात् एक–एक नवांश के बाद उपरोक्त सभी वस्तुओं में मन्दे की भी सम्भावना रहती है।

4. कर्क: कर्क राशि में तेल व तेलवानों, सोना, चांदी इत्यादि धातुओं और, रूई, कपास आदि में तेजी। प्रथम और अन्तिम तीन नवांशो में तेजी और बीच के तीन में मन्दे का माहौल बनाता है।

5. सिंह : सिंह राशि में तेलवान, पदार्थों, गुड़ इत्यादि रसकस, अनाजों व दालवान में तेजी बनाता है। सिंह राशि का तीसरे नवांश का शनि तेजी बनाता है।

6. कन्या : कन्या राशि में सोना, चांदी इत्यादि धातुओं, रत्नों, गुड़ आदि में मन्दा लाता है। पहले नवांश में गुड़ व खांड में अधिक मन्दी का माहौल रहता है और शेष में क्रूर ग्रहों के संयोग से तेजी रहती है। शनि की इसी स्थिति में अनाजों में तेजी आती है।

7. तुला : तुला राशि में गेहूँ इत्यादि अनाजों, दालवान और गुड़–खांड इत्यादि रसकस में तेजीकारक है। तेलों में 15^0 के बाद मन्दा बनाता है।

8. वृश्चिक : वृश्चिक राशि में तेल व तेलवानों, गेहूँ, चना इत्यादि अनाजों और चांदी में तेजी लाता है। इस राशि का शनि शुभ ग्रहों के सम्बन्ध से मन्दे का भी रुझान बनाता है।

9. धनु : धनु राशि में गेहूँ, चना इत्यादि अनाजों, गुड़–खांड आदि रसकस एवं लकड़ी व लकड़ी के सामानों और लोहे के कलपुर्जों में तेजी बनाता है। शुभ ग्रहों के सम्बन्ध से अनाजों में मन्दा भी बनाता है।

10. मकर : मकर राशि में गेहूँ आदि अनाजों, सोना, चांदी आदि धातुओं और रुई में तेजी कारक है। उपरोक्त वस्तुओं में 15 अंश के बाद बदलाव भी आता है। मशीनरी में तेजीकारक है।

11. कुम्भ : कुम्भ राशि में गेहूँ इत्यादि अनाजों, सोना, चांदी इत्यादि धातुओं और तेलों में प्रथम 10 अंश तक तेजी और 10 से 20 अंश तक मन्दे का योग बनाता है।

12. मीन : मीन राशि में गेहूँ, चना आदि अनाजों, गुड़, खांड आदि रसकस और घी में पहले 6 अंशों में तेजी और फिर बाद के 6 अंशों में मन्दी आती है। यही क्रम आगे भी जारी रहता है। अर्थात् आगे के 6 अंशों में मन्दे और अन्त के 6 अंशों में तेजी का वातावरण रहता है। सोना आदि धातुएं भी पहले के 6 अंशों में तेज और फिर 6 अंशों में मन्दी होती हैं। इसी क्रम से आगे भी तेजी–मन्दी का वातावरण

रहता है। अर्थात् आगे के 6 अंशों में तेजी और शेष 6 अंशों में मंदी रहती है।

नक्षत्रों में शनि ग्रह का फल :

1. **अश्विनी** : तेल व तेलवान, गेहूँ इत्यादि अनाजों सूत, लाल मिर्च, घी आदि में तेजी आती है। यह तेजी 1 अंश तक रहती है और बाद में मन्दा आ जाता है। लेकिन रुई के बाजार में पहले 1 अंश तक मन्दा और बाद में तेजी रहेगी।

2. **भरणी** : तेलों, घी, गुड़, खांड आदि में भरणी नक्षत्र के तीसरे चरण में तेजी आती है।

3. **कृत्तिका** : सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी और गेहूँ इत्यादि अनाजों में मन्दा बनाता है। तेलों में तीसरे व चौथे चरणों में तेजी आती है।

4. **रोहिणी** : गेहूँ इत्यादि अनाजों तथा दालवान में पहले और तीसरे चरणों में मन्दाकारक और दूसरे व चौथे में तेजीदायक होता है। सोना, चांदी आदि धातुओं में प्रथम और तीसरे चरणों में तेजीकारक और दूसरे व चौथे में मन्दाकारक होता है।

5. **मृगशिरा** : गेहूँ इत्यादि अनाजों और दालवान में पहले और तीसरे चरणों में मन्दी तथा दूसरे व चौथे में तेजी रहती है। सोने, चांदी आदि धातुओं में उतार–चढ़ाव अधिक रखता है । तेल और रसकस में चौथे चरण में तेजी रहती है।

6. **आर्द्रा** : गेहूँ आदि अनाजों गुड़ आदि रसकस, तेल व तेलवानों और घी में पहले चरण मन्दी में रहती है। दालवानों व अनाजों में दूसरे चरण में तेजी और तीसरे व चौथे चरणों में मन्दी रहती है।

7. **पुनर्वसु** : गेहूँ इत्यादि अनाजों और रुई में तेजी रखता है। तेल व तेलवानों और मशीनरी के कलपुर्जों में मन्दा बनाता है।

8. **पुष्य** : गेहूँ आदि सभी अनाजों, दालवान में प्रथम चरण में मन्दा बनाता है और घी, गुड़, खांड आदि रसकस में तेजी। दूसरे व तीसरे चरणों में अनाजों में तेजी और घी, गुड़, खांड आदि में मन्दा देता है। चतुर्थ चरण में अनाजों में फिर मन्दा और घी एवं गुड़ में तेजी आती है।

9. **आश्लेषा** : पहले चरण में गेहूँ आदि अनाजों, तिल व तेलवानों, लोहे के कलपुर्जों आदि में मन्दा होता है। शेष तीन चरणों में उपरोक्त वस्तुओं में तेजी बनाए।

10. **मघा** : प्रथम चरण में तेल, घी एवं गुड़–खांड तेज और दूसरे चरण में मन्दे। दूसरे चरण में सूखे मेवे व खुशबूदार पदार्थ तेज हों। तीसरे चरण में उपरोक्त पदार्थों में तेजी और चौथे में मन्दी रहती है जबकि घी इत्यादि अनाजों में तेजी का वातावरण रहता है।

11. **पूर्वाफाल्गुनी** : पहले चरण में तेल, तेलवानों, गेहूँ इत्यादि अनाजों और मूंग, मोठ इत्यादि दालवानों में अस्थिरता पैदा करता है। दूसरे में उपरोक्त वस्तुओं में तेजी रखता है।

12. **उत्तराफाल्गुनी** : प्रथम चरण में तेल, घी, रूई, कपास, चीनी में तेजी, दूसरे में रसदार पदार्थों और धान्य में तेजी, तीसरे में गेहूँ इत्यादि अनाजों में तेजी तथा चौथे चरण में धातुओं में तेजी रहती है।

Future Point

Future Point

13. हस्त : गेहूँ इत्यादि अनाज व दालवान में तेजी रखे। प्रथम चरण में पशुओं में तेजी, दूसरे व तीसरे में गुड़–खांड रसकस में तेजी और चौथे चरण में करियाने की वस्तुओं में तेजी। सोना इत्यादि धातुओं में मन्दा बनाए।

14. चित्रा : प्रथम चरण में गेहूँ इत्यादि अनाजों में तेजी और चांदी, घी आदि में मन्दा बनावे। आगे के तीन चरणों में क्रूर ग्रहों के संयोग से अनाजों एवं गुड़–खांड में तेजी तथा शुभ ग्रहों के संयोग से मन्दे की लहर चलाए।

15. स्वाति : पहले चरण में अनाजों व दालवान में मन्दा और दूसरे चरण में अनाजों, तेलवान, लोहे के पुर्जो आदि में तेजी रखता है। चौथे चरण में गुड़–खांड, घी आदि में तेजी आती है।

16. विशाखा : गेहूँ, चना इत्यादि दालवान, तेलवान व लोहे, मशीनरी आदि में तेजी बनाता है।

17. अनुराधा : करियाने की सभी वस्तुओं तथा अनाजों में तेजी लाता है। चतुर्थ चरण में रुई में तेजी लाता है।

18. ज्येष्ठा : अनाजों, सोना, चांदी आदि में तेजीदायक रहता है।

19. मूला : गेहूँ इत्यादि सभी अनाजों में, तेलवानों में तथा चांदी में तेजी रखता है। चतुर्थ चरण में मन्दा बनावे।

20. पूर्वाषाढ़ : अनाजों में मन्दा चलावे। प्रथम चरण में तेल, करियाने की वस्तुओं आदि में तेजी बनाता है।

21. उतराषाढ़ : अनाजों, मशीनरी एवं लोहे के पुर्जों तथा सूखे मेवों आदि मे तेजी बनावे।

22. श्रवण : गेहूं आदि अनाजों में प्रथम चरण में तेजी, दूसरे में मन्दा तीसरे में फिर तेजी और चौथे में मन्दा हो।

23. धनिष्ठा : अनाज, दालवान व करियाने में तेजी, गुड़, खांड आदि रसकस एवं लौहनिर्मित कलपुर्जों में मन्दा रखे।

24. शतभिषा : अनाज, दालवान, गुड़, खांड आदि रसकस तथा करियाने में प्रथम और दूसरे चरणों में मन्दा और तीसरे व चतुर्थ चरणों में तेजी दे।

25. पूर्वाभाद्रपद : अनाज, तेलवान व दालवान में तेजीदायक है।

26. उत्तराभाद्रपद : अनाजों, दालवान, तेलवान और धातुओं आदि में तेजी रखे।

27. रेवती : सोना, चांदी इत्यादि धातुओं में मन्दा बनाए। गेहूं आदि अनाजों, तेलों, दालों आदि में तेजी आती है। चतुर्थ चरण में रसकस में तेजी रखता है।

विशेष फल :

1. शनि जब मार्गी गति में आता है तो 2 मास तक तेलवानों, मिर्च, हींग आदि में तेजी लाता है और वक्री गति में आता है तो तेलों, अनाजों, धान्य, घी आदि में तेजी बनावे।

2. शनि जब किसी राशि में उदय होता है तो सरसों तेल, मूंगफली और रुई में 1 मास तक मन्दा और कच्चे लोहे व गुड़–खांड में तेजी और अस्त होता है तो सोना आदि में मन्दा और अनाजों में तेजी बनाता है।

शनि जब उत्तराषाढ़ नक्षत्र में वक्री होकर पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में आवे तो अकाल, दुर्भिक्ष तथा अनाजों में तेजी लाता है और अगर मघा नक्षत्र में वक्री होकर आश्लेषा नक्षत्र में आवे तो गेहूँ एवं घी में तेजी आती है।

मेषादि द्वादश राशियों में मार्गी शनि का फल :

मेष : अनाजों में तेजी।

वृषः लोहा, तांबा आदि धातुओं में मन्दा।

मिथुन : घी, चांदी, रुई आदि में मन्दा।

कर्क : लाल मिर्च एवं तेलो में मन्दा।

सिंह : करियाने के पदार्थों में मन्दा।

कन्या : तेल एवं रसदार पदार्थों में मन्दा।

तुला : चांदी आदि धातुओं में तेजी।

वृश्चिक : मिर्च आदि गर्म मसालों में तेजी, धनिए में मन्दा।

धनु : अनाजों में तेजी, तेलों में मन्दा।

मकर : सब वस्तुओं में अस्थिरता।

कुम्भ : अनाजों में मन्दा।

मीन : अनाजों में तेजी।

मेषादि द्वादश राशियों में वक्री शनि का फल :

मेष : तेलों में तेजी।

वृष : अनाजों, मूंगफली आदि में तेजी।

मिथुन : गेहूँ इत्यादि अनाजों व दालवान में तेजी।

कर्क : लाल मिर्च एवं तेलों में तेजी।

सिंह : करियाने के पदार्थों में तेजी।

कन्या : अनाजों एवं रसदार पदार्थों में तेजी।

तुला : चांदी आदि धातुओं में मन्दा हो।

वृश्चिक : गर्म मसालों में मन्दा।

धनु : गुड़–खांड में तेजी, तेलों में मन्दा।

मकर : सभी वस्तुओं में ठहराव।

कुम्भ : अनाजों में तेजी।

मीन : अनाजों में मन्दा।

राहुचार

Future Point

विभिन्न राशियों में राहु ग्रह का फल :

1. **मेष** : गेहूँ, चना इत्यादि अनाजों में तेजी और वर्षा के अभाव में दुर्भिक्ष रहता है।

2 **वृष** : गुड़, खांड आदि रसकस, तेल व तेलवान और करियाने में तेजी हो।

3. **मिथुन** : गेहूँ इत्यादि अनाजों और घी में पहले 9 मास तेजी बाद में मन्दा हो। चांदी व सोने में भी पहले मन्दा और बाद में तेजी हो।

4. **कर्क** : गेहूँ इत्यादि अनाजों में तेजी और सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओ में मन्दा बनाए।

5. **सिंह** : गेहूँ आदि अनाजों में मन्दा लेकिन करियाने व पन्सारी के सामानों में तेजी।

6. **कन्या** : तेल व तेलवानों में मन्दा, रूई और कपास में तेजी।

7. **तुला** : गेहूँ इत्यादि अनाजों में तेजी, वर्षा के अभाव में दुर्भिक्ष की स्थिति।

8. **वृश्चिक** : सोना, चांदी इत्यादि धातुओं और गेहूँ इत्यादि अनाजों में उतार–चढ़ाव के साथ अस्थिरता रखता है।

9. **धनु** : गेहूँ इत्यादि अनाजों और रुई व सूत में मन्दा बनाता है।

10. **मकर** : गेहूँ, चना, जौ इत्यादि अनाजों में मन्दा लेकिन सोना, चांदी आदि धातुओ में तेजी।

11. **कुम्भ** : गेहूँ आदि अनाजों में तेजी। करियाने की वस्तुओ में भी तेजी रखता है।

12. **मीन** : गेहूँ आदि अनाजों में पहले तेजी बाद में मन्दा लावे। सोना, चांदी आदि धातुओं में मन्दा रहे।

उदाहरण : अब इस ग्रह चार के आधार पर विभिन्न पदार्थों, धातुओं में मन्दा–तेजी ओर भावों में बदलाव के बारे में जाना जा सकता है। उदाहरण के लिए हमें किसी विशेष मास में सूर्यादि ग्रहों की विभिन्न राशियों, नक्षत्रों में स्थिति के बारे में पंचांग द्वारा जानेंगे। ग्रहों की मार्गी व वक्री स्थिति भी व्यापार को प्रभावित करती है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की स्थिति के आधार पर हम अनाजों के बारे में लिखा फल देख सकते हैं। ग्रहों के राशि व नक्षत्र परिवर्तन व गति में परिवर्तन से अनाजों की बाजार में स्थिति (मन्दा–तेजी) में भी परिवर्तन होगा। इस प्रकार मास में विभिन्न ग्रहों के राशि, नक्षत्र व गति में परिवर्तन होता रहता है।

अब मान लो हमें अगस्त 2002 में अनाजों में तेजी–मन्दी का रूख ज्ञात करना है तो अगस्त 2002 के पंचांग में ग्रहों की नक्षत्र स्थिति के बारे में जानकारी ली। अगस्त मास में सूर्य मासारम्भ से तीन अगस्त तक पुष्य नक्षत्र में 15 अगस्त तक अश्लेषा नक्षत्र में और आगे 31 अगस्त तक मघा नक्षत्र में रहता है। इसी प्रकार मंगल ग्रह मासारम्भ से लेकर 19 अगस्त तक आश्लेषा नक्षत्र में और बाद में मघा नक्षत्र में चलता है। बुध ग्रह तीन अगस्त तक अश्लेषा नक्षत्र में, 10 अगस्त मघा नक्षत्र में आगे 19 अगस्त तक पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में 30 अगस्त तक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में रहता है गुरु पूरे मास नक्षत्र पुष्य नक्षत्र में चलता है। शुक्र मासारम्भ से 11 अगस्त तक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में है 24 अगस्त तक हस्त नक्षत्र में मासान्त तक चित्रा नक्षत्र में रहता है। शनि की स्थिति अगस्त मास में मृगशिरा नक्षत्र में रहेगी। और इस मास में 4 अगस्त को बुध उदय होगा। अब पहले लिखे हुए फलों से जाना सूर्य पुष्य, अश्लेषा और मघा नक्षत्र में अनाजों में तेजी कारक है मंगल का फल अश्लेषा और मघा नक्षत्रों में अनाजों में तेजीदायक है। बुध अश्लेषा, मघा में तेजीकारक और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में मन्दा लाता है। पुष्य नक्षत्र का गुरु भी तेजीदायक है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का शुक्र अनाजों में उतार–चढ़ाव, हस्त नक्षत्र का शुक्र अनाजों में मन्दादायक है। मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण का शनि मन्दाकारक और चौथे चरण का तेजी दायक

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

अध्याय–11

ग्रहण फल

ग्रहणों का धातुओं, वस्तुओं एवं धन–धान्यों पर प्रभाव :

सूर्य–चन्द्र के उदय–अस्त का चक्र अपने नियम के अनुसार निर्बाध गति से चलता रहता है। समय–समय पर सूर्य व चन्द्र ग्रहण लगते रहते हैं। इनका भी धातुओं, वस्तुओं एवं धन–धान्यों पर प्रभाव पड़ता है। यहां हम सबसे पहले अलग–अलग मासों में पड़ने वाले सूर्य ग्रहण के फलों पर दृष्टि डालेंगे।

सूर्य ग्रहण फल :

सूर्य ग्रहण का विभिन्न मासों में विभिन्न पदार्थों पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ता है।

1. **चैत्र** : सोना एवं अनाजों में शीघ्र तेजी लाता है।
2. **वैशाख** : तिल व तेलवान, मूंग, सूती कपड़ा व सूत, कपास तथा गेहूँ आदि में तेजी लाता है।
3. **ज्येष्ठ** : सोने में मन्दाकारक तथा गेहूँ आदि अनाजों में मन्दे का सूचक होता है।
4. **आषाढ़** : अनाजों में तेजी तथा दुर्भिक्ष लाता है।
5. **श्रावण** : अनाजों में मन्दे का सूचक तथा रसकस में तेजी दायक है।
6. **भाद्रपद** : अनाजों में मन्दे का कारक होता है तथा अन्य वस्तुओं में भी मन्दे का वातावरण बनाता है।
7. **आश्विन** : अनाजों में मन्दाकारक तथा तेलवान व घी में कुछ तेजी लाता है।
8. **कार्तिक** : सब अनाजों, घी, रूई, वस्त्रों आदि में मन्दाकारक होता है।
9. **मार्गशीर्ष** : अनाजों, गुड़, खांड, तेलवान, घी आदि में तेजीदायक रहता है।
10. **पौष** : सब प्रकार के अनाजों में महंगाई आती है।
11. **माघ** : अनाजों में मन्दाकारक और घी में तेजी लाता है, वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है।
12. **फाल्गुन** : सब अनाजों, तेलवान, गुड़, खांड, रसकस, घी आदि में तेजी का सूचक होता है।

चन्द्र ग्रहण का फल :

अब चन्द्र ग्रहण का विभिन्न मासों में विभिन्न पदार्थों पर पड़ने वाले प्रभावों पर दृष्टि डालें।

1. **चैत्र** : अनाजों में आगे तेजी रहती है।
2. **वैसाख** : अनाजों में मन्दाकारक, घी में तेजी तथा वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है।
3. **ज्येष्ठ** : अनाजों में मन्दे का सूचक, तेल, तेलवान, गुड़, खांड में भी मन्दा बनाएं।
4. **आषाढ़** : अनाजों, घी व तेलवान; गुड़, खांड आदि रसकस तथा रूई व धागे में तेजी लाता है।

Future Point

5. **श्रावण** : अनाजों में तेजी और रसकट में मन्दा बनाएं।

6. **भाद्रपद** : अनाजों में मन्दा लाता है; गुड़, खांड, घी व तेलवान में तेजी रहती है।

7. **आश्विन** : अनाजों, कपास, रूई में तेजीदायक रहे।

8. **कार्तिक** : अनाजों में मन्दे का सूचक होता है और सुभिक्ष बनाता है।

9. **मार्गशीर्ष** : आगे अनाजों में तेजीदायक रहे।

10. **पौष** : गेहूँ ,चना इत्यादि अनाज; घी व तेलवान, गुड़, खांड आदि में तेजी का कारक है।

11. **माघ** : अनाजों में तेजी का सूचक तथा घी, तेलवान, गुड़ खांड में तेजीदायक रहता है।

12. **फाल्गुन** : अनाजों में पहले तेजी बाद में मन्दी आती है। घी, तेल, गुड़ व खांड में तेजी रहती है।

सूर्य ग्रहण के वारों का प्रभाव :

1. सूर्य ग्रहण रविवार के दिन हो तो गेहूँ इत्यादि अनाज; मूंग इत्यादि दालवान, गुड़, खांड आदि में ढाई मास बाद तेजी आती है।

2. सोमवार को हो तो तेलवान, तेल, घी; मूंग, उड़द इत्यादि दालवान में तेजीकारक होता है।

3. मंगलवार को हो तो सूती वस्त्र, रूई कपास, घी, गुड़, चीनी तथा गेहूँ इत्यादि अनाज 2 से 4 महीने के बीच तेज रहते हैं।

4. बुधवार को हो तो चना, गेहूँ इत्यादि अनाज; धान्य, धागा, सूत रूई तथा स्टील में 2 मास के बाद तेजी आती है।

5. सूर्य ग्रहण गुरुवार को हो तो पीली वस्तुएं तिल व तेलवान, सूखे मेवे सुगन्धित पदार्थ आदि में तेजी आती है।

6. शुक्रवार को हो तो अनाजों में मन्दा तथा सूत, रूई, घी आदि में तेजी रहती है।

7. शनिवार को हो तो तिल व तेलवान, लाल व पीली वस्तुएं, तांबा, तम्बाकू आदि 2 मास के बाद तेजी में आते हैं।

चन्द्र ग्रहण के वारों का प्रभाव

1. चन्द्र ग्रहण रविवार को हो तो चांदी में मन्दा लाता है। गेहूँ, अलसी, रूई, लाल वस्तुओं आदि में तेजी आती है।

2. सोमवार को हो तो घी, तेल व तेलवानों में तेजी का वातावरण बनता है। रूई और सूत में 2 मास बाद तेजी आती है।

3. मंगलवार को हो तो गेहूँ, अलसी आदि अनाजों में तुरन्त तेजी आती हैं। रूई, धागे आदि में भी तेजी आती है। राई, मेंथी आदि करियाने की वस्तुओं में 4 मास में तेजी आती है।

4. बुधवार को हो तो सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं में तेजीकारक होता है।

5. गुरुवार को हो तो घी, तेल व तेलवान में तेजी किन्तु रूई व सूत में मन्दी आती है।

6. शुक्रवार के दिन हो तो रूई और सूत में मन्दा लेकिन 3 मास के बाद तेजी लाता है।

7. शनिवार के दिन हो तो सरसों, तिल व तेलवानों; लोहा, स्टील, काले वस्त्रों आदि में 6 मास के बाद तेजी आती है।

ग्रहणों के राशियों में प्रभाव :

1. मेष राशि में सूर्य ग्रहण हो तो व्यापारिक करियाने की वस्तुओं में तेजी लाता है। चन्द्र ग्रहण हो तो सोना, चांदी, चीनी, रसकस, ऊनी सूत आदि में तेजी लाता है।

2. वृष राशि पर सूर्य ग्रहण हो तो व्यापारिक एवं करियाने की वस्तुओं में तेजी लाता है।

चन्द्रग्रहण हो तो भी वस्तुओं में तेजी आती है।

3. मिथुन राशि में सूर्य ग्रहण गेहूँ इत्यादि सभी अनाजों, रसदार पदार्थों आदि में 2 मास बाद तेजी लाता है। चन्द्र ग्रहण हो तो कि करियाने की वस्तुओं में तेजी लाता है।

4. कर्क में सूर्य व चन्द्र ग्रहण हो तो गेहूँ इत्यादि अनाजों, गुड़, खांड, तेल, घी, दूध में 2 मास बाद तेजी आती है।

5. सिंह राशि पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो सभी अनाजों, तिल व तेलवान, रूई व सूत में तेजी आती है।

6. कन्या राशि पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण सोना, चांदी, तांबा, पीतल इत्यादि धातुओं के बाजार में अस्थिरता पैदा करता है तथा अन्त में तेजी लाता है।

7. तुला राशि में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो साधु–सन्यासी, जती–सती के लिए कष्टकारी होता है।

8. वृश्चिक में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो सुर्भिक्ष होता है तथा सभी प्राणियों के लिए कष्टकारक होता है।

9. धनु राशि में सूर्य और चन्द्र ग्रहण हो तो सभी औषधियों और घास–फूस में तेजी लाता है।

10. मकर राशि में सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण हों तो सोना चांदी इत्यादि धातुओं तथा रत्नों में तेजी आती है।

11. कुम्भ राशि का सूर्य या चन्द्र ग्रहण तेलवानों, तेलों व मूंगफली इत्यादि में तेजी लाता है।

12. मीन राशि पर सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो गुड़, खाण्ड एवं रसदार वस्तुओं तथा जल से उत्पन्न पदार्थों में तेजी आती है।

नोट :

1. जिस राशि पर ग्रहण हो उस राशि के अन्तर्गत संगतायुक्त या नाम राशि की वस्तुओं व पदार्थों में तेजी आती है।

2. यदि 15 दिन के अन्दर दो ग्रहण आ जाएं तो विश्व में उपद्रव तथा प्राकृतिक प्रकोपो से जन–धन–अन्न की हानि होती है तथा अनाजों में तेजी आती है।

3. सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय यदि शनि भी उस राशि में हो तो धातु में विशेष तेजी आती है।

4. खग्रास ग्रहणों का फल 20 दिनों में परिलक्षित होता है।

5. त्रिपाद ग्रहणों का फल 1 मास में।

6. अर्धग्रहणों का फल 2 मासों में।

Future Point

Future Point

7. तीसरे भाग का फल 3 मासों में।

8. चौथे भाग का फल 4 मासों के भीतर निकलता है।

सूर्य–चन्द्र ग्रहणों का नक्षत्रों में फल :

1. **अश्विनी नक्षत्र** : सूर्य ग्रहण में घी, तेल, वनस्पति, गुड़, खाण्ड व मूंग में तेजी आती है। चन्द्र ग्रहण में गुड़, खाण्ड आदि रसकस पदार्थो में मन्दी आती है।

2. **भरणी नक्षत्र** : सूर्य ग्रहण में सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं, अनाज, वारदाना, रूई में तेजी, रसदार पदार्थों और सफेद वस्त्रों में 3 महीने के बाद तेजी आती है।

चन्द्र ग्रहण में इन वस्तुओं में मन्दी आती है।

3. **कृतिका नक्षत्र** : सूर्य ग्रहण में सोना, चांदी आदि धातुओं और माणिक इत्यादि रत्नों में 9 मास बाद तेजी आती है। शेयर बाजारों और रसदार पदार्थों में भी तेजी का कारक होता है।

चन्द्र ग्रहण में उपरोक्त वस्तुओं में मन्दी आती है।

4. **रोहिणी नक्षत्र** : सूर्य ग्रहण मे तिल, तेल, करियाने की वस्तुएं, गेहूं इत्यादि अनाज, दालवान, गुड़, खांड, वारदाना, रूई व सूत में तेजी लाता है।

चन्द्र ग्रहण में उपरोक्त वस्तुओं में मन्दी आती है।

5. **मृगशिरा नक्षत्र** : सूर्य ग्रहण में तेलवान, घी, गुड़, खांड और गेहूँ आदि अनाजों तथा सोना आदि में तेजी लाता है।

चन्द्र ग्रहण हो तो उपरोक्त चीजों में मन्दी आती है।

6. **आर्द्रा नक्षत्र** : तिल, तेलवान, घी, स्टील व लोहा में तेजी आती है।

7. **पुनर्वसु नक्षत्र** : गेहूँ, चना इत्यादि अनाज, रूई, कपास, अरहर के भावों में 3 मास में जबकि तेलों में 5 मास बाद तेजी आती है।

8. **पुष्य नक्षत्र** : सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं, गुड़–खांड तथा शेयरों में तेजी और गेहूं आदि अनाजों में 3 मास बाद तेजी लाता है।

9. **आश्लेषा नक्षत्र** : सोना, चांदी, तांबा आदि धातुएं, गुड़–खंड, हल्दी, धनियां, जीरा आदि में तेजी और मूंग इत्यादि में 5 मास बाद तेजी दर्शाता है।

10. **मघा नक्षत्र** : सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो चावल–चने में तेजीदायक होता है।

11. **पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र** का ग्रहण तिल, तेलवान, कपास, सूत, सूती वस्त्र व रूई में तेजी लाता है।

12–13. **उत्तरा फाल्गुनी व हस्त नक्षत्रों** में सूर्य और चन्द्र ग्रहण चावल, चने, तिल व तेलवान, कपास व सूत आदि में तेजी का वातावरण बनाते हैं।

14. **चित्रा नक्षत्र** में सूर्य तथा चन्द्रग्रहण हों तो ज्वार, बाजरा आदि अनाजों में 2 मास बाद तेजी बनाते हैं।

15. **स्वाति नक्षत्र** में गेहूँ, चना, जौ इत्यादि अनाजों और मूंग, उड़द इत्यादि दालों में तेजी लाता है।

16. **विशाखा** में ग्रहण लगने से उड़द, रसदार पदार्थों और लाल वस्त्रों में तेजी आती है। कुल्थी में 6 मासों के बाद तेजी आती है।

Future Point

17. अनुराधा नक्षत्र में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो अनाजों में 9 मास बाद तेजी लाता है। ज्वार व तिल में तेजी लेकिन चावल में मन्दी रहती है।

18. ज्येष्ठा नक्षत्र में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो गुड़, खांड, शक्कर इत्यादि रसकस में 5 मास बाद तेजी आती है। घी, तांबा, सोना इत्यादि धातुओं में तेजी रहती है।

19. मूला नक्षत्र में सूर्य–चन्द्र ग्रहण हो तो शक्कर, गुड़, खांड ज्वार बाजरा आदि में तेजी तथा चावलों में 5 मास बाद तेजी बनाता है।

20. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में सफेद वस्तुओं व वस्त्रों में 5 मास बाद तेजी लाता है।

21. उत्तराषाढ़ : नारियल तथा नारियल तेल और करियाने की वस्तुओं में 5 मास बाद तेजी होती है।

22. श्रावण नक्षत्र : घोड़ा, हाथी, ऊंट आदि सवारी के पशुओं में तेजी और दालों में महंगी रहती है।

23. धनिष्ठा नक्षत्र में सूर्य और चन्द्र ग्रहण हों तो मूंग, मोठ, मसूर इत्यादि दालवानों में तेजी आती है।

24. शतभिषा नक्षत्र में गेहूँ, जौ, चना इत्यादि अनाजों में तेजी आती है।

25. पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में तिल, तेलवान व चने में तेजी आती है।

26. उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो नमक आदि क्षार की वस्तुओं में तेजी आती है।

27. रेवती नक्षत्र में मूंगी, उड़द इत्यादि दालवान में तेजी आती है।

विशेष : सूर्य–चन्द्र ग्रहण ग्रस्त उदय या अस्त हो तो व्यापारिक वस्तुओं में विशेष तेजी आती है।
ग्रहण के पश्चात् वर्षा हो तो अशुभ फलों में कमी आती है।
सूर्य ग्रहण के 15 दिन बाद चन्द्र ग्रहण हो तो शुभ फल दायक
चन्द्र ग्रहण के बाद सूर्य ग्रहण हो तो अशुभ फल दायक

सूर्य–चन्द्र ग्रहण में मंगल आदि ग्रहों की दृष्टि का फल :

सूर्य चन्द्र ग्रहण पर मंगल की दृष्टि हो तो लाल वस्तुओं में तेजी लाता है।
बुध की पूर्ण दृष्टि घी, तेल, मक्की, सोना, पीतल इत्यादि पीली वस्तुओं आदि में तेजी लाती है।
शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो सफेद वस्तुओं, चांदी, इत्यादि, सफेद वस्त्रों में तेजी लाता है।
शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो लोहा, उड़द, काले अनाज तथा वस्त्रों में तेजी आती है।
यदि ग्रहण पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तो उपरोक्त मंगल आदि ग्रहों के अशुभ फलों को कम करता है तथा सुख शान्ति रहती है।

प्रश्नमाला :

1. क्या ग्रहणों का विभिन्न पदार्थों पर प्रभाव पड़ता है संक्षिप्त टिप्पणी दीजिए ?
2. वैशाख मास में यदि चन्द्र ग्रहण हो तो अनाजों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।
3. सिंह राशि पर यदि सूर्य या चन्द्र ग्रहण हो तो क्या प्रभाव होगा ?
4. सूर्य व चन्द्र ग्रहण के समय मंगलादि ग्रहों की दृष्टि का फल संक्षिप्त में बतायें।